24

7, IV

श्रीस्वाध्याय

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—
सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य
श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

त्यागमूर्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज प्रधानमन्त्री स०ध०प्र० सभा पंजाब।
धर्ममार्त्तण्ड राजा साहब श्री० १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी०आई०ई० सोलन।
रावराजा कैप्टेन श्री १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंहजी भरतपुर।
श्रीमान् दीवान रुद्रशरणप्रतापसिंहजी जमीनदार साहब उपरोड़ा स्टेट सी० पी०।
श्रीमती शान्तिदेवी धर्मपत्नी श्रीमान् सेठ चरणदासजी लाहौर वाले।

सहायक—

श्री १०५ मती स्व० माँजी महारानी साहिबा (सिरमौरीजी) बघाटराज्य।
श्री १०५ मती सौ० राणी साहिबा वृन्दावन वाली जी (भरतपुर)
श्री १०५ मान् राजाधिराज हरिसिंहजी भू० पू० जनरल मिनिस्टर उदयपुर (मेवाड)।
रावबहादुर धर्मालङ्कार श्री १०५ मान् महाराज प्रभुनाथसिंहजी नरसिंहगढ।
श्री १०५ मान् राजकुमार मानसिंहजी बार. एट-ला, उदयपुर (मेवाड)।
श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित ताल्लुकेदार भरतपुर।
श्रीमान् पं० पद्मसिंहजी ठेकेदार भरतपुर।
श्रीमान् स्व० अक्रियानन्दजी (श्री चुन्नीलालजी) भरतपुर।
श्रीमान् पं० हरिशंकरजी शास्त्री ज्योतिषरत्न खिड़कियां सी० पी०।
श्रीमान् दानवीर सेठ श्रीगोपालजी मोहता उदयपुर (मेवाड)।
श्रीमान् सरदार कुंवर रणदीपसिंहजी साहब नाहन (सिरमौर)।
श्रीमान् कुंवर शिवसिंहजी बी०ए०एल-एल० बी० सेशनजज सोलन।
श्रीमान् सरदार जगजीतसिंहजी ढिल्लों बी० ए० एल०-एल० बी० नाभा।
श्रीमान् पं० देवकीनन्दनजी कथावाचक, यादव कीर्तनमण्डल, अम्बाला।
श्रीमान् लाला शिवप्रसादजी आढती खर्ड (पंजाब)।
श्रीमान् ला० बांकेलाल राजकुमार आढती खर्ड (पंजाब)।

सम्पादक और व्यवस्थापक—
ज्यो० मा० ज्यो र० श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य

प्रकाशक
श्रीस्वाध्याय-सदन सोलन (शिमला)

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य—

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा इहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालक गणोंके नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५०)से ३००) तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय'के सहायक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' के नियम

(१) 'श्रीस्वाध्याय आश्विन शुक्ला १०, पौष शुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ३॥) और एक प्रतिका १) रु० है।

(२) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओरसे प्रार्थना-पूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ और विनिमय (परिवर्तन)के पत्र पत्रिकायें सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) के पतेसे भेजने चाहिएं।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम—

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विनमास विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमी का 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषाङ्क न लेना चाहे तो बीच में किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ३॥) रु० न लेकर वर्ष-समाप्ति तक (आषाढ़ तक) के शेष अङ्कोंका मूल्य ही लिया जायगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मासका मूल्य ३) रु० और एक अङ्कका मूल्य १) रु० मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मंगानेसे उक्त मूल्यमें चार आने अधिक रजिस्ट्री खर्चके बढ़ जावेंगे।

वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बन कर पूरी फाइल मंगवानेमें ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है। गत पंचमवर्ष का 'ग्रीष्माङ्क' और विगत चतुर्थ वर्षका 'नववर्षाङ्क' तथा वर्तमान वर्षका गताङ्क (वसन्ताङ्क) अब कार्यालयमें नहीं है, अत: इन अङ्कोंके लिए अब कोई सज्जन न लिखें।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए। केवल 'नववर्षाङ्क' (यदि वह अङ्क विशेषाङ्क होगा तो) उसका मूल्य २) है।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास न पहुँचे तो १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए। बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जायगा।

व्यवस्थापक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)।

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः ।   ❀ श्रीः ❀   स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम् ।

श्रीस्वाध्याय

[ग्रीष्माङ्क]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाचिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति [राष्ट्रालोक]

वर्ष ७ } सोलन, आषाढ़ शु० १० गुरुवार सं० २००५ वि० { संख्या ४

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥

—अ० वा० आचार्य

जीवन

जो मरणको जन्म समझे मैं उसे जीवन कहूँगा ।

वह नहीं बन्धन कि जो अज्ञानतामें बांध ले मन ।
और फिर सहसा कभी जो टूट सकता हो अकारण ॥
मुक्ति छू पाये न जिसको मैं उसे बंधन कहूँगा ॥
वह नहीं नूतन कि जो प्रचीनताकी जड हिला दे ।
भूतके इतिहासका आभास भी मनसे मिटा दे ॥
जो पुरातनको नया करदे उसे नूतन कहूँगा ॥
वह नहीं पूजन कि जो देवत्व में दासत्व भर दे ।
सृष्टिके अवतंस मानवकी प्रगतिको मन्द कर दे ॥
भक्तको भगवान कर दे मैं उसे पूजन कहूँगा ॥
जो मरणको जन्म समझे मैं उसे जीवन कहूँगा ।

—बलवीर सिंह 'रंग'

सम्पादकीय विचार

सामयिक-समस्याएं

आज देशकी परिस्थिति अत्यन्त ही विकट एवं विचित्र उलझनोंमें उलझ रही है। हम एक हजार वर्षोंके पश्चात् स्वतन्त्र अवश्य हो गये हैं, किन्तु ऐसा लगता है कि इस स्वतन्त्रताको चिर स्थायी बनानेके लिए अभी बहुत कुछ करना पड़ेगा। ऊपरसे भले ही पश्चिम, पूर्वकी स्वतन्त्रताका समर्थक बना रहे, पर वस्तुतः वह अब भी उसका वैसा ही घोर विरोधी व शत्रु है जैसा कि पहले कभी था। यही दशा अमेरिकाकी भी है।

मध्यपूर्वके मुस्लिम राष्ट्र भी भला भारतीय आर्य-राष्ट्रको कब फलता फूलता देख सकते है? पश्चिमी राष्ट्र समझते हैं और ठीक ही समझते हैं कि यदि भारत ५ वर्ष भी स्वतन्त्र रह गया तो विश्वमेंसे हमारा प्रभुत्व समाप्त हो जायगा। सम्पूर्ण एशिया शीघ्र ही भारतके नेतृत्वमें अमेरिका और यूरोपको सहज ही पीछे ढकेल देगा। इसी लिए 'विषगर्भ पयोमुखः' की उक्तिको चरितार्थ करनेवाले अमेरिका और यूरोप भारतके भविष्यको मिट्टीमें मिला देनेके लिए कमर कसे बैठे हैं। वे परोक्ष रूपसे और आवश्यकता पड़ने पर प्रत्यक्षतया भी प्रत्येक सम्भव उपायसे हमारा गला घोट देनेके लिये तुले बैठे हैं। पाकिस्तान हो या हैदराबाद, या भारतके आन्तरिक शत्रु, ये सब तो बेचारे निमित्तमात्र हैं, अथवा यों कहें कि ये तो अमेरिका और ब्रिटेनकी कठपुतलियां हैं। बछड़ा खूटेंके बलपर ही कूदता है। हमारे ये दोनों प्रछन्न शत्रु पाकिस्तानके कंधों पर रखकर बन्दूकें चला रहे हैं।

"अर्जुनस्य इमे बाणाः नैते बाणा शिखण्डिनः"

कहनेका तात्पर्य यह कि हमारे वास्तविक शत्रु अमेरिका और यूरोप ही हैं। यही देश हमें हानि पहुंचानेकी प्रबल शक्ति व इच्छा रखते हैं। पाकिस्तान या अन्य कोई भी यवनशक्ति भारतको अभिभूत करनेका न सामर्थ्य ही रखती है और न साहस ही कर सकती है। अमेरिका और यूरोप किस प्रकार हमारी स्वतन्त्र सत्ताको समाप्त करनेके लिए लालायित हो रहे हैं इसका एक बड़ा उदाहरण सुरक्षापरिषद्में काश्मीरके प्रश्न पर उक्त राष्ट्रों द्वारा प्रदर्शित पक्षपात है। इन राष्ट्रोंने आक्रमणकारी पाकिस्तानको एवं रक्षक भारतको न केवल एक साथ ही बैठा दिया, प्रत्युत येनकेन प्रकारेण भारतको अपराधी सिद्ध करनेके लिए जूनागढ़ और भारतमें मुस्लिम-वधके सम्बन्धमें विचार करनेके लिए भी कमीशनको आदेश दिया।

क्या ये राष्ट्र नहीं जानते कि भारतमें मुसलमानोंकी धन जन हानिकी अपेक्षा हिन्दुओंका नाश कहीं अधिक हुआ है। क्या वे नहीं जानते कि आज पश्चिमी पाकिस्तान में हिन्दू नाम लेनेको भी शेष नहीं रह गये और विपरीत इसके भारतमें ६०% मुसलमान ज्योंके त्यों विद्यमान हैं। उच्चसे उच्च पद पर वे प्रतिष्ठित हैं। अपनी योग्यता व जन-संख्यासे कहीं अधिक अधिकार व स्थान उन्हें मिले हुए हैं दो-दो गवर्नर और केन्द्रीय मन्त्रिमंडलके भी दो दो महत्वपूर्ण पदों पर मुसलमान प्रतिष्ठित हैं। यह सब कुछ जानते हुए भी ये लोग पापके पुतले पाकिस्तानको तो पुचकार रहे हैं—प्रोत्साहित कर रहे हैं और बेचारे धर्म-भीरु अहिंसक भारतको अपराधी ठहरा कर उसके अपराधों की—पापोंकी—पड़ताल करनेके लिए कमीशन बैठा रहे हैं। ये हैं भारत के मित्र!

एक क्यों बीसियों प्रमाण उपस्थित किये जा सकते हैं, जिनसे स्पष्ट सिद्ध हो जायगा कि ये राष्ट्र सचमुच हमारे प्राणों के ग्राहक बने बैठे हैं। यही दशा हैदराबादकी है। चर्चिल पन्थी अंग्रेज हैदराबादको स्वतन्त्र करनेके लिए एड़ी चोटी का पसीना एक कर रहें हैं और अमेरिका सब प्रकारकी सहायता दे रहा है। रजाकारोंके नेता कासिम रिजवीने इन दिनों अपने विषाक्त वक्तव्योंमें जो आग उगली उसमें वह स्पष्ट बता ही चुका है कि "साम्राज्यवादी अंग्रेज हमारे साथ हैं ही, अतः हमारी विजयमें कोई सन्देह नहीं"। अभी गत १५ जूनको 'इण्डियन प्रेस एसोशिएशन' के विशेष प्रतिनिधिने जो सम्वाद भारतीय पत्रोंमें भेजा उसमें कहा गया है कि—"निजाम, कायदेआजम और मि० चर्चिलने मिलकर एक त्रिकोण षड्यन्त्रकी रचना की है। सर वाल्टर मांकटन

उनके बीचका एक हरकारा है।...... चर्चिल साहब हैदराबाद और पाकिस्तानको भारतके विरुद्ध रखकर उनका उपयोग भारतमें ब्रिटिश साम्राज्यकी पुनः संस्थापनाके लिए करना चाहते हैं।" अतः इन सब बातों पर गम्भीरता पूर्वक विचार करते हुए हमें सदा यह स्मरण रखना चाहिये कि हमारे सच्चे और समर्थ शत्रु अंग्रेज, अमेरिकन व उनके सहयोगी यूरोपियन हैं। हमारे स्वतन्त्र हो जाने मात्रसे इनकी सत्ता डांवाडोल हो गई है और यदि ५ वर्ष भी हम स्वाधीन रह गए तो इनका गौरव नष्ट हो जायगा। इस लिये ये अपना हित इसीमें समझते हैं कि जिस किसी भी प्रकारसे भारतको पददलित बनाए रक्खें। इसी उद्देश्य को सिद्ध करनेके लिए 'पाकिस्तान' की सृष्टि की गई है। अतः वे उसे कभी कुछ न कहकर सदा हमें ही दबानेका प्रयत्न करेंगें। वास्तवमें जैसा कि पहले कहा गया कर्ता-धर्ता तो वे स्वयं हैं, नाम पाकिस्तानका है। अतः हमें कदापि पाकिस्तानकी देखा देखी कोई काम न करना चाहिये। विश्वके ये सभी स्वार्थी भेड़िये पाकिस्तान या भारतीय मुसलमानों पर अत्याचारका बहाना कर हमें दबोच डालना चाहते हैं। अतः हमें इस ओरसे बहुत ही सतर्क और सावधान रहनेकी आवश्यकता है। यवनोंको देश से मिटा देने अथवा भगा देनेसे ही हिन्दूराज्य स्थापित नहीं हो सकता। इस प्रकारके कार्यों से तो ये भेड़िये और भी अधिक सुविधासे तथा शीघ्रताके साथ हम पर आक्रमणका अवसर पा जाएगें। अतः प्रत्येक भारतीयका वर्तमान परिस्थितिमें सर्वप्रथम कर्तव्य यह है कि वह सहिष्णुतासे काम ले। देशमें किसी प्रकारकी भी अशान्ति न होने दें। भारतीय मुसलमान तभी तक कुछ उछल कूद मचा सकते हैं जब तक कि हमारी सरकार दृढ़ नहीं हो जाती। ज्यों ही सरकार के पांव पक्की तरहसे जमे कि ये लोग स्वतः सीधे हो जायेंगे। इस परिस्थितिको ध्यानमें रखते हुए जनताको कभी कोई ऐसा कार्य न करना चाहिए जिससे अशान्तिकी सम्भावना हो।

सरकार किधर ?

किन्तु जहाँ हम जनतासे सब कुछ सहने और शान्त रहने की प्रार्थना करते हैं वहां साथ ही सरकारसे भी स्पष्ट शब्दोंमें कह देना चाहते हैं कि अन्ततोगत्वा सरकारको दृढ़ और निर्भीक आर्य-सरकार बनना ही होगा। इसके बिना काम चलने का नहीं। वर्तमानकी ढीली-ढाली नीतिका परिणाम बहुत ही भयङ्कर हो सकता है।

जो मुसलमान हिन्दी सरीखी सरल भाषाको पढ़ना भी पाप समझता है, रेडियो पर हिन्दी सुनना भी नहीं चाहता, वह क्या कभी भारतका हितैषी हो सकता है ? कदापि नहीं। ऐसी दशामें सरकारका कर्तव्य तो यह है कि सत्य और निष्पक्ष नीतिको स्वीकार करते हुए तत्काल 'हिन्दुस्तानी' के मोहको त्याग कर अपना सम्पूर्ण कार्य हिन्दीमें आरम्भ कर दे। किन्तु वह करती सर्वथा इसके विपरीत है। अभी भी हिन्दुस्तानी या उर्दू का ही राग अलाप रहीं है। शिक्षा आदि विभागोंमें तो स्पष्टतया उर्दू ही का बोल बाला है। हम विश्वासके साथ कह सकते हैं कि हिन्दीको न सह सकने वाले मुसलमान तो कभी सच्चे देशभक्त—आपत्कालमें सहायक—होंगे नहीं, चाहे उर्दू छोड़ अरबी ही को क्यों न अपना लिया जाय। किन्तु दूसरी ओर सच्चे राष्ट्र हितैषी आर्योंका सरकारकी ऐसी नीतिसे असन्तुष्ट हो जानेका भय उपस्थित हो जायगा। इसलिए हम सरकारसे साग्रह निवेदन करना चाहते हैं कि वह तत्काल राष्ट्र-भाषा हिन्दीके विरोधी तत्वोंको अपने यहां से हटाकर सम्पूर्ण कार्योंमें हिन्दी को अपनाकर राष्ट्रकी मांगको पूरी करने का प्रयत्न करें। अन्यथा जनताका असन्तोष उत्तरोत्तर बढ़ता ही जायगा और अन्तमें नेतागण अथवा पत्र पत्रिकाएं लाख प्रयत्न करने पर भी असह्य परिस्थितिको सम्भाल न सकेंगे।

इसके साथ ही अभी हमारी यह सरकार एक तो अपने बचपनमें है और दूसरे इसके शत्रु प्रबल हैं। ऐसी दशामें इसे फूंकफूंककर पांव धरना चाहिये। शीघ्रतामें समाजसुधार या अन्य किसी नाम पर ऐसे कार्य न कर बैठने चाहियें जिससे जनताका एक बहुत बड़ा भाग असन्तुष्ट और रुष्ट हो उठे। जैसे अछूतोद्धार कोई बुरा कार्य नहीं, पर यह आज्ञा देना कि प्रत्येक व्यक्तिको भङ्गीके साथ बैठना ही होगा, उसे अपने बर्तनोंमें खाना खिलाना ही होगा, अन्यथा दण्ड मिलेगा, नितान्त अनुचित है। अस्पृश्योंके उद्धारका अर्थ तो यह होना चाहिए कि जो पतित हैं उन्हें उन्नत किया

जाय, न कि उन्नतोंको गिरा कर पतित बना दिया जाय। फिर वैयक्तिक स्वतन्त्रताका भी तो अपना स्थान है। क्या सरकार ऐसे कानूनोंसे अपना अन्त नहीं कर लेगी? इसी प्रकार स्त्री-उत्तराधिकार, सगोत्र-विवाह, मन्दिर-प्रवेश आदि धार्मिक और सामाजिक नियम बनाते समय सरकारको सहसा कोई निर्णय कर लेना हानिकारक ही है। ऐसे विषयों पर तो धर्म-मर्मको जानने वाले शास्त्रज्ञ विद्वानोंका परामर्श अत्यन्त आवश्यक है।

कुछ कांग्रेस पदाधिकारी इस समय अधिकारमदमें अपने आपको सर्वज्ञ और राष्ट्रका स्वयम्भू प्रतिनिधि मान कर धार्मिकादि विषयोंमें हस्तक्षेपकी अनधिकार चेष्टा द्वारा कांग्रेसकी लोकप्रियताको घटा रहे हैं। उन्हें ऐसा न करके आत्मनिरीक्षण पूर्वक अपने दोषों को दूरकरके लोकप्रिय बनना चाहिए। कांग्रेसजनोंमें इस समय जो अवाञ्छनीय दोष घर करते जा रहे हैं, इस कटुसत्यको हमारे महामान्य प्रधानामात्य श्री नेहरूजी भी एकाधिकबार स्वीकार कर चुके हैं। हमें भय है कि यदि शासन-शकटको चलाने वाले कांग्रेसी कल पुर्जोंकी यही गतिविधि रही तो वे राष्ट्रके साथ अपना भी पतन कर लेंगे। अभी गत १ जूनको मिदनापुरके विद्यासागर हालमें भाषण करते हुए कांग्रेसके भूतपूर्व अध्यक्ष और महामंत्री श्री आचार्य कृपलानीने निम्न शब्दोंमें स्पष्ट चेतावनी दी है—

"अनेक कांग्रेस नेता सोचते हैं कि उन्होंने जनताकी सेवा की है, इसी लिए उन्हें पद तथा शक्ति प्राप्त होनी चाहिए। पर वे भूल गये हैं कि बलिदान करना प्रत्येक मनुष्यका धर्म है। उनमें कुछ आज मंत्री हैं, कुछ राजदूत! वे बलिदानी नेता आज स्वर्ग सुखका उपभोग कर रहें हैं। गीताका उपदेश है कि मनुष्य तभी तक स्वर्गमें रहता है जब तक उसके पुण्य क्षीण नहीं होते। पुण्योंके क्षीण होते ही उसका पतन हो जाता है। हमारा मन्त्रिवर्ग आज स्वर्ग सुख भोग रहा हैं, परन्तु उसका भावी पतन निश्चित तथा निकट है।"

अतः अधिक कुछ न कहते हुए अन्तमें इतना संकेत कर देना चाहते हैं कि यदि हमारी वर्तमान सरकार स्थिर रहना चाहती है और चाहती है भारतको स्थायीरूपसे स्वतन्त्र रखना (क्योंकि यदि यह सरकार बदल गई तो अवश्य ही देश पुनः परतन्त्र हो जायगा। कांग्रेसके बिना किसी भी पार्टीकी सरकार देशकी स्वतंत्रताको वर्तमान परिस्थितिमें स्थिर नहीं रख सकती) तो उसे सच्ची राष्ट्रीयताको अपनाना होगा और छोड़ना होगा विनाशक मुस्लिम-नवाज नीतिको। साथ ही उसे जब तक जनमत पूरी तरह प्रस्तुत न हो जाय तब तक सामाजिक और धार्मिक विषयोंमें हस्तक्षेप करना भी छोड़ देना होगा। तभी राष्ट्रका कल्याण हो सकेगा।

पूर्वी पंजाबमें शान्ति व सहयोगके प्रयत्न

पूर्वी पंजाबमें एक वर्ष से यवन तो लगभग सभीके सभी विदा हो ही चुकेहैं। अतः अब कौनसी अशान्तिकी संभावना थी! जिसके लिए ये शान्तिके प्रयत्न किये जा रहे हैं? ऐसा पाठक पूछ सकते हैं। ठीक है, यवनोंके नामशेष रह जाने पर भी पूर्वी पंजाबमें एक नया, अथवा नया क्यों वही पुराना रोग—हिन्दू सिक्ख वैमनस्य उत्तरोत्तर व्यापक होता जा रहा था। इस प्रान्तमें रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति अज्ञात आशंकासे त्रस्त-सा था। इसी समय श्री पं० जवाहरलाल नेहरू प्रधान मंत्रीजीकी प्रेरणासे श्री गो० गणेशदत्तजी महाराजने देहलीसे पंजाबमें पधार कर बिगड़ती हुई परिस्थितिको बहुत कुछ सुधारने का प्रयत्न किया। मंत्रिमंडल के संकटको टालनेमें भी पूर्णयोग दिया। साथ ही यत्रतत्र घूम कर प्रचारके द्वारा सरकारके प्रति बढ़ते हुए जनसामान्यके असंतोषको भी समाधान कर राष्ट्रकी बड़ी सेवा की। इसके अतिरिक्त स्थानस्थानपर पहुंचकर सनातनधर्मसभाओंका संगठन सुदृढ करनेमें अपनी पर्याप्त शक्ति लगा दी एवं शिमला में सनातनधर्म कालेजके लिए दो विशाल भवन प्राप्त करनेमें भी सफल हुए। इन्ही दिनों आपने सोलन पधारने पर श्रीस्वाध्याय सदनका भी निरीक्षण किया और इसकी गति विधिसे परम संतोष प्रकट किया।

—

भुक्ति और मुक्ति

[लेखक—श्री पं० बलजिन्नाथ जी शास्त्री एम० ए०, एम० ओ० एल०]

आधुनिक संसार भुक्तिको ही जीवनका एकमात्र प्रयोजन मानता है। संसारके बड़े-बड़े राष्ट्र भुक्ति ही की ओर अग्रसर होते जाते हैं। आधुनिक भौतिक विज्ञानके आधार पर लोग समझते हैं कि उत्तम उत्तम-स्वादु-पदार्थोंको खाना, मद्य आदि पीना, सब प्रकारके सुखोंका यथेष्ट भोग करना, समस्त इन्द्रियोंको तृप्त करना, और अधिकसे अधिक विषय भोगका सेवन करना ही मनुष्य जीवनका सार है। इस प्रकारसे लोग सांसारिक पदार्थोंका संग्रह करते-करते सारा जीवन इन क्षणिक सुखोंमें ही लगा देते हैं। शरीर मन बुद्धि और इन्द्रियोंको भोग अर्थात् भुक्तिके चरणोंमें बलि चढ़ा देते हैं। अन्तमें भोगोंको भोगते-भोगते सारी शक्ति खो बैठते हैं। इस अवस्थामें भी भोगोंकी लालसा समाप्त नहीं होती। यहां तक कि अन्तिम श्वास तक मनुष्य उन्हीं सांसारिक भोगोंका स्मरण करते हुए शरीर छोड़ता है। भुक्तिकी वासना जीवके सदा साथ रहती है। मरकर भी उसे छोड़ती नहीं और बलात् भोगप्रधान पापयोनियोंमें ले जाती है। जिस प्रकार जाग्रत अवस्थासे स्वप्न अवस्थामें जाते समय जो वासना मनमें प्रधान होती है वह अपने अनुकूल स्वप्नसंसारमें जीवको ले जाती है। ठीक उसी प्रकार "अन्ते मतिः सा गतिः"के अनुसार मृत्युके समय जो वासना बलवती हो वही दूसरे जन्मका निर्णय करती है। शराबकी वासना जीवको शराबकी मटकीका कीड़ा बना देती है। क्रूरकर्मोंकी वासना हिंसक पशु बना देती है। कामकी वासना गर्दभ आदि योनियों में ले जाती है। यह जीवका स्वभाव है, वासना अवश्य अपना काम कर बैठती है।

यह तो है व्यक्तिगत भुक्तिवादका परिणाम। राष्ट्रगत भुक्तिवादसे वही होता है जो आजकलके संसारमें दिख पड़ता है। भोगोंका कहीं अन्त नहीं। भुक्तिके लोभकी कोई सीमा नहीं। प्रत्येक भुक्तिवादी राष्ट्र दूसरे राष्ट्रोंको चूसनेका प्रयत्न करता है। इसके बिना उसकी भुक्तिमें बाधा आती है। इससे संसारमें घोर युद्ध होते हैं और जनधनका नाश होता है। इस विनाशके तूफानमें स्वयं भुक्ति भी बह जाती है, मुक्तिका तो कहना ही क्या। इन्हीं कारणोंसे भुक्तिवादियोंको असुर कहा गया है। अर्वाचीन कालमें ऐसे ही लोगोंके लिए अनार्य शब्दका प्रयोग हुआ है। इस भुक्तिवादियोंकी सम्पत्को ही श्रीमद्भगवद्गीतामें आसुरी सम्पत्का नाम दिया गया है। यह आसुरी सम्पत् संसारमें सर्वत्र अशान्ति फैलाती है। इसी भुक्तिवाद ही के कारण वैभवशाली और समृद्धराष्ट्र तथा व्यक्ति सदा अशान्तिसे पीडित होते रहते हैं। भुक्ति ही वस्तुतः अशान्तिका मूल कारण है। जब-जब संसारमें भुक्तिवादी राष्ट्र प्रबल हो गए तब-तब संसार घोर अशान्तिका शिकार बना। इस समय भुक्तिवाद पराकाष्ठा को पहुंच गया है। इसीलिए संसारमें कहीं भी सुख नहीं विजित राष्ट्र तो दुःखी हैं ही, परन्तु विजेता भी कहीं सुखी नहीं। यह सब कृपा भुक्ति देवीकी है।

शान्तिका मूलमन्त्र मुक्तिवाद है। मुक्तिवादी चाहे वह एक व्यक्ति हो या एक राष्ट्र हो, दरिद्र होते हुए भी बहुत सुखी रहता है। उसको काम, क्रोध, लोभ कभी सता नहीं सकते। ईर्ष्या, द्वेष, मत्सर आदि दोष उसे कभी भी नहीं छूते। मरकर ऐसा व्यक्ति या तो पूर्णतया मुक्त हो जाता है, या यदि अभी उसमें कुछ अधूरापन हो तो फिर वह "शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते" के अनुसार पवित्र विद्या धनसम्पन्न घरमें जन्म लेता है। इस जन्मके लिए भी उसकी इस प्रकारकी वासना ही प्रधान कारण होती है। मुक्तिप्रधान राष्ट्र ही संसार में शान्ति स्थापित कर सकता है। जब जब मुक्तिवादी बलशाली थे तब-तब संसारमें सुख और शान्तिका राज्य था। अब भी यदि संसारमें फिरसे शान्तिकी स्थापना करनी हो तो मुक्तिवादी ही उन्नत बनकर कर सकते हैं। भुक्तिका हृदय संकुचित है, वह मुक्तिको पास आने नहीं

देती। मुक्ति विशाल हृदय है, वह भुक्ति पर भी दयाकी दृष्टि रखती है। मुक्ति भुक्तिके लिए भी थोड़ा बहुत अवकाश रख छोड़ती है। वस्तुतः यदि भुक्तिको सर्वथा तिलाञ्जलि ही दी जाए तो भुक्तिकी वासना हृदय के भीतर ही भीतर दब कर भी आन्दोलन मचा देती है, और मुक्तिको भीतरसे खोखला कर देती है, जिससे उसके गिर जानेका भय रहता है। इसलिये भुक्ति और मुक्तिका समझौता ही श्रवंश्रेष्ठ आदर्श माना गया है। इसका तात्पर्य यह है कि उचित समय पर उचित मात्रामें विषयों की भुक्तिका सेवन किया जाए। भुक्तिका अनुभव किया जाए, भुक्तिके परिणामको भी प्रत्यक्ष देखा जाए। भुक्तिकी वासनाको शान्त किया जाए। पर साथ साथ मुक्तिका नियमित सेवन करते-करते मुक्तिकी वासनाको दृढ बनाया जाए। यह प्रक्रिया तब तक चलती रहनी चाहिए जब तक मुक्तिकी वासना अत्यन्त प्रबल और भुक्तिकी वासना अत्यन्त शान्त हो जाए। दोनोंका नियमित सेवन करते करते कोई ऐसी दशा आती है जहां मुक्तिके मार्गसे और भुक्तिके उपायोंसे ऐसा आनन्द प्राप्त होता है जो भुक्तिके आनन्दसे सहस्रों गुना अधिक होता है। उस समयके अनुभवसे भुक्ति स्वयमेव शान्त हो जाती है और चित्त मुक्तिकी ओर एकाग्र हो जाता है। इस प्रक्रियामें अनेक जन्म लगते हैं। अनेक जन्मोंके सतत प्रयत्नसे यह दशा प्राप्त होती है। इस दशाके प्राप्त होने पर जीव अवश्य ही मुक्ति को प्राप्त करता है। जिस महानुभावने पूर्वजन्मोंमें इस मार्गमें प्रयत्न किया हो अथवा जिसके प्रयत्नकी गति अत्यन्त तीव्र हो उसे यह दशा उसी जन्ममें प्राप्त होती है। जिसे इस जन्ममें यह दशा प्राप्त न हो, वह मरकर ऐसी परिस्थितियोंमें जन्म लेता है, जहां उसे भुक्ति और मुक्ति दोनोंके साधन प्राप्त होते हैं।

हमारी वैदिक या तान्त्रिक प्रक्रियाओंका भी उद्देश्य यही है। वैदिक प्रक्रियामें भी हमें मन्द, तीव्र और तीव्रतर मार्ग बताए गए हैं। जिनकी जैसी शक्ति होती है वे वैसे ही मार्गका अनुसरण कर सकते हैं। साधारण यज्ञ याग, पूजा पाठ आदि सभी उपायक्रम भुक्तिके हैं। इन उपायोंसे मनुष्य उत्तरोत्तर उन्नति करता है। उत्तरोत्तर भुक्ति और मुक्तिके साधन अधिक उसे मिलते हैं और कई-एक जन्मोंके प्रयत्नसे पूर्णतया मुक्त हो जाता है। तन्त्रों में अनेक तीव्रतर गति वाले मार्ग भी बताए गए हैं। परन्तु इस प्रकारके मार्गों पर सभी चल नहीं सकते। इसी कारण ऐसे सम्प्रदाय लोकप्रिय नहीं बनते। लोकप्रिय तो वही सम्प्रदाय बनता है जिस पर अधिक संख्यामें साधारण जीवोंकी गति हो। हमारा वर्ण-आश्रम धर्म स्वयं भुक्ति और मुक्तिका सामंजस्य ही है। ब्रह्मचर्य-आश्रम दोनोंकी योग्यता हमें दे देता है। गृहस्थ-आश्रम हमें नियमित भुक्तिके साथ-साथ मुक्तिकी उपासना सिखा देता है। भुक्तिको शान्त करके वानप्रस्थमें हम एकमात्र मुक्तिकी खोजके योग्य बन सकते हैं। राष्ट्रके लिए भी भुक्ति-मुक्ति सामंजस्य ही श्रेयस्कर होता है। एकमात्र मुक्तिका मार्ग तो राष्ट्रके लिए सम्भव नहीं। ऐसा राष्ट्र मुक्तिवादी राष्ट्रोंके अत्याचारोंका पात्र बन जाता है। अत्याचारोंसे पीड़ित राष्ट्रमें तो भुक्ति भी नहीं मिल सकती, मुक्तिकी फिर बात ही क्या। इसलिए वही राष्ट्र उन्नति कर सकता है और वही राष्ट्र संसारमें शान्ति स्थापन कर सकता है जो मुक्ति का आदर्श सामने रख कर भुक्ति और मुक्ति दोनोंके साधनोंका पर्याप्त संचय करे। एक अङ्गके शिथिल पड़नेसे एक चक्र वाले रथकी भांति राष्ट्र भी पथभ्रष्ट हो जाता है।

भुक्ति और मुक्ति वस्तुतः एक ही आनन्दके दो प्रतिबिम्ब है। भुक्ति प्रतिबिम्ब उस आनन्दकी मानों पीठका प्रतिबिम्ब है। इसकी खोज हमें उस परम आनन्दके सम्मुख नहीं ला सकती, सदा पीछे ही पीछे धकेलती रहती है। हां, यदि हम किसी उपायसे इस वस्तुका साक्षात् अनुभव करें कि यह प्रतिबिम्ब किसी अलौकिक बिम्बकी ही झलक है, तो उसे हम बिम्ब मान कर ही देखेंगे। उस दशामें बिम्ब ही प्रतिबिम्ब है, पृष्ठ ही मुख है, भुक्ति ही मुक्ति है और वही आनन्द है, वही ब्रह्म है, और वही है जो कुछ है। परन्तु इस वस्तुका साक्षात् अनुभव करने वाला करोड़ोंमें एकाध ही होगा। इस लिए साधारण जीवको भुक्ति परम-आनन्द रूपी परमेश्वरसे दूर ही हटाती रहती है। हां, एक चमत्कार भुक्तिमें है, वह यह है कि भुक्तिके मार्ग में उस परम-आनन्दका प्रतिबिम्ब, चाहे वह प्रतिबिम्ब ही क्यों

न हो, और चाहे वह एक क्षणमात्र ही क्यों न चमके, बहुत थोड़ेसे ही प्रयत्नसे प्राप्त हो जाता है। अर्थात् यह प्रतिबिम्ब सुसाध्य है और सबके लिए सुसाध्य है। मनुष्य ही नहीं पशु, पक्षी, कीट, वनस्पति आदि सभी जीव अल्प प्रयत्नसे इसके दर्शन पा सकते हैं। इसी लिए इस पीठके प्रतिबिम्बकी ओर अधिकांश लोग लग जाते हैं। यह भुक्ति प्रतिबिम्ब इसी कारणसे सर्वजन प्रिय है और सारा संसार इसीके लिए उन्मत्त है। मुक्ति भी उसी आनन्दका प्रतिबिम्ब है। यह उसके मानो मुखका प्रतिबिम्ब है। इसी लिए यह प्रतिबिम्ब हमें उसके सम्मुख ही लाता है, विमुख नहीं करता। वस्तुतः भुक्तिवादी और मुक्तिवादी दोनों ही एकमात्र आनन्दकी खोजमें लगे रहते हैं। भुक्तिवादी उल्टे मार्गसे और मुक्तिवादी सीधे मार्गसे ढूंढता फिरता है। इसी लिए भुक्तिवादी घने जङ्गलोंमें भटकता रहता है। इन बनोंमें उस प्रतिबिम्बकी कोई किरण इधरसे तो कोई उधरसे झांकने लगती है। वह उन्मत्त होकर इन किरणों को ढूंढने लगता है। इनका अन्त उसे कहीं मिलता नहीं। जितनोंको वह पकड़ लेता है उतनी ही और उसे दिखाई पड़ती हैं। इस प्रकारसे अनेकों जन्मों तक भटकता ही रहता है। जब तक उसे मुक्तिवादी महात्मा न मिले और सच्चा तथा सीधा मार्ग न दिखाए, तब तक भटकता ही रहता है। मुक्तिवादी सीधे रास्तेसे एक-एक पड़ाव चलता जाता है। वह क्षणिक किरणोंकी अस्थिर चमक पर लट्टू नहीं होता। वह तो उस प्रधान मुखके प्रतिबिम्बको ही एक टक दृष्टिसे देखता जाता है। उत्तरोत्तर वह प्रतिबिम्ब अधिक-अधिक-उज्ज्वल होता जाता है। क्योंकि साधक उसके अधिक-अधिक समीप आता जाता है। यहां तक कि उसके सर्वथा सम्मुख पहुंच जाता है। यहां पहुँचने पर वह प्रतिबिम्ब ही परिपूर्ण बनकर बिम्बके रूपमें ही प्रकाशित होता है। फिर बिम्ब प्रतिबिम्ब और खोज करनेवाला तीनों एक हो जाते हैं। तब यह यात्रा समाप्त हो जाती है। फिर कुछ करना शेष नहीं रहता। यह मुक्तिमार्ग ही सच्चा मार्ग है, परन्तु इस पर चलना कठिन होता है। यह भुक्तिकी भांति सुसाध्य नहीं। अत्यन्त दुःसाध्य है। और मनुष्यमें भी विशेषकर जिज्ञासु ही इस पर चल सकता है। साधारण मनुष्य चलने भी लगे तो कुछ मास या वर्ष चलकर जब किसी भी पड़ाव पर पहुंचता नहीं तो भुक्तिमार्गकी चमकीली चमत्कार वाली मनोरम किरणें झट उसके मनको मुग्ध करके अपनी ओर खींच लेती हैं, और वह इस मार्गको छोड़कर दूसरी ओर चला जाता है। भुक्तिका चिर-वियोग उसके प्रति ऐसे जीवके रागको बहुत बढ़ा देता है। और वह जीव पहलेसे अधिक प्रेमसे भुक्तिका सेवन करता है। इसलिए साधारण जीवनके लिए भुक्तिमुक्ति मार्ग ही श्रेयस्कर बताया गया है। इस मार्ग पर आर्यनीतिसे चलता हुआ महात्मा समय आने पर स्वयमेव समझ जाता है कि इन दोनों में क्या अन्तर है। उसे कभी धोखा नहीं लगता। वह कभी किसी भी ओर सीमाका उल्लंघन नहीं करता। दोनों का सेवन उचित रीतिसे युक्त परिमाणमें करता जाता है। और पूर्वोक्त प्रकारसे सिद्धिको प्राप्त कर सकता है।

—

सबसे प्रिय पुष्पाञ्जलि

गांधीजी चाहते थे कि सब धर्मोंके अनुयायी आपसमें मिल कर सुख और शांतिसे रहें और सब भेदभावको समाप्त कर दें। प्रेम, सत्य, अहिंसा तथा एकताको राष्ट्र-निर्माणमें ले आवें और राष्ट्रकी नींव ही इन सिद्धांतों पर रखी जावे। किन्तु भेदभावके अनुयाइयोंको यह भला कब सहन हो सकता था। उन्होंने अपनी पूरी शक्तिके साथ इसका विरोध किया, यही सब इस जघन्यताका कारण था।

स्वर्गीय श्री गांधीजी धर्मको राष्ट्रमें लाकर राष्ट्रको धार्मिक बनाना चाहते थे, जिससे राष्ट्र पवित्र हो और संसारको सुख शान्ति दे सके, लड़ाई झगड़े, संग्राम महा-युद्ध, सदाके लिये लोप हो जावें। किन्तु मि० जिन्नाने राष्ट्र को धर्ममें ला घुसाया, जिससे धर्म पतित हो गया और यह सब अनर्थ हुआ।

हम सबको प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि हम अपने जीवनमें सत्य, अहिंसा, प्रेम, व एकताको अपनावेंगे और प्रयोगमें लायेंगे, यही महात्मा गांधीके लिये सबसे सुन्दर प्रिय पुष्पाञ्जलि होगी।

—श्री कृष्णजसराय

जगद्गुरु श्रीकृष्ण

कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्

ऐतिहासिक श्रीकृष्ण और श्रीकृष्ण जो सदा रहते हैं, क्या एक ही वस्तु हैं ? श्रीमद्भगवद्गीतामें स्वयं भगवान् श्रीकृष्णने ही यह सिद्धान्त बताया है कि,

"नासतो विद्यते भावो, नाभावो विद्यते सतः।"

जो वस्तु किसी समय हो वही किसी समय न हो ऐसा कभी नहीं होता। उस विश्वव्यापी भारतीय महायुद्धमें उपस्थित शत्रु मित्रकी अपार सेनाओंके संहारका भीषण परिणाम सोच कर अर्जुनको जो व्यामोह हुआ, उसे दूर करने के लिये श्रीकृष्णने सब से पहली बात यही कही थी कि—

"नत्वे वाहं जातु नासं, न त्वं नेमे जनाधिपाः।
न चैव न भविष्यामः, सर्वे वयमतः परम्॥"

अर्थात् हम, तुम और ये राजा लोग पहले न रहे हों, केवल इसी समय है, और आगे न रहें ऐसा नहीं है—हम सदा से हैं और सदा रहेंगे। अन्तवन्त शरीरोंका अन्त एक अवस्थान्तर मात्र है जिसे देहान्तर प्राप्ति कहते हैं। अखण्ड अनन्त सर्व व्यापी जो सनातन तत्व है उसकी लीलामयी अनन्त इच्छाएं इन अनन्त नाम रूपोंके अन्दर अनन्त जीव बन कर प्रतिक्षण अपनी काया-माया पलटती हुई अपने सान्त नाम रूपोंको उसी सनातन अनन्तमें लीन करने जा रहीं हैं।

"मम वर्त्मानुवर्त्तन्ते मनुष्याः पार्थ ! सर्वशः।"

इसी लक्ष्यकी ओर प्रतिक्षण उनका देहान्तर हो रहा है। पर इस देहान्तरका रहस्य कोई जानता है, कोई नहीं जानता—बिरला ही कोई जानता है—वही जानता है जो—

"यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्वतः।"

अथवा भगवान् श्रीकृष्णके शब्दों में—

"जन्म कर्म च मे दिव्यं एवं यो वेत्ति तत्वतः।"

भगवान्के ये दिव्य जन्म-कर्म इनका तांता लगा हुआ है। यही ज्ञान जो गीतामें या कुरुक्षेत्रके उस समराङ्गणमें अर्जुनको दिया था, उससे बहुत पहले विवस्वान्को दिया, विवस्वान्ने मनुको दिया, मनुने ईक्ष्वाकुको दिया और वहांसे राजर्षियोंकी परम्परा चली, पर बहुत कालके पश्चात् जब वह नष्ट हो गया तब दिव्य जन्म धारण कर, दिव्य कर्म द्वारा वही ज्ञान—वही योग देवाधिदेवने अर्जुनको दिया और फिर वहांसे वही परम्परा चली। इस प्रकार ऐतिहासिक श्रीकृष्ण उस इतिहासके पूर्व भी थे और बाद भी हैं।

ऐतिहासिक श्रीकृष्णने अपने पैरके अंगूठेको मृग का नेत्र बनाकर जरा व्याधसे अपना शरीरान्त कराया था। पर जो विराट शरीर उन्होंने गीतामें अर्जुनको दिखाया था उसका देखना दुर्लभ होंने पर भी, वह उस दिव्य दर्शनसे पहले भी था और आज भी है।

ऐतिहासिक श्रीकृष्णके जीवनकी स्मृति भी आज वर्तमान है। शरीर अन्तवन्त है, स्मृति अविनाशी है। शरीरका क्षणक्षण रूपान्तर एक कर्म है। शरीर में जो सत्य सनातन तत्व है वह यही प्रतिक्षण रूपान्तर साधक कर्म है और इस कर्मका कारण स्मृति है। यह स्मृति जीवनहै। इसीसे महापुरुषोंका शरीरान्त होने पर भी उनका मरणोत्तर जीवन दिखाई देता है। श्रीकृष्णकी उस लीलाको हुए आज पांच सहस्र एकसौ वर्षसे भी अधिक काल बीत गया। इतिहास इस बात का साक्षी है। कि श्रीकृष्णने जो धर्मराज्य स्थापित किया वह उस स्थापनाके समयसे लेकर ढाई सहस्र वर्ष पर्यन्त अपने पूर्ण प्रकाशके साथ विद्यमान रहा। उन्हीके दिव्य कर्म और दिव्य उपदेशकी स्मृतिने राजा परीक्षितसे कलिको बांध रखा था। परन्तु "स कालेनेह महता योगो नष्टः परं-तप" कहनेका-सा जब समय

आया तब उन्हींकी दिव्यवाणी सुनकर भगवान् बुद्ध देवने धम्मपद निर्माण किया। वही धम्मपद वर्तमान बौद्धजगत्की श्रीमद्भगवद्गीता है। बौद्धोंके महायान पन्थके आचार्य श्रीराहुल भद्रने श्रीकृष्णकी ही स्मृतिको जगाकर श्रीकृष्णकी वाणीसे ही अपने पन्थको जीवनदान दिया और इसी पन्थसे निकला हुआ वर्तमान ईसाईधर्म है। ऐतिहासिक श्रीकृष्ण अपने ऐतिहासिक शरीरान्तके पश्चात् इस परम्परामें संसारमें भी सर्वत्र दिखाई देते हैं। हिन्दुस्थानमें तो तबसे—

ज्ञेयं गीतानाम सहस्रम्, ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्रम्।

सब तत्वजिज्ञासुओं और भगवद्भक्तोंकी निष्ठा का विषय हो गया है। बौद्धोंके शून्यवादसे जब नास्तिकवाद फैला और मठ, मन्दिर, विहार, व्यभिचार, अनाचारके केन्द्र होगये तब श्रीकृष्णके ही भगवद्गीतोपदेशका दण्ड धारण कर संन्यासियोंके चक्रवर्ती, जगद्गुरु श्रीमत् शंकराचार्यने उसी श्रीमद्भागवद्धर्मको स्थापना की। और इनके पश्चात जितने हिन्दू आचार्य हुए उन्होंने भिन्न-भिन्न समयमें भिन्न-भिन्न भाष्योंके द्वारा श्रीमद्भगवद्गीताका ही प्रचार किया। अन्तमें राष्ट्रसूत्रधार लोकमान्य तिलकने भी अपने महत्तर जीवनके महत्तम भागमें श्रीकृष्णको ही उस वाणीका प्रचार करके श्रीकृष्णके इन वचनोंका उच्चारण करते हुए ही अपनी इहलीला समाप्त की,

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत !
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥"

भगवान् श्रीकृष्णकी इस "गीता" वाणीका जो महात्म्य वर्तमान संसारके विदेशीय विद्वत्समाजने किया है और गीताप्रचारका उद्योग इन विदेशोंमें जिस रूपसे उत्तरोत्तर अधिकाधिक होता जा रहा है, उससे यही ज्ञात होता है कि संसारका विद्वत्समाज किसी वाणीके वक्ताको सबसे अधिक वन्दनीय मानता है तो वह वाणी श्रीमद्भगवद्गीता है और वह वक्ता संसारके पूर्व, वर्तमान और भावी जगद्गुरु श्रीकृष्ण हैं। मानवधर्मशास्त्रके आदिसूत्रग्रन्थके कलिसंस्करणमें एक श्लोक आता है—

"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥"

भारतवर्षकी यह महत्ता—भारतवर्षका जगद्गुरुपद और भारतवर्षके पादप्रदेशमें समग्र भूमण्डलका नतमस्तक होकर नमन करना यदि सत्य है तो वह वर्तमानमें सबसे अधिक श्रीकृष्ण और उनकी मधुर वंशीध्वनिके कारण ही सत्य है।

इस प्रकार ऐतिहासिक श्रीकृष्णके कर्ममय जीवन स्मृति और उनकी वाणी निखिल काल और अखिल भूमण्डलमें व्याप्त हो रही है, पर मणिमालाके अन्दर सूतकी भांति यह छिपी हुई है, ऐसी छिपी हुई है कि है या नहीं, इस विषयमें सन्देह होता है। सन्देहकी वृत्ति ही बढ़ती जा रही है और यह नास्तिपक्षमें ही अधिक दृढ़ हो रही है। इसीसे ऐसे जीवोंका प्रादुर्भाव हो रहा है। जिन्हें नास्तिक कहते हैं, जो ईश्वरको नहीं मानते, धर्मको नहीं मानते, शास्त्रको नहीं मानते। और इस नास्तिकताको प्रोत्साहित करते हैं। लेनिन और ट्रोजकी जैसे पुरुष जिन्होंने साम्राज्यवादके सिंहासनको कंपायमान करनेवाले अपने अद्भुत पराक्रमसे संसारको मोह लिया है। ट्रोजकीके नास्तिकवादका नमूना हमने देखा है। पर लेनिन नास्तिक था यह बात जँचने योग्य नहीं है, कारण, लेनिन दीन दुखियोंका हितचिन्तक और हितसाधक था। इस पर भी यदि लेनिन नास्तिक था तो भीष्म भी कौरवोंके साथी थे, यह कह कर समाधान करना पड़ता है। अवश्य ही इन नास्तिकोंकी उत्पत्तिका एक कारण है। धर्मके जराजीर्ण मन्दिरमें चूहोंने अपने बिल बना रक्खे हैं। और सर्वत्र उन्होंने अपनी तामसी वृत्तिकी तृप्तिके लिये धर्मके मूलतत्वको ही कतर कतरकर नष्ट करनेका महान् प्रयास किया है! सीधे सादे सरलचित्त भोले भलेमानस इससे ऐसे घबराये कि चूहोंसे रुष्ट होकर इन्होंने मन्दिरमें ही आग लगाने और ईश्वर, धर्म और शास्त्रका नाम निशान मिटा डालने पर कमर बांधी है। इनकी उच्छृंखल

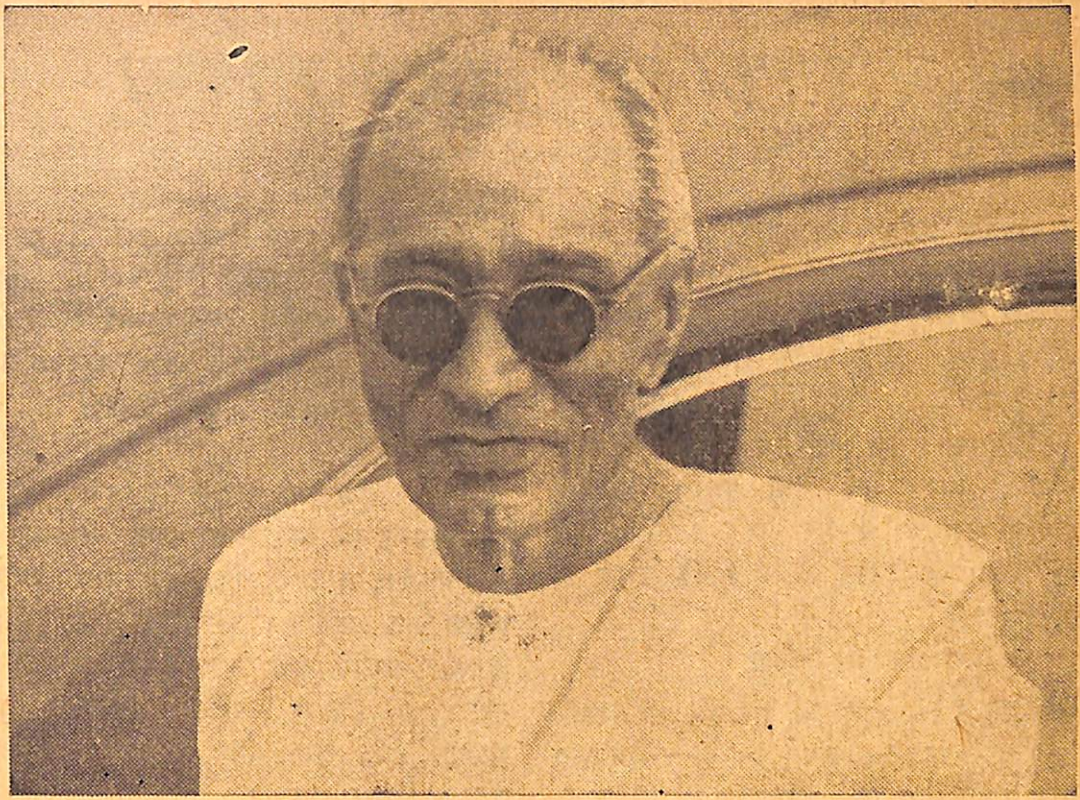
बुद्धमें यह बात नहीं समायी कि मानवी विधानसे भी कोई बड़ा विधान है। यह मानवी बुद्धिको मानते हैं पर उस बुद्धिके उद्गम स्थानको नहीं मानते—रक्ताभिसरणको मानते हैं पर वायुको नहीं मानते जो रक्ताभिसरणका कारण है, और उस आकाशको भी नहीं मानते जो वायुका आश्रयस्थान है। वे यह समझते हैं कि मानवी बुद्धिके परे कोई और प्रकाश है, यह माननेका कोई प्रयोजन नहीं है, दुर्योधन मूलतः ऐसा ही नास्तिक था। नारायणी सेनाकी अजेय शक्ति पर उसका विश्वास था पर नारायण पर विश्वास नहीं था। कंस, जरासन्ध, शिशुपाल, नरकासुर और कालयवन ये सब नास्तिक थे। वर्तमानमें नास्तिकता स्यात् इतनी नहीं बढी है जितनी दुर्योधन के समयमें बढ़ी थी। पर यह बढ़ रही है और इसका पर्यवसान भी वही है जो भारतीय युद्धमें दिखायी दिया। क्या श्रीकृष्णके जीवनकी स्मृति और उनकी वाणी संसारकी शान्ति और कल्याणके लिए इस नास्तिकताका और इस नास्तिकताके कारण जराजीर्ण मन्दिरके बिलोंमें घर बनाकर रहनेवाले उन चूहोंका दमन नहीं कर सकती? श्रीकृष्णकी स्मृति और वाणीका यही काम है। पर जब इस स्मृतिवाणी से यह काम न होगा तब जिस सनातन सत्यकी यह स्मृति है, जिससे यह वाणी निकली है, उस आत्माको स्मृति और वाणीसे भी अधिक स्थूल रूप धारण करना पड़ेगा। ऐतिहासिक श्रीकृष्णका शरीर श्रुति-स्मृति का ऐसा ही स्थूल रूप था उस समय उसकी आवश्यकता थी और अब फिर उसकी आवश्यकता उत्पन्न हुई है।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे—युगे॥

गौ, गोप और गोपियोंको साथ लेकर वह श्री कृष्ण फिर आवेंगे और पृथ्वीपर फिर हड़कंप मचावेंगे। कंसके अखाड़ेमें उतरकर भारत-माताको पुत्रवती कहावेंगे, माताके स्तनसे दुग्धकी धारा बहावेंगे और असुरशिरके कंठनालसे रक्तकी धारा बहावेंगे, रमाओंकी रतिको भुलाकर विरतिके महान् सौन्दर्यसे संसारको मोह लेंगे और अपनी असिधारसे भी अधिक तीक्ष्ण धारवाली दण्डनीतिसे दाम्भिक दुराचारी मदमत्त असुरोंको दंड देंगे, धर्मराज्यके महान् यज्ञके याज्ञिकोंका चरणोदक पान करेंगे, पर इस बार मत्सरग्रस्त शिशुपालको क्षमा नहीं की जायगी, वालगोपालोंमें रासलीला रचेंगे, द्रौपदीकी लाज रखेंगे और ऐसा धर्मराज्य स्थापित करेंगे जैसा पहले कर चुके हैं। पर जब तक वह नहीं आते हैं तब तक हम उनकी स्मृति जगावें, उनकी वाणी श्रवण करें। संसार तबतक उन रावेश रमेश श्रीकृष्णचन्द्रका वह दिव्य सन्देश सुनें जो संसारको प्राप्त सबसे महान् सन्देश है।

शनिकी साढ़े-साती और ढैय्या

मिथुन राशिवाले राष्ट्र नगर और व्यक्तियोंको जो शनिकी बृहत्कल्याणी या साढ़ेसाती और मेष तथा धनुः राशि वालोंको लघुकल्याणी या ढैय्या चल रही थी वह श्रावण कृष्णा ४ रविवार ता० २५ जुलाईको समाप्त हो जायगी। इसी दिनसे कन्या राशि वाले राष्ट्र प्रान्त नगर और व्यक्तियोंको साढ़साती (बृहत् कल्याणी) और वृषभ तथा मकर राशि वालोंको लघुकल्याणी (ढय्या) प्रारम्भ होगी, यह अशुभ फलदायक है। जिनकी जन्मकुण्डलीमें शनिकी अशुभ स्थिति हो उन्हें शनिकी साढसाती और ढैय्या विशेष कष्ट देती है। जिनकी जन्मकुण्डलीमें शनिकी स्थिति अच्छी हो उन्हें अशुभ फल नहीं देतीं। पाद विचार—यह सिंहका शनि ता० २५ जुलाईसे २॥ वर्षके लिए कर्क वृश्चिक और कुम्भ राशिवालोंको रजतपाद (चांदीके पाये) पर आ रहा है। इसका फल शुभ है। मिथुन, कन्या, मकर राशिवालोंको ताम्रपाद पर आ रहा है यह भी शुभ है। वृषभ, तुला, मीन राशिवालोंको सुवर्ण पाद पर हानिकारक है। मेष, सिंह, धनुः राशिवालों को लोह पाद पर आ रहा है। जो कष्ट कारक है, सिंहके शनिका संसार पर विशेष प्रभाव आगे पृष्ठ ६५।६६ पर देखिये।



प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल

सम्माननीय चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचार्य महोदय

मूढ मानवकी नासमझीने परिस्थितियोंके पुण्य-प्रवाहको छिन्न-भिन्न कर दिया है। इस समय भारतीय जनताका वही पथिकृत् नेता है जो परिस्थितियोंके प्रवाहको उचित दिशामें बहा दे। हमारा विश्वास है चतुरराज-नीतिज्ञ सूक्ष्मदर्शी श्री राजगोपालाचार्य इस महत्-कार्यकी पूर्ति करेंगे। प्रभो! इन्हें उत्तरदायित्व-की पूर्तिका बल दो! ओज दो!! साहस दो!!!

भारतका सांस्कृतिक भविष्य

[लेखक— श्री अज्ञात]

आज भारतीय जनता स्वतन्त्रताके जिस स्वर्गीय सुखका अनुभव कर रही है, वह उसके बलिदानों और कष्टसहिष्णुताकी महान् परिणति है, फिर भी अभी हमने यह समझनेका प्रयत्न नहीं किया कि हमारी स्वतन्त्र संस्कृतिका कैसा स्वरूप-विधान हो। हमें इस बात पर विचार करनेकी आवश्यकता है कि स्वराज्यके सांस्कृतिक भवन का निर्माण हम पूर्व या पश्चिम संस्कृति अथवा दोनोंके सुयोगके आधार पर करेंगे। हमें तत्सम्बन्धीं विचार कर ही लेने चाहिए क्योंकि विचार ही व्यवहारका प्रणेता है।

संस्कारजन्य स्वरूप

युवकोंकी सांस्कृतिक साधनाकी पुस्तकमें सर राधाकृष्णन्ने सुसंस्कृत-स्वरूपके सम्बन्धमें कहा है—"सुसंस्कृत होनेका अर्थ निरी विद्वत्ता नहीं, प्रत्युत वह स्थिति विवेक-बुद्धिके साथ मेल खाती है। जीवन सम्बन्धी सच्ची अवगतिका नाम ही सुसंस्कृत होना है। सुसंस्कृत मानव में बुद्धिबलके अतिरिक्त नीतिबल और विचार प्रौढ़ताके साथ-साथ स्वभावको मिठास भी होती है। यह उन्नत हृदयका प्रत्यक्ष प्रमाण है। देशके दुःख-दारिद्र्य और अज्ञानताकी ओरसे सुसंस्कृत मानव आंख मूंद नहीं सकता। सुसंस्कृत व्यक्ति आत्माको ही परम सत्य मानता है। जो वस्तु नश्वर (नाशमान्) है, उसकी ओरसे दृष्टि हटाकर अविनश्वर वस्तुपर केन्द्रित करना ही सत्य सनातन है। केवल भौतिक आनन्दमें लिप्त रहना या उन्हींकी आराधना और अनुशीलनमें डूब जाना सुसंस्कृत मानवका कर्तव्य नहीं। भारतीय संस्कृतिने इसीं बात पर अधिक जोर डाला है कि मनुष्य तथा विश्वमें विलसित परमात्म-तत्वकी पारमार्थिक सत्ता तथा सत्यके मूलान्वेषणकी नितान्त आवश्यकता है। हम एक प्रकारके जड़वादके सुदृढ पाशमें आबद्ध हो गये हैं। हम सुख-सुविधाओंका सम्पादन कर स्वशरीर संपोषण-कार्यमें सतत संलग्न रहते हैं और आर्थिक सफलताके एक ही ध्येयकी सिद्धिमें अपने समस्त बौद्धिक बलका व्यवहार करनेमें तत्पर दिखाई देते हैं। आधुनिक संक्रमणकाल हमारे समक्ष जीवन-सम्बन्धी नई सादगी, नये तप, नये त्याग और नई तितिक्षाकी मांग उपस्थित कर रहा है।

धनवान् और गरीबका स्थान

समाजवादके चाहे जैसे उच्च सिद्धान्त हों, किन्तु यह धारणा भ्रान्त है, कि धनी और गरीबका भेद सर्वथा मिट जायेगा। धनवान्की हिंसा या उसका तिरस्कार करनेसे सच्चे समाजवादका संस्थापन सम्भव नहीं। हां, गीतामें निर्दिशित सम्पत्तिके गुण—सत्य अहिंसा दया, क्षमा, संयम, इन्द्रियनिग्रह आदि बलोंका संग्राहक निष्काम कर्मयोग, परोपकारवृत्ति आदि गुणोंका समाजमें आरोपण और स्थापन करनेसे ही समाजवादको अत्यन्त निकट लाया जा सकता है। इन गुणोंका उत्कर्ष ही समाजवादका मूलाधार हैं। यदि जनतामें इन गुणोंकी स्थिति है, तो समाजवाद स्वयंसिद्ध है। इससे प्रत्येक गरीब को भी अन्न, वस्त्र, स्वच्छ निवास, रोगीके लिए औषधि और निर्दोष मनोरञ्जनके साधन परिश्रम करने पर सरलतासे प्राप्त हो सकते हैं। धनवान् लोगोंकी मान्यता होनी चाहिए, कि धन स्वच्छन्द रूपसे चाहे जैसे खान पानादि सामग्री विषय-तृप्तिके साधन और अनुपयोगी मनोरञ्जनमें उड़ा देनेके लिये नहीं हैं; प्रत्युत देशके उद्योग और कला-कौशलको बढ़ाकर गरीबोंको काम देकर देशके उत्कर्ष साधनमें व्यवहार करना चाहिये, क्योंकि धनी उस धनके ट्रष्टी या उपयुक्त प्रबन्धक मात्र ही बने रहते हैं। यह शरीर भी अन्तमें अपना नहीं, तो धन पर ही इतना मोह क्यों ? पश्चिमीय जड़वादके आधार पर अधिष्ठित संस्कृतिके प्रभावमें आकर ही हम

ऐश-आराम, विलास वैभवके साधन प्राप्त कर इन्द्रिय-जन्य सुख सुविधाओंके अर्जनमें फँस गये और उन्हींके लिये विविधि प्रवृत्तियोंमें प्रवृत्त होकर काला सफेद भी करते रहते हैं और बादमें मन्दिरमें जाकर भगवान्‌का पद-स्पर्श कर आते हैं एवं व्यवहार तथा धर्मके कृत्रिम जीवन में उतरते हैं। स्वतन्त्र संस्कृतिमें ऐसा करना उचित नहीं। धनका सदुपयोग न हुआ, स्वार्थपूर्ण मनोवृत्तिसे लोभके वशीभूत होकर यदि चोर बाजारोंकी सत्ता बनी रही, तो स्वतन्त्रताका भी कोई अर्थ नहीं होगा। उलटे ईर्ष्या, द्वेष, क्लेश, लड़ाई, हिंसा आदि—जिनको गीतामें आसुरी सम्पत्तिके रूपमें वर्णन किया गया है—होती रहेगी तथा मृत्युवीर (शहीदों) के बलिदान भी व्यर्थ सिद्ध होंगे। अतः विचारों और जीवनकी फिलासफी लेकर समाजमें आमूल परिवर्तनकी आवश्यकता है। ऐसा करनेसे ही हम अपनी स्वतन्त्रताको ज्योतिर्मय कर सकेंगे और जिस प्रेम और आध्यात्मिक सम्पत्ति पर भारतवर्षका विशेषाधिकार है; उसके द्वारा हम विश्वको भी अपनी संस्कृतिका सुसंस्कृत स्वरूप प्रदान कर सकेंगे। लड़ाई, क्लेश और हिंसासे जर्जरित संसार भारतकी ओर सतृष्ण दृष्टिसे देख रहा है। भारत अङ्गरेजोंके शासनाधिकारसे मुक्त हो गया है; अतएव यह सब भार उस पर आ जाता है।

त्याग-भावना

भौतिक सुख-सुविधाओंकी प्राप्तिमें दत्तचित्त रहना ही जीवनका ध्येय न होना चाहिये। त्याग ही पूर्वी संस्कृतिका समुज्वल प्रतीक है। सादा जीवन और उच्च विचारके सिद्धान्तके अनुसार ही जीवन व्यतीत करना चाहिये। पाश्चात्य संस्कृतिके विराट उद्योगवादका स्वीकार भी भारतके लिए विशेष हितकर नहीं, क्योंकि उद्योगवादमें मानवताका लोप हो जाता है; मात्र पूंजीवादका ही पोषण होता है। गरीबके त्याग पर फूलता-फलता है। यन्त्र मनुष्यके लिये हैं। मनुष्य यन्त्रके लिये नहीं। शीत, वर्षा और रात में भी मजदूरोंको कृत्रिम जीवनका शिकार होना पड़ता है। झोंपड़ों और कुटीरोंके नैसर्गिक आनन्दका परित्याग करके कृत्रिम और प्रलोभनपूर्ण वातावरणमें पशुओंकी भांति श्रमिकों (मजदूरों) को रहना पड़ता है। 'घरके न घाटके' श्वान जैसी दशा नगरोंमें उनकी होती है। जिन्होंने नगर देखें हैं; वह वहांकी स्थितिकी सहज ही कल्पना कर सकते हैं।

भारतवर्ष तो सात लाख गावोंमें बसता है। स्वतन्त्र-संस्कृतिके मृतप्राय ग्रामोद्योगोंको पुनर्जीवन प्रदान करना पड़ेगा। सेवाभावी मनुष्योंके लिये गावोंमें सेवाकेलिये अनेक अवसर हैं। डाक्टर, वकील और व्यापारियोंको भी अपना रहन-सहन (जीवन-विधान) बदलना पड़ेगा। अर्थ-सम्पादनके लिये ही व्यापार नहीं; प्रत्युत अपनी दैनिक आवश्यकता पूर्तिका प्रबन्ध करते हुए सेवाके लिये व्यापार करने पड़ेंगे। किन्तु पश्चिमीयसंस्कृतिका अन्धानुकरण कर भौतिक सुख-सुविधाओं और साधनोंकी वृद्धिकी ओर ही विशेष लक्ष्य रहेगा तो स्वराज्यका कोई अर्थ नहीं। 'देह' का मोह छोड़कर जब हम 'देही' कहलाने लगेंगे, तभी स्वार्पण, परोपकार भावना जागरूक होगी और जीवनके अन्तिम परम ध्येय ईश्वरसिद्धिका समुज्ज्वल पथ दर्शन प्राप्त होगा, तथा उस पर अप्रतिहत निरन्तर आगे बढ़ा जा सकेगा।

पूर्व और पश्चिमकी विशेषता

पूर्वीय संस्कृतिके आदर्श सादगी सचाई, पवित्रता, ईश्वरपरायणता, अहिंसा, पारस्परिक सहयोग आदि हैं, जबकि पाश्चात्य संस्कृतिकी परिणति आडम्बर, अधिकारमद, इन्द्रिय सुख ऐश-आराम, भोग-विलास और अहंकी और अधिक अभिमुख प्रतीत होती है। नैसर्गिक सहवाससे पूर्वीय संस्कृतिकी प्राकृतिक शक्तियों और सुन्दर कलामय दृश्यमें ईश्वरीय शक्तिकी झांकी मिलती है जबकि पश्चिमीय संस्कृतिकी प्राकृतिक शक्तियोंका उपयोग स्वयं आनन्दोपभोग और विलास तथा लोभके साधन बढ़ानेमें ही किया जाता है।

एक आत्माके अस्तित्वका दृढ़ समर्थक है; दूसरा इन्द्रियजन्य सुख-साधनाका। एक जीवनका चरम विकास पारस्परिक सहयोग पर मानता है, तो दूसरा कलह और विनाशका हामी है। एक अपने आश्रमके आस-पास क्रीड़ा करने वाले पशु-पक्षियोंको अभयदान करता है, तो

दूसरा उन्हें अपने शिकारका रूप प्रदान करता है। एक शैशवकालसे ही अहिंसाके दिव्य मन्त्रसे अभिमन्त्रित किया जाता है, तो दूसरा अपनी स्वतंत्रता, अपने अधिकार तथा अन्य प्रलोभनोंके बाधकको मिट्टीमें मिला देनेकी आज्ञा देता है। एक आत्मत्याग, स्वार्थ-त्याग, सेवा आदि गुणोंका पोषण करता है, तो दूसरा कोई भी कार्य करनेसे पहले यह सोचता है, कि मुझे इससे क्या लाभ होगा—कितना धन मिलनेकी सम्भावना है। अर्थ ही उनके कार्यकी कमान है, एक आत्मज्ञानके साथ नम्रताके बीज बोता है, तो दूसरा प्राकृतिक शक्तियोंकी सिद्धिका गर्व करता है।

उपर्युक्त सांस्कृतिक आदेशोंके संतुलनसे कोई यह न मान बैठे, कि पूर्वमें सर्वत्र देवताओंका निवास है और पश्चिमके मनुष्य अच्छे नहीं। सद्‌गुण किसी एक जातिके नाम नहीं लिखे गये। आदर्श उच्च होनेपर भी आचारकी कसौटीमें पूर्वीय जनताका बहुत बड़ा भाग अनुत्तीर्ण सिद्ध है, पूर्वीय समाजमें भी अनेक दोष हैं। उन्हें दूर करते हुए पश्चिमीय संस्कृतिके विशेष गुण अपनाने चाहिए। पश्चिमीय विज्ञानका विशाल ज्ञान, योजना-शक्ति, संघ-शक्ति, साहस, स्वतन्त्रताकी भावना, बेकारोंको काम देनेकी सरकारकी जिम्मेदारी, कानून और अनुशासनके प्रति सम्मान, व्यवस्था-शक्ति विनय, विवेक, कार्यमें प्रमाद न करनेका अभ्यास शारीरिक सम्पत्तिसंवर्द्धनके लिये व्यायामका प्रयोग आदि अनेक गुण पश्चिमीय संस्कृतिकी विशेषताका परिदर्शन कराते हैं। उन्हें अपनाना ही चाहिये।

इस समय देशको ज्ञानी साधुओंकी आवश्यकता है, दानी धनिकोंकी आवश्यकता है। आलस्य और व्यसन त्यागपूर्वक सच्चे परिश्रमी पुरुषोंकी आवश्यकता है और आवश्यकता है चरित्रवान् स्त्री पुरुषोंकी जो कहीं भी जाकर गुलाबके पुष्पकी भांति अपने सौरभका प्रसार करें। जहाँ रहें सेवा धर्मका पालन करें। पश्चिमीय जड़वाद और संघर्ष से संसार अब उकता गया है और भारतकी ओर आशापूर्ण दृष्टि लगाये हुए है। उसे पूर्ण विश्वास है कि विश्वव्यापी प्रेम और शान्तिका सन्देश भारतकी ओरसे सर्वत्र फैलाया जायगा। ऐसा होनेपर ही भारतीय स्वराज्यकी संस्थिति सार्थक होगी, भारतमें रामराज्यका गौरव गान होगा।

'तुलसी'

[लेखक—श्री रमानन्द सारस्वत]

भारतीके लाल तुलसी !
आज हुलसी अङ्गनायें·
घूमती हैं खिन्न-मन-सी
क्यों न पायेंगी तुझे फिर ?
हाय, भारत भाल तुलसी !!!
विश्वमें तूने जगाया,
जागरणका मन्त्र नव था !
दिव्य तेरी उस गिरामें
आमरण वह एक रव था !!
शान्त जीवनके पुजारी !
क्रान्ति तेरी गीतिका थी !
रामका आदर्श अनुपम,
कह रहा था तू उसे ही—
दिव्य था वह भाव तेरा !!!
मूक मुसलिम-राज्यमें भी,
क्रान्तिका भीषण पुजारी !
जागरणकी रागिणी—में-
तालस्वर मय राग भैरव—
गा रहा था पुण्य-धारी !
क्रान्तिके ओ ज्योति धारी !!
लाल हुलसीके अनोखे !
विघ्न दलकों कालसा तू—
चीरता औ फाड़ता-सा—
मिट गया रे साधनामें !
क्या कहें ? सब कह चुके हो !
वह अमर तव गान गूंजा-
आज शत-शत कण्ठमें है।
हिन्दुकुल कविके शिरोमणि !
लाल हुलसी !! आज हुलसी—
हैं घरोंमें अंगनायें—
फिर न होगा क्या न तुलसी ?
खो गया क्यों ? हाय ! तुलसी !!!

भारतीय-ज्योतिष

[ले०—श्री पं० रामदत्त जी ज्योतिर्विद् महोपदेशक]

"वृत्तान्त पहले व्योमका प्रकटित हमीने था किया।
वह क्रान्तिमण्डल था हमीसे अन्य देशोंने लिया॥
थे आर्य भट्ट, वराह, भास्कर, तुल्य ज्योतिर्विद् यहाँ।
अब भी हमारे मानमन्दिर वर्णनीय नहीं कहाँ॥"

प्रोफेसर बेवर और कोलब्रुक साहबने सिद्ध किया है कि चीन और अरबकी ज्योतिष विद्याका विकास भारत वर्षसे हुआ है, एलबरुनी साहबने लिखा कि "हिन्दू लोग 'अङ्कशास्त्र' में संसारकी सब जातियोंसे बढ कर हैं, हिन्दुस्थानकी विद्या होने ही से फारसी वाले अङ्क विद्याको इल्महिन्दसा कहते हैं। यूनानियोंने भी बौद्ध कालमें भारतीय ज्योतिषका तक्षशिला और नालन्दा के विश्वविख्यात मठोंमें अध्ययन किया, भारतके ब्राह्मणोंने इस विद्याका आविष्कार किया, ज्योतिष—विद्या में संसार भारतका ऋणी है। "रैभ्यात्रिहारित वशिष्ठ पराशराद्यैः" रैभ्य, हारित, वशिष्ठ, पराशर, कश्यप, नारद गर्ग, देवल, जैमिनी, मरीचि, अंगिरा, भृगु प्रभृति ब्रह्मर्षिगण, जीव शर्मा, सिद्धसेन, देवस्वामी, आर्यभट, वराहमिहिर, लल्ल, श्रीपति, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्यादि आचार्यवृन्द, तथा कालिदास, भट्टोत्पल, शतानन्द, गणेश दैवज्ञ, विट्ठलदीक्षित, नारायणदैवज्ञ, काशीनाथ, रामदैवज्ञ, नीलकन्ठ प्रभृति दैवज्ञगण ज्योतिषके ग्रन्थकार और लेखक हैं।

लक्षंव्याकरणं प्रोक्तं च तुलक्षं तु ज्योतिषम्।

इस प्रमाणके अनुसार आज भारतीय ज्योतिष शास्त्र सम्पूर्ण उपलब्ध नहीं है, भिन्न२ विषयोंके अनेक ग्रन्थ लुप्त हो चुके हैं। कुछ अंश शेष हैं। भास्कराचार्यके मत से सत्ययुगके प्राचीन वैदिक कालमें ब्राह्मणोंको यज्ञ याग, कर्मकाण्ड, वैदिक संस्कारोंके लिये कालज्ञानकी आवश्यकता हुई, उसी समयसे तारामण्डलकी खोजके साथ साथ ज्योतिषशास्त्रकी रचना प्रारम्भ हुई।

वेदास्तावद्यज्ञकर्म प्रवृत्ता, यज्ञाः प्रोक्तास्ते तु कालाश्रयेण शास्त्रादस्मात् कालबोधो यतः स्याद्वेदाङ्गत्वं ज्योतिषस्योक्त मस्मात्॥ (शिरोमणि सिद्धान्त)

गणितका सबसे प्राचीन ग्रन्थ इस समय सूर्यसिद्धान्त है। सत्ययुगका कुछ अंश शेष रहते हुए।

"अल्पावशिष्टे तु कृते" इसकी रचना हुई।
'अष्टाविंशाद्युगादस्माद्यातमेतत् कृतं युगम्"

यह अठाइसवां सत्ययुग व्यतीत हुआ। ऐसा सूर्यसिद्धान्त में लिखा है। इसी काल संख्याके अनुसार सूर्य सिद्धान्तीय गणित किया जाता है। लगधका वेदाङ्ग-ज्योतिष भी प्राचीन ग्रन्थ है।

ज्योतिषके गणित और फलित दो मुख्य विभाग हैं। चतुर्थांशमें गणित ग्रन्थ और तीन भागोंमें फलितके मुख्य विषय हैं। गणितके ग्रन्थोंमें सिद्धान्तकरण और सारणी मुख्य हैं, फलितमें संहिता, जातक, सामुद्रिक, प्रश्न मुहूर्त ग्रन्थ, वास्तुविद्या शकुन-विज्ञान स्वप्नविद्या आदि भिन्न भिन्न विषयोंके अनेक ग्रन्थ हैं।

सिद्धान्त-ग्रन्थ

इनमें भूगोल, खगोल, समुद्र और द्वीप, जलस्थलादि का वर्णन, ग्रहनक्षत्र ग्रहणादिका गणित, ग्रह—स्पष्ट, पञ्चांग आदिका गणित, दिग्साधन, कालसाधन, समस्त व्यावहारिक गणित जिसके अन्तर्गत लीलावती, बीजगणित भी सम्मिलित हैं, यह सब प्रकारके गणित हैं। सूर्यसिद्धान्त, वशिष्ठसिद्धान्त, ब्रह्मसिद्धान्त, आर्यभट्ट, तत्वविवेक तथा शिरोमणिसिद्धान्त इस समय मुख्य हैं, सूर्य, वशिष्ठ, ब्रह्मगुप्त, आर्यभट्ट, लल्ल, और भास्कराचार्य इनके निर्माता हैं। पैतामहसिद्धान्त पौलस्त्यसिद्धान्त

भौमसिद्धान्त, वराहमिहिर रचित पंचसिद्धान्तिका, पं० प्रेमवल्लभकृत परमसिद्धान्त भी प्रसिद्ध हैं। यूनानके यवनाचार्यने भारतीय ज्योतिषके आधार पर रोमकसिद्धान्त रचा।

करणग्रन्थ

इनमें पूर्वोक्त सिद्धान्त गणित करनेकी सरल रीति हैं, ग्रहस्पष्ट, पंचांगनिर्माण, ग्रहणादिका गणित इनके द्वारा होता है। खण्डखाद्य, भास्वती, धीकोटि, करणकुतूहल, ग्रहलाघव और केतकी इस समय प्रसिद्ध करण हैं। सतानन्द पण्डितने भास्वती करण रचा, सतानन्द वराहमिहिरके शिष्य थे। ६०० शक शताब्दिमें ब्रह्मगुप्तने खण्ड-खाद्य करण बनाया; श्रीपतिने धींकोटि, भास्कराचार्यने ११५० ई०के लगभग करणकुतूहल, तत्पश्चात् १४वीं शताब्दीमें गणेशदैवज्ञने ग्रहलाघव करण और वर्तमान बीसवीं शताब्दीमें शक १८०० में श्री वेंकटेशबापूशास्त्री केतकरने केतकी करणग्रन्थ बनाया। ग्रहलाघव और केतकी के गणितका इस समय विशेष प्रचार है।

सारणी

ग्रहस्पष्ट, पञ्चांग गणित, ग्रहणादिके गणितकी अनेक प्रसिद्ध सारणियां हैं, करणग्रन्थोंके अनुकूल इनका सरल गणित होता है। सूर्यसिद्धान्त,ब्रह्मसिद्धान्त और आर्यसिद्धान्त के मतकी भिन्न२ सारणियां बनी हैं, मकरन्द सारणी, चण्डू और केतकीके पञ्चांग प्रसिद्ध हैं, केतकीका गणित सूक्ष्म होता है। रामविनोद ग्रहस्पष्टकी उत्तम सारणी है, मुहूर्त चिन्तामणिकार रामदैवज्ञ इसके निर्माता हैं, ग्रहण तथा ग्रहस्पस्ट सम्बन्धी ग्रहलाघवादिके अनुकूल और भी कई सारणियां हैं।

संहिता

सिद्धान्त ग्रन्थोंके समस्त गणित ग्रहण, ग्रहयुद्धादिका शुभाशुभफल❀ अथर्ववेद तथा षडविंश ब्राह्मणादिमें जिन दिव्यभौमअन्तरिक्षके उत्पातोंकी शान्तिका वर्णन है उन उत्पातोंके शुभाशुभफल संहिताओंमें विस्तार पूर्वक लिखे हैं। सामुद्रिकविद्या, वास्तु-विद्या, स्वप्नविज्ञान, वृक्षायुर्वेद। आदिके विषय भी संहिताकारोंने कहे हैं,गर्गसंहिता, नारदसंहिता, आदि प्राचीन संहिताओंके अतिरिक्त बराहमिहराचार्य कृत बराहीसंहिता विशेष प्रसिद्ध और सर्वोत्तम संहिता है।

जातक ग्रन्थ

जन्मकालके लग्न,नवांशक, द्रेष्काण,द्वादशांश त्रिंशांश, कुण्डलियोंकी ग्रहसंस्थाके तथा दशा अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशाओंकी गणनाके अनुसार जन्मसे मरण पर्यन्तकी जीवन सम्बन्धी मुख्य-मुख्य घटनाओंका वर्णन,राजयोग, दरिद्रयोग अल्पायु-दीर्घायु योगादिका वर्णन जातक ग्रन्थोंमें विस्तार पूर्वक लिखा गया है। भृगुसंहितामें तीनों जन्मका वर्णन आता है। जैमिनीसूत्र एक प्राचीन आर्ष ग्रन्थ है। 'सारावली' भी प्राचीन जातक है। वराहमिहिर कृत वृहज्जातक और लघुजातक सर्वोत्तम जातक हैं। पाराशरीजातक, जातकाभरण, भावकुतूहल, होरामकरन्द, जातकालङ्कार, चमत्कार चिन्तामणि,आदि अनेक उच्चकोटिके जातक ग्रन्थ समय-समय पर भारतीय विद्वानोंने बनाये हैं। इनके अतिरिक्त यवनाचार्य रचित 'यवनजातक' भी प्रसिद्ध जातकोंमें है। केशवी पद्धति तथा विट्ठल दीक्षित रचित 'विट्ठली' में जन्मपत्र सम्बन्धी सूक्ष्म गणित की विधि है। अग्निपुराण, तथा अन्य पुराणोंमें भी ज्योतिःशास्त्रका विषय आता है।

मुहूर्त ग्रन्थ

"उदगयने ज्योत्स्ने पुण्ये नक्षत्रे" उत्तरायण सूर्य,शुक्लपक्ष और शुभ नक्षत्र आदिमें संस्कार करनेकी गृह्यसूत्रोंमें आज्ञा है। इस विषयका मुहूर्त ग्रन्थोंमें विस्तार पूर्वक वर्णन है: षोडश संस्कारोंके मुहूर्त, देवप्रतिष्ठा, राज्याभिषेक, गृह

❀ शन्नोभूमिर्वेपमाना, शमुल्का निर्हतं च यत्। शं गावोलोहितक्षीराः शं भूमिरवतीर्यतीः॥ अथर्व-१६।६।८

अर्थात् भूमिका कांपना, उल्काका गिरना, गौके स्तनोंसे रुधिर निकलना, पृथ्वीका नीचे ऊपर होना, ये सब उत्पात हमको कष्ट न दें। सामवेदीय षडविंश ब्राह्मणके पंचम प्रपाठक, नवमखण्डमें अनेक उत्पातोंका वर्णन आता है— "तारावर्षाणि चोल्काः पतन्ति धूमायन्तिदिशो दह्यन्ति केतवो श्चोत्तिष्ठन्ति" इत्यादि॥

प्रवेश, यात्रा आदिके शुभ मुहूर्त अन्यान्य व्यावहारिक कार्योंके शुभाशुभ काल, दुर्मुहूर्त निकालनेकी विधिका इनमें वर्णन है। महाकवि कालिदास विरचित ज्योतिर्विदाभरण सब मुहूर्त ग्रन्थोंमें सर्वोत्तम बृहद् ग्रन्थ है। श्रीपति रचित रत्नमाला, रामदैवज्ञकृत मुहूर्त चिन्तामणि, नारायण-दैवज्ञकृत मुहूर्त मार्त्तण्ड और काशीनाथरचित शीघ्रबोधका विशेष प्रचार है। मुहूर्त गणपति, राजमार्त्तण्ड, मुहूर्त कल्पद्रुम, मुहूर्त मुक्तावली, ज्योतिषचन्द्रार्कादि अनेक मुहूर्त ग्रन्थ इस समय विद्यमान हैं। किन्तु इनमें कई अप्रकाशित हैं।

वास्तु-विद्या

गृहनिर्माण कला, इञ्जिनियरी, ग्रामनिर्माण नगरनिर्माण, भूगर्भविद्या, दिग्साधनादि इसके अन्तर्गत हैं। प्राचीन भारत में कैसे-कैसे विशाल भवन बनाये जाते थे, उनके कमरे भिन्न भिन्न दिशाओंमें कैसे-कैसे बनते थे, वास्तुशास्त्रसे इसका पता मिलता है। यथाः—

"स्नानागारं दिशि प्राच्यामाग्नेयामग्निमन्दिरम्।
याम्यायां शयनागारं वायव्यां पशुमन्दिरम्॥
प्रतीच्यां भोजनागारं, नैर्ऋत्यां वस्त्रमन्दिरम्।
भाण्डकोशं त्युत्तरस्यामीशान्यां देवमन्दिरम्॥

अर्थात् पूर्व दिशामें स्नानागार आग्नेयमें अग्निस्थान अंगीठी तापाने आदिका कमरा, दक्षिणमें शयनका कमरा, नैर्ऋत्यमें कपड़े बदलनेका (ड्रेसिंगरूम) पश्चिममें रसोईघर, वायव्यमें पशुमन्दिर, उत्तरमें खजाना, ईशानमें देवस्थलके कमरे बनावें। वास्तु प्रकरणका एक अध्याय प्रायः सभी मुहूर्त ग्रन्थोंमें है। वास्तु विद्याके एक दो हस्तलिखित बड़े बड़े ग्रन्थ भी मिलते हैं।

सामुद्रिक-शास्त्र

शरीरकी आकृति तथा हस्तरेखा आदि देख कर जीवन सम्बन्धी भूत भविष्य घटनाओंका शुभाशुभ ज्ञान इस विद्यासे होता है, यथाः—

"विशालभालाम्बुजपत्रनेत्रः सुवृत्तमौलिः क्षितिमण्डलेशः
आजानुबाहुः पुरुषं तमाहुः क्षोणीभृतां मुख्यतरंमहान्तः।

अर्थात् जिसका माथा बडा हो, कमलदल सदृश नेत्र हों, वृत्ताकार सुन्दर शिर हो, आजानु-बाहु घुटनों पर्यन्त बाहु हों, वह पुरुष राजाओं में मुख्य सम्राट हो।

शकुन-विद्या

अथर्ववेदादिमें पशुपक्षियोंके कई प्रकारके शकुनादि का वर्णन आता है। शकुन शास्त्रमें इसीका विस्तारपूर्वक वर्णन है। 'शकुनवसन्तराज' इस विषयका मुख्य ग्रन्थ है।

स्वप्न—विद्या

गृह्यसूत्रोंमें दुःस्वप्नादिकी शान्तिके निमित्त हवनादि करनेकी विधि है। ज्योतिषकी संहिताओंमें शुभाशुभ स्वप्नों का फल लिखा है। स्वप्नविद्याके पृथक् निबन्ध भी हैं।

प्रश्न-विद्या

जातक ग्रन्थोंके अन्तर्गत यद्यपि प्रश्नका विषय भी आ गया है, तथापि वराहमिहिरके पुत्र भट्टोत्पलने 'षट्पञ्चाशिका' और 'भट्टोत्पल प्रश्न' यह दो प्रश्न सम्बन्धी ग्रन्थ पृथक् ही रचे हैं। और भी कई ग्रन्थ हैं। 'पञ्चपक्षी' व 'गर्ग-मनोरमा' आदि कई केरल मतके प्रश्न ग्रन्थ हैं।

फुटकर-ग्रन्थ

ताजिक और रमल यह यवनोंकी विद्या है। यूनान वालों ने 'ताजिक' और अरब वालोंने 'रमल' विद्या निकाली। जिस प्रकार साम्प्रतमें यूरोप वालोंने भारतीय सामुद्रिक, हस्तरेखा और जातक ग्रन्थोंकी विशेष खोज पूर्वक उन्नतिकी है, उसी प्रकार यवनाचार्य आदिने भारतीय ज्योतिषका विकास किया और 'ताजिक' तथा 'रमल'का निर्माण किया। काशीके नीलकण्ठाचार्यने 'नीलकण्ठी' बनाई। अन्य भी ताजिक ग्रन्थ संस्कृतमें रचे गये। 'रमल' के ग्रन्थभी संस्कृतमें बने।

हम पहले लिख चुके हैं कि बौद्धकालमें चीन तथा यूनान आदिमें भारतीय ज्योतिष फैला। आर्यभट्टका भू भ्रमण सिद्धान्त भी भारतसे यूरोप पर्यन्त पहुंचा। वेद ब्राह्मण गृह्यसूत्र, धर्मशास्त्र, इतिहास, पुराण प्राचीन सभी धर्म ग्रन्थोंमें ज्योतिषका मूल बीज मिलता है। भारतीय ब्राह्मणों ने कठिन परिश्रमसे ज्योतिषका आविष्कार किया। तारा-मण्डलमें दिन रात्रि दृष्टि लगाकर नेत्रोंकी ज्योति खो डाली। आर्यभट्टसे लेकर बापूदेव पर्यन्त सैकड़ो पण्डितोंने गणित विद्याकी खोजमें अपना जीवन अर्पित किया।

आज भी सहस्रों ब्राह्मण थोड़ाबहुत ज्योतिषशास्त्रका ज्ञान रखते हैं। सैकड़ों उच्चश्रेणीके सिद्धान्तवेत्ता विद्वान् हैं, पर

लग्न कुण्डली द्वारा रोग-ज्ञान

[लेखक-राजवैद्य श्री पं० अमरदत्तजी मिश्र एल. एम. ए. कोमरशीयल एस्ट्रोलोजर]

आयुर्वेद और ज्योतिष दोनोंका सम्बन्ध अनादिकालसे है और जिस प्रकार निदान आयुर्वेदका एक प्रधान अंग है, उसी प्रकार रोग ज्ञानके लिये ज्योतिष भी इस विषयका एक महत्वपूर्ण अङ्ग माना है, जिसके द्वारा हम रोग होनेका समय तक पहिले ही बतला सकते हैं। अतः आयुर्वेद और ज्योतिष एक ही अङ्ग हैं, दोनोंका उद्देश्य प्राणी मात्रको संकटोंसे बचाना, स्वस्थ रखना, भविष्यसे सचेत रखना और उससे बचनेका आदेश करना है। यह एक बहुत बड़ा विषय है, किन्तु फिर भी मैं 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंको यथाशक्ति समझानेका प्रयत्न करूंगा। जन्मसे ही ग्रहों की स्थिति भावी व्याधियोंके सम्बन्धमें संकेत कर देती है कि अमुक व्याधि अमुक समय पर होगी और उससे सुरक्षित शीघ्र ही हो सकेंगे या नहीं। ज्योतिषशास्त्र बहुत ही गंभीर और क्लिष्ट है, जीवनके लिये उत्तम विज्ञान है, जिससे भूत भविष्य और वर्तमानका ज्ञान होता है। इससे बढ़कर और अधिक क्या ? संपूर्ण जगत् द्वादश राशियों और नवग्रहोंके अधिकारमें हैं और उसी प्रकार प्रत्येक मनुष्यके शरीरके प्रधान अंगों पर भी ग्रह और राशियोंका प्रभाव रहता है।

शरीरके प्रमुख भागोंपर राशियोंका अधिकार

मेषके अधिकारमें शिर, वृषके अधिकारमें चेहरा, मिथुनके अधिकारमें वक्ष, कर्कके अधिकारमें हृदय, सिंहके अधिकारमें उदर, कन्याके अधिकारमें पेडूस्थान, तुलाके अधिकारमें पेडूका अधोभाग, वृश्चिकके अधिकारमें पुरुषेन्द्रिय (जननेन्द्रिय विभाग) धनुके अधिकारमें दोनों नितम्ब, मकरके अधिकारमें दोनों घुटने, कुम्भके अधिकारमें दोनों जंघाएँ, और मीनके अधिकारमें दोनों पैर।

उपरोक्त अधिकृत राशि यदि पाप ग्रहसे सम्बन्धित है तो उसी अङ्गमें न्यूनता या व्याधिग्रस्त होना समझें और जिसमें शुभ ग्रहोंका सम्बन्ध है उसी अंगको उत्तम और रोग रहित समझें।

प्रत्येक दोष वात-पित्त-कफ, ज्योतिषशास्त्रादेशानुसार ग्रहोंके अधिकारमें रहता है, जो कि रोगोंका प्रधान हेतु है, वे दोष ग्रहोंकी प्रकृति पर निर्भर करते हैं और उसी ग्रहकी दशा भुक्ति या मित्रोंकी दशा भुक्तिमें सम्बन्धानुसार रोगोंको उत्पन्न करते हैं।

प्रत्येक कुण्डलीमें छठा स्थान रोगका है और हमें इस पर ही विशेष ध्यान देना है। यदि कन्या राशि और छठा भाव लग्नसे बलवान और पापग्रहोंके सब प्रकारके सम्बन्धसे रहित है तो समझना चाहिये कि उस व्यक्तिकी शारीरिक स्थिति उत्तम है और इसके विपरीत स्वास्थ्य खराब समझें। कन्या (६ स्थान) कालपुरुषके उन अङ्गों पर विशेष प्रभाव रखता है। जैसे आंतें आमाशय, यकृत प्लीहा (पाचक संस्थान जिन पर कि शरीरका स्वास्थ्य पूर्ण निर्भर करता है) आदि। प्रतिवर्ष आप देखें कि जब सूर्य कन्या राशिमें जाता है, उस समय सब मनुष्योंकी प्रकृतिके अनुसार पाचन शक्ति बिगड़ जाती है, अतः सूर्य मनुष्यके लिये प्रधान प्रभाव कारी है। सूर्य समस्त प्राणियोंकी आत्मा है और चन्द्रमा मन। जब-जब सूर्यमें विकृति आती है तब मनुष्योंके मनोंमें भी विकृति हो जाती हैं। मनके आश्रित हमारे सारे शरीरका कार्यक्रम चलता है, इस लिये सारे शरीरमें ही गड़बड़ी हो जाता है। ६ स्थान लग्नसे जो

आगेके लिये भारतीयज्योतिष क्रमशः लुप्त होता जा रहा हैं, राज्यकी ओरसे सहायता नहीं, शिक्षित लोगोंकी श्रद्धा नहीं, आजीविकाके अभावसे भारतीयज्योतिषियोंकी सन्तति सरकारी नौकरीके लोभमें अंगरेजी पढ़ने लगी है। ज्योतिष सम्बन्धी विद्यालयोंकी संख्या बढ़ानेसे और ज्योतिषके पण्डितोंकी आजीविकाका प्रबन्ध करनेसे भारतीय ज्योतिष जीवित रह सकता है। क्या जनताकी सरकार इधर ध्यान देगी ?

होता है वही आमाशय, अंतड़ियाँ, पाचनसंस्थान आदिके सम्बन्धमें हमें बतलाता है, जैसा कि पहिले कह चुके हैं। इसी प्रकार मेषका अधिकार लग्न है, आगे क्रमबद्ध गणना कर लें। मेष सिंह धनुः ये तीनों राशियां अग्नितत्त्व वाली हैं और इनके अधिकारमें बल रहता है (Strength of Vitality) है। वृष कन्या मकर ये तीनों पृथ्वीतत्त्व वाली राशियां हैं, इन तीनोंके अधिकारमें अस्थि-संस्थान और मांस संस्थान (Bones and flesh) है। मिथुन तुला कुम्भ वाततत्त्व वाली हैं, इन राशियोंके अधिकारमें श्वास संस्थान रहता है। कर्क वृश्चिक, मीन यह जलतत्व वाली हैं, इनके अधिकारमें रक्त संस्थान रहता है।

शरीरके आन्तरिक भाग पर राशियोंका प्रभाव

मेष या लग्न मस्तिष्क स्नायुमंडल। वृष या द्वितीयस्थान कंठनाली मस्तिष्कअधोभाग। मिथुन या तृतीय स्थान फुफ्फुस श्वासयंत्र। कर्क या चतुर्थस्थान उदरका संपूर्ण भाग। सिंह पंचमस्थान हृदय रक्त यकृत। कन्या षष्ठस्थान अन्तड़ी, प्लीहा। तुला या सप्तम स्थान बृक्क। वृश्चिक अष्टम स्थान मल त्याग संस्थान मूत्राशय। धनुः नवम स्थान धमनियां। मकर दशम स्थान अस्थियां और संधिसंस्थान ' कुम्भ एकादशस्थान रक्त भ्रमण संस्थान, श्वासयंत्र और नेत्र। मीन द्वादश-स्थान रस वाहिनियां।

रोग और द्वादश राशि चक्राधिकार

मेष—दिमागी गड़बड़ (उन्माद) शिरदर्द विषमज्वर (मलेरिया) स्वप्नकी बीमारी मृगी, अनिद्रा, नेत्रव्याधा। वृष - मेद वृद्धि, व्रण शोथ ग्रीवा पर। मिथुन—क्षय, निमोनिया, गठिया, आमवात, श्वास। कर्क—जलोदर, माता, केन्सर। सिंह—अग्निमांद्य, अजीर्ण, मधुमेह, निर्बलता,। कन्या—बद्ध कोष्ठ, हस्तमैथुन, गुदाके रोग, वीर्यदोष। तुला—चर्मरोग वृक्क, नेत्र,—उत्पादक अङ्गस्थ व्याधियां।

वृश्चिक—भगन्दर, क्षत, स्नायु रोग, रक्तपित्त, मल संबन्धी रोग। धनुः—घुटनेका दर्द, पक्षाघात, अपस्मार, नितम्बोंमें पीड़ा। मकर—कुष्ठ, श्वेतकुष्ठ, दन्तरोग, श्लीपद। कुम्भ—स्नायुक (बाला) मांसगत क्षत, सहसाक्षत। मीन—क्षय, राजयक्ष्मा,।

ग्रह और उनके अधिकारके अंग

सूर्य—पित्त, हृदय, मस्तिष्क, शिर, नेत्र, अस्थियां।
चंद्र—वक्ष, गर्भाशय, क्लोम, रक्त, ग्रन्थियां।
मङ्गल—पित्त, कान, नख, कपाल, मांसपेशियां।
बुध—सम्पूर्ण उदर, जिह्वा, फुफ्फुस, आंतें, स्नायुमण्डल, पित्त और स्नायु।
गुरु—वात, रक्त, जंघा, गुर्दे, मांस, मेद, धमनियां।
शुक्र—गर्भाशय, नेत्र, उत्पादकसंस्थान, वीर्य, वातविकार,
शनि—पाद, वायु, पित्त, घुटने।

जब जिस मनुष्यकी कुण्डलीमें इन ग्रहोंका योग षष्ठेश से होगा उसके अन्तर प्रत्यन्तर या दशामें अवश्य ही रोग होंगे। व्याधिका स्थान षष्ठ है, अतः षष्ठस्थ ग्रह षष्ठेश और षष्ठेशकी दृष्टि जिस पर पड़ती हो, षष्ठेशका सम्बन्ध जिससे हो और षष्ठेश जिसके नवांशमें है इन सब पर विचार करना ही रोगका ज्ञान करना है। षष्ठेश जिस राशिमें हो उस राशिके अधिकारकी व्याधिको देता है। यदि वहां विरोधी कोई सौम्य दृष्टि नहीं है तो लग्नेश और षष्ठेश का सम्बन्ध है या नहीं, यदि है तो कैसा है? सूर्यसे बल शरीरका सङ्गठन और चन्द्रमासे मनकी मस्तिष्क सम्बन्धी विशेषताको जानना चाहिये। सूर्य छठे घरमें है और शनि की दृष्टि है तो शरीरकी शक्तिको क्षीण करता है, अप्राकृतिक संभोग हस्तमैथुन आदि भी इसी योगसे होते हैं। अब आगे योग द्वारा पाठकोंको समझाया जाता है, कारण कि इस विषय पर एक स्वतन्त्र पुस्तक भी लिखी जाय तो भी यह विषय उसमें नहीं आसकता। फिर इस एक छोटेसे लेखमें कैसे सारा विषय आसकता है, फिर भी आवश्यक विषय पाठकोंके लिये प्रदान करता हूँ, उसे अपने अनुभव द्वारा जांच करे तो अवश्य ही सफलता मिलेगी।

(१) रिपुस्थानमें पापग्रह हो और कोई भी शुभग्रहकी दृष्टि न हो तो वह प्राणी सतत रोग ग्रसित रहेगा।

(२) उदररोग अपेण्डीसाईटीज (अंत्रपुच्छ) का होना कन्यामें सूर्य और चन्द्र हों।

(३) सूर्य चन्द्र परस्पर सप्तममें हो और मङ्गलका दृष्टि सम्बन्ध या सहवास सम्बन्ध हो तो अचानक घटनाका होना सूचित करता है अपनी दशामें।

(४) कर्क राशि छठे या आठवें घरमें हो और शनि मङ्गल देखता हो, चन्द्रमा क्रूराक्रान्त और षष्ठेश अष्टमेशसे सम्बन्ध करता हो तो उसे उन ग्रहोंके दशान्तरमें केनसर रोग होगा।

(५) केतु और मङ्गल हरनियाके अधिकारी हैं, जब किसीकी कुण्डलीमें केतु और मङ्गल युक्त होवें और ६। ८ के स्वामियोंसे सम्बन्धित हो तब ही उनकी दशामें 'अण्ड वृद्धि' हरनिया रोग होता है।

(६) उपदंश (गरमी) इसका अधिपति शुक्र है। यदि शुक्रछठे घरका स्वामी हो और छठे घरमें बैठा हो, यदि छठा घर कन्या राशिका हो और वह पाप ग्रहोंसे आक्रांत हो तो उपदंश होता है।

(७) पाण्डूराग द्वितीयेश और चन्द्रमा पाप ग्रहोंसे आक्रांत हो या षष्ठेशसे सम्बन्धित हो, यदि चन्द्रमा षष्ठेश है और द्वितीयेश या द्वितीयस्थान षष्ठेशसे सम्बन्धित हो, तब पाण्डु रोग होता है।

(८) गुरु कन्यामें हो और पाप ग्रह या षष्ठेशसे देखा जाता हो तो अतिसार रोग होता है।

(९) अंत्रविकृति सूर्यके ६ घरमें होने से होती है, जब कि शनिकी दृष्टि होवे। तथा वीर्य रोग या अप्राकृतिक मैथुन आदि की प्रवृत्ति भी करता है।

(१०) मङ्गल तुलामें हो शुक्रसे देखा जाय और शनिसे भी दृष्ट हो तो चर्म रोग होते हैं।

(११) मंगल, शुक्र, लग्नको देखें और छठे घरमें पाप ग्रह हों, उसे पापग्रह देखते हों तो जीर्णबद्धकोष्ठकी व्याधि होनी चाहिये।

(१२) चन्द्रमा मेषमें शनिसे आक्रांत हो और मङ्गलका चन्द्रमासे कोई सम्बन्ध हो तो कुष्ठ रोग होता है।

(१३) मङ्गल शुक्र सप्तममें हों, पाप ग्रहोंसे देखे जाते हों तो अण्डकोषोंमें शोथ होती है।

(१४) शनि मङ्गल १२। २ में हो चन्द्रमा लग्नमें हो, सप्तममें सूर्य हो तो श्वेतकुष्ठ होता है।

(१५) चन्द्रमा, शनि और मङ्गलके बीचमें हो, सूर्य मकरमें हो तो उसे निमोनिया, श्वास, होवे।

(१६) सूर्य चन्द्र दोनो अपने अपने स्थान अन्योऽन्य रूपसे बदल लें राशि या नवांशमें तो उसे क्षय होता है।

(१७) निर्बल चन्द्रमा शनिके साथ व्ययस्थ हो तो पागलपन उत्पन्न करता है।

(१८) शनि छठे घरमें हो,पांचवां घर पापग्रहसे देखा जाता हो तो उसके असंख्य व्याधियां होती हैं।

(१९) चन्द्रमा, सूर्य, मङ्गल, सप्तममें हों, शुभ ग्रहकी दृष्टि न हो तो वह दन्तरोगी होता है।

(२०) षष्ठेश नीचका होकर सहज स्थानमें पापी ग्रहों के साथ और बुधसे सम्बन्ध रखता हो, या स्वयं बुध हो तो उसके दांत जल्दी ही खराब हो जाते हैं।

विशेष विचार और अनेक अनुभूत योग 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंको आगामी अङ्कोंमें भेंट करेंगे।

ग्रह—नक्षत्रोंका—

मानव देह पर प्रत्यक्ष-प्रभाव

रत्नोंकी विज्ञानसिद्ध उपयोगिता और धारणविधि

[लेखक—श्री रेवाशङ्कर जी शास्त्री, देलवाड़ाकर]

बृहत्संहिताकार आचार्यप्रवर वराहमिहिरने लिखा है कि 'बल' नामक राक्षसके शरीरसे इन रत्नोंकी उत्पत्ति हुई है, कुछ लोग दधीचिकी हड्डियों से रत्नोंका जन्म बतलाते हैं और कुछ लोगोंका कहना है कि, पृथ्वीके स्वाभाविक धर्म प्रभावसे ही पाषाणोंमें विचित्रिता और चमत्कारके दर्शन होते हैं।

रत्नानि बलाद्दैत्यात् दधीचितोऽन्ये वदन्ति जातानि।
केचिद्भुवः स्वभावाद् वैचित्र्यं प्राहुरुपलानाम्॥
—'वाराहीसंहिता'।

इसी प्रकार अग्निपुराणमें लिखा है कि—"दधीचिकी अस्थियोंका वज्र निर्माण करते समय जो उनके सूक्ष्म खण्ड भूमि पर गिरे, उनसे हीरेकी चार खानियां उत्पन्न हुईं। किसी पुराणका मत है कि 'बल' नामक एक दैत्य था, उसकी भावना पाशव थी। देवी जी ने उसका वध किया और उसके अवयवोंसे विविध रत्नोंकी उत्पत्ति हुई। गरुड़पुराणमें कहा गया है कि बल दैत्यकी अस्थियां जहां जाकर गिरीं, वहां हीरे उत्पन्न हुए थे।

ग्रह और उनके रत्न

१—सूर्यका नग माणिक है। इसे पद्मराग, चुन्नी या लालमणि कहा जाता है। यह रत्न 'बल' दैत्यके रक्तसे उत्पन्न हुआ है। अतः इसका रङ्गलाल होता है। इस दैत्यका रक्त सूर्यकिरणसे शुष्क होकर आकाशमें उड़ा करता था। उसे रावणने सिंहल द्वीपमें रोक कर एक नदीके तट पर अवस्थित सुपारीके वृक्षपर डाला, तब से उस नदीका नाम भी रावण गङ्गा पड़ा और उसमें पद्मराग, माणिक उत्पन्न होने लगे। सिंहलद्वीप लङ्काके माणिक बहुत ही उत्तम कोटिके होते हैं। वे रक्त रोगनाशक और रक्तवर्द्धक हैं। उसे जप, पूजा, पाठ द्वारा प्रभावशाली बनाकर सविधि धारण करनेसे सूर्यकी पीड़ा दूर होती है और सूर्य आरोग्यप्रदानके साथ-साथ धन-धान्यादि में भी वृद्धि करता है।

२—चन्द्रका रत्न मोती है। 'बल' दैत्यके दन्त की पंक्ति आकाशमें उड़ते हुये समुद्रादि स्थानोंमें पड़ी और सीपके सम्पर्कमें आकर मोतीका रूप धारण कर लिया। यह मोती सीपके अतिरिक्त हाथी, बादल, सुअर, मछली, सर्प और बांसमें भी उत्पन्न होते हैं, किन्तु इन सभी जातियोंमें सीपका मोती उत्तम माना जाता है। इस सम्बन्धमें रघुकुमार काव्यकी टीकामें एक श्लोक है—

द्विपेन्द्राजीमूत वराह शंख,
मत्स्यादिशुक्त्युद्भव वेणुजानि।
मुक्ताफलानि प्रथितानि लोके,
तेषां च शुक्त्युद्भवमेव भूरि॥

यह मोती श्वेत, काले, नीले पीले आदि अनेक रंगके होते हैं। उन्हें मुक्ताफल भी कहा जाता है। अनबेधा, श्वेत रङ्गका, पानीदार गोल दानेका मोती पहननेसे चन्द्र सम्बन्धी पीड़ा तथा पायरिया आदि रोगोंका नाश होता है। आजकल कल्चर मोती देखनेमें सुन्दर तो दिखाई देते हैं किन्तु उनकी परीक्षा करनेमें अच्छे २ जौहरी भी चकरा जाते हैं, अतः कलचर मोती न पहिन कर सच्चे मोती ही

पहनना चाहिये। आधुनिक सुधरे हुए समयकी स्त्रियां इस कृत्रिम (बनावटी) कलचर मोतियोंसे ही विभूषित होती हैं। और अपनेको धनवानकी पत्नी होनेके गर्वसे बोझिल बनाकर दूसरे पर झूठा प्रभाव डालते हुए अपने नकली पानीका परिचय देती हैं। इमीटेशन नग कभी सच्चा होता ही नहीं, चाहे वह मनुष्य हो या मोती। मोतीके वजन करनेकी रीति उसके चावोंकी गणना आदिसे भिन्न होती है। सच्चे मोतीमें अनेकशः 'पुड़' होते हैं, नकलीमें एक या दो होते हैं।

३—मंगलका रत्न विद्रुम, लतामणि या प्रवालके नामसे पुकारा जाता है। यह रत्न 'बल' दैत्यकी अन्तड़ियोंसे उत्पन्न हुआ है और उड़कर केरल आदि देशों तथा सागर तटपर पड़नेसे वह प्रवाल रूपमें परिवर्तित हो गया। प्रवालका रङ्ग लाल कुन्दुरू या सिंदूरके समान होता है। इस गोल चिकने त्रिकोणाकार, चमकदार किसी भी आकारके रत्नके सविधि धारण करनेसे मंगलकी पीड़ा दूर होती है। जिसके मंगल अशुभ स्थानमें हो, सन्तान न होती हो या होकर मर जाती हो, उसे मंगल सम्बन्धी यह प्रवाल रत्न जपादि करके सविधि पहनना आवश्यक है। स्त्रीको रक्तविकार हो, मंगलकी बाधा हो और सन्तान जीवित न रहती हों, तो मंगलवारका व्रत २१ मंगलवार तक लालवस्त्र पहन,गेहूं,घी,गुड़ खाते हुये ब्रह्मचर्य पालनपूर्वक ब्राह्मण द्वारा या स्वयं मङ्गल की पूजा-अर्चा कर कराके भक्तिभावके साथ यह रत्न पहना जाय तो स्त्रीका रक्तविकार दूर होकर सन्तान की उत्पत्ति होती है और सौभाग्य बढ़ता है।

४—बुधका रत्न पन्ना है। इसे मरकत-मणि, हरितमणि या तृणकान्ति भी कहा जाता है। जिस प्रकार माणिकचन्द, हीरालाल, मोतीराम, पुखराज आदि मनुष्योंके नाम हैं, उसी प्रकार पन्नाचन्द या पन्नालालके नामधारी भी विद्यमान हैं। पन्नेका रङ्ग सूक्ष्म हरा होता है। जितना अधिक स्वच्छ पन्ना हो, उतना ही अधिक उसका मूल्य होता है। यह रत्न बहुत ही रांक और नरम होता है। बल दैत्य के पित्तको लेकर वासुकी सर्प आकाश मार्गमें चला जा रहा था। मार्गमें गरुड़ने उस पर आक्रमण किया, जिससे उसे तुरुष्ककी कलियोंसे सुगन्धित माणिक्य पर्वतकी तराईमें उस पित्तको छोड़ देना पड़ा, इस पित्तसे पन्नाकी खानी बन गई। मैंने किसी काव्यमें पढ़ा है कि यह पन्ना किसी पर्वत पर बादलोंकी गर्जना होने पर घासकी तरह नीले अंकुरोंके रूपमें वर्षाकालमें उत्पन्न होता है। पित्त-प्रकोपका रोगी और जिसके लिये बुध बाधक हो, या जिसे बुधकी दशा हो, वह—यदि इस रत्नको सोने में जड़ाकर पहने, तो सुख सम्पत्ति और वैभवकी प्राप्ति होती है।

५—गुरुका रत्न पुष्पराग या पुखराज है। यह दो प्रकार का होता है—श्वेत और पीत। पीले रंग का होने से उसे पीतमणि भी कहा जाता है। स्वर्ण जैसे पीत रंग या चमक वाले निर्दोष पुखराजके धारण करनेसे वैभवमें वृद्धि होती है। उद्योग-व्यवसायमें अभ्युदयके आकांक्षी व्यक्तियोंके पथमें यदि गुरु बाधक हो या गुरुका दशा हो, तो जपादिसे प्रभावशाली बनाकर पीला पुखराज पहनना चाहिये। कालिमा व्यञ्जक या झांईवाला रत्न नहीं पहनना चाहिये। बल दैत्यकी त्वचा उड़कर हिमालयमें पड़ी, जिससे वहां पुखराजकी खानि बन गई। पुखराजके धारण करने से १८ प्रकार के कोढ़ आदि चर्म रोग नष्ट होते हैं।

६—शुक्रका रत्न हीरा है। यह हीरे चार प्रकार के होते हैं—श्वेत, लाल, पीला और काला, इनमें श्वेत हीरा सर्वार्थ सिद्धदायक कहा जाता है, बेदाग श्वेत स्वच्छ हीरा शुक्रकी पीड़ाको दूर कर मान-मर्यादाकी रक्षा करता है, जब कि दोष पूर्ण हीरा मनुष्यको कहींका नहीं रखता। बल दैत्यकी अस्थियां जहां पड़ीं, उसी प्रदेशमें आंखको आंज देनेवाली खानियोंका उद्भव हुआ, कहा जाता है, कि यह हीरा काले विलायती कोयलेकी खानिसे निकलता है, जिस प्रकार डामरसे सेकेरिनकी उत्पत्ति होती

है। ईश्वरीय लीला अपरम्पार है। इस हीरेको धारण करनेसे हड्डीके रोग नष्ट होते हैं। कितने ही लोगोंका कथन है, कि हीरा विषाक्त होता है, अमुक व्यक्ति हीरेकी कनी चाट कर मर गया। किन्तु यह बात तत्काल गले उतरने—विश्वास करने—योग्य नहीं। इस सम्बन्धमें किसी बहुज्ञ व्यक्ति द्वारा प्रकाश डाला जाये, तो बहुत उपकार होगा। यह हीरेकी जाति बहुत कठोर होती है। 'प्लेटो' नाम्नी सोनेसे भी अधिक मूल्यवान् और कठोर धातुके साथ उसका संयोजन किया जाता है। हीरा भी यदि बिना पानीका एबियल हो, तो निकम्मा—महत्व हीन है। कुछ रोगोंके लिये इन रत्नोंकी भस्मोंके प्रयोगका वर्णन भी 'शार्ङ्ग धर' आदि वैद्यक ग्रन्थोंमें किया गया है, जिनमें हीरा अस्थिरोग और मोती नेत्रोंकी ज्योति बढ़ानेके लिये सुरमेके रूपमें व्यवहृत किया जाता है। कांच काटनेमें हीरेकी कनी जो काम करती है, वह अन्य रत्न नहीं करता। यदि यह कनी कच्ची खाई गई हो, तो वह कांचकी बुक्नीकी तरह मनुष्यकी अन्तड़ियोंको चीर कर उसे मार डालती है। अतः यदि कोई रत्न की भस्मका व्यवहार करे, तो अनुभवी वैद्य द्वारा प्रस्तुत भस्मका व्यवहार करे, अन्यथा वह अन्तड़ियों और हड्डियोंको चीरकर मृत्युका कारण बन सकती है।

७—शनिका रत्न नीलम या नीलमणि है। बल दैत्यके नेत्र उछल कर समुद्र तटवर्ती जिस स्थल पर गिरे, वहां यह इन्द्रनील-मणि उत्पन्न हुई। यह मणि नेत्र रोगोंके लिये बड़ी उपकारक है। जिन्हें शनिकी दशा हो या जिन्हें शनि तबाह कर रहा हो, उन्हें शनिकी भक्ति रखते हुए तत्सम्बन्धी सच्चा रत्न खोजकर जपादि कराकर बायें हाथमें पहनना चाहिये। इससे शनिकी अमृतमयी दृष्टि रहती है और वह बहुत ही कम पीड़ा देता है। अशुद्ध नीलम का नग पहननेसे लाभके बदले हानि होती है। इस नगकी परीक्षा ४० दिन तक पास रखकर करनी चाहिये। लाभदायक सिद्ध होने पर ही उसे जड़ा कर और जपादिसे पवित्र बनाकर धारण करना चाहिये। यदि ४० दिनमें हानिके लक्षण प्रतीत हों, तो उसे वापिस या दानके रूपमें दे देना चाहिये। शनि प्रसन्न होने पर मालामाल कर देता है और रुष्ट होने पर पामाल। शनिने अपने गुरुको भी दुःख देनेसे नहीं छोड़ा; फिर हमारी कोई गणना ही नहीं। अतः शनिका नग पहनने के लिये उतावली नहीं करनी चाहिये; बल्कि सावधानीके साथ परीक्षा करनेके बाद ही उसका प्रयोग करना लाभदायक होगा। बहुतेरे लोग जपादि किये बिना ही रत्न धारण करते हैं, जिससे लाभालाभका कोई प्रमाण नहीं मिलता। कुछ लोग, विधिपूर्वक जप-पूजादि करते हैं; किन्तु पहनते नहीं; यह भी ठीक नहीं। नगको इस प्रकार मढ़ाकर पहने, जिससे वह चमड़ी का स्पर्श करे अथवा किसी भी प्रकार शरीरके किसी भी भागके संस्पर्शमें हो। इसमें ज्योतिषशास्त्रके अनुसार एक दूसरेके शत्रु ग्रहोंके रत्नोंका एक साथ संयोगकर पहनना नहीं चाहिये। जैसे शनि तथा राहुके नगको-माणिक और पुखराजके साथ संयुक्त किया न जाये। मोतीको गोमेदके साथ नहीं जड़ाना चाहिये; क्योंकि कोई ग्रह ब्राह्मण है, तो कोई चाण्डाल; अतः यह दोनों एकत्र नहीं होने चाहिये; यह सब विद्वान् ज्योतिषी भली भांति समझ सकता है, अतएव विद्वान् ज्योतिषीसे सलाह लेकर ही उनका उपयोग करना चाहिये।

★

एक ऐतिहासिक भूल

क्या शबरी शूद्रा थी ?

[ले०— श्री दीनानाथ शर्मा शास्त्री सारस्वत विद्यावागीश, विद्याभूषण, विद्यानिधि]

आजकल 'शबरी'के विषयमें एक भारी भ्रम फैला हुआ है कि वह शूद्रा थी। अस्पृश्योद्धारके इस युगमें तो इस बातको खूब बढ़ा-चढ़ा कर वर्णित किया जाता है, परन्तु हमारा विश्वास है कि—यह धारणा भ्रान्तिमूलक है, इस असत्प्रचारमें मूल कारण कुछ पुराने भक्तोंकी एतद्विषयक सूक्तियां भी हैं। तथा दूसरा कारण शबरी का स्वयं नाम भी हैं। 'शबरी' भीलनीको कहते हैं। भिल्ल जातिको अन्त्यजोंमें गिना जाता है। तब शबरी शूद्रा थी ऐसा सन्देह स्वाभाविक है। पर वह शूद्रा थी या नहीं इस बातके निर्णयके लिए उसका मूल इतिहास ढूंढना पड़ेगा। शबरीका श्रीरामसे घनिष्ठ सम्बन्ध है, तब शबरीकी वास्तविकताको जाननेके लिए पहले हमें श्रीराम का इतिहास जांचना पड़ेगा। श्रीरामके इतिहासका प्राचीन ग्रन्थ 'श्रीवाल्मीकिरामायण' है, यह सर्ववादिसम्मत सिद्धान्त है। शेष रामचरित्रप्रतिपादक सभी ग्रन्थ इसी (वाल्मीकि रामायण) के उपजीवक हैं। उनमें यदि वाल्मीकिरामायणसे विरुद्धता पाई जाए तो उन ग्रन्थोंके वे विरुद्ध अंश माननीय नहीं होंगे। आज हम भी उसी रामायणके आधार पर शबरीका शूद्रत्व निराकृत करेंगे, विद्वान् पाठकोंका अवधान इधर प्रार्थनीय है।

वाल्मीकिरामायणमें राघववंशके राज्यका वर्णन आता है, उसमें हमें मिलता है कि—उसमें अधर्म अर्थात् धर्मविरुद्ध व्यवहार प्रचलित नहीं था। सभी वर्ण अपने-अपने धर्ममें शास्त्रप्रोक्त स्वकर्माचरणमें निरत थे। इधर रामायणके चरित्रनायक श्रीराम मनुस्मृतिप्रोक्त धर्मके पक्षपाती थे — यह बात बालि वधके समय कहे हुए श्रीरामके रामायणस्थ वचनोंसे सूचित होती है। इधर श्रीरामने किससे किस कारण प्रेम किया, किसको किस कारण मारा—यह भी श्रीरामायणद्वारा अनुसंहित करना पड़ेगा, तब हम जाकर शबरीके विषयमें विश्वस्त निर्णय करनेके अधिकारी हो सकेंगे। आइये पाठकगण ! इस कसौटीको अपनाइये, तब आपको इस सुवर्णके खरे-खोटे होनेका स्वयं ज्ञान हो जायगा।

श्रीराम मर्यादापुरुषोत्तम थे, यह विश्वविश्रुत है। मर्यादा तोड़ने वालेको वे वध दण्ड भी दे देते थे—चाहे वह सर्वपूज्य ब्राह्मण ही क्यों न हो, अथवा अवध्या स्त्री ही क्यों न हो—यह भी एक प्रसिद्ध बात है 'हन्त्येष (श्रीरामः) नियमाद् वध्यान् अवध्येषु न कुप्यति' (वाल्मी० २।२।४६) रावणको श्रीरामने क्यों मारा; वह तो ब्राह्मण था- चतुर्वेद वित् था ? इसलिए कि उसने ब्राह्मणत्वकी मर्यादा तोड़ रक्खी थी। ताड़का स्त्रीको क्यों मारा; शूर्पणखा नामक स्त्रीके नाक कान क्यों कटवाये ? इसलिए कि इन्होंने भी धर्म-मर्यादा तोड़ रक्खी थी। आततायी को दण्ड देकर श्रीरामने—

"गुरुं वा बालवृद्धौ वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुतम्। आततायिनमायान्तं हन्यादेवा विचारयन्' (८।३५०)

इस मनुप्रोक्त सिद्धान्तको अर्घ्य दिया।

उसी मर्यादापुरुषोत्तमने शम्बूक शूद्रको क्यों मारा, वह तो तपस्यामें लगा था, जिसका विवरण उत्तरकाण्डके अतिरिक्त 'श्रूयते शम्बुके शूद्रे हते ब्राह्मणदारकः' जीवितो धर्ममासाद्य रामात् सत्यपराक्रमात्'
(महाभारतशान्तिपर्व १५३।६७)

इत्यादि ग्रन्थोंमें भी आवृत्त हुआ है। श्रीरामने उसे इस लिए मारा कि शूद्र होते हुए उसने शास्त्र विरुद्ध तपस्या की जिससे एक ब्राह्मणका बालक मर गया। शूद्रका त्रैवर्णिक सेवाके अतिरिक्त तपस्यामें अधिकार किसी धर्म शास्त्रमें नहीं बताया गया है। श्रीरामकी उपजीव्य मनुस्मृतिमें स्पष्ट कहा है—**एकमेवतु शूद्रस्य**

प्रभुः कर्म समादिशत्। एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषामनसूयया' (१।९१) और 'मनुस्मृति' में भी 'तपः शूद्रस्य सेवनम्' (११।२३५) सेवासे भिन्न शूद्रकी तपस्या नहीं मानी गई। 'तस्मात् शास्त्रं प्रमाणं ते' (१६।२४) की घोषणा करने वाली 'श्रीभगवद्गीता' ने भी शूद्रों के लिए स्पष्ट कहा है—

'परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम्' (१८।४४)

यहां पर भी शूद्रका कर्म सेवा कहा है। तपस्या तो ब्राह्मणका कर्म कहा है—

'शमो दमस्तपः शौचं ब्रह्मकर्म स्वभावजम्' (१८।४२)
पर कर्मके आचरण के लिये वहां कहा है—
'स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः' (३।३५)

स्वयं 'रामायण' ने भी शूद्रोंका कर्म सेवा लिखा है—
'शूद्राः स्वकर्मनिरतास्त्रीन् वर्णानुपचारिणः' (१।५।१६)

'मनुस्मृतिमें' अपने धर्ममें न रहनेवाले शूद्रके लिए देखिये क्या लिखा है—

'वैश्य शूद्रौ प्रयत्नेन स्वानि कर्माणि कारयेत्।
तौ हि च्युतौ स्वकर्मभ्यः क्षोभयेतामिदं जगत् ८।४१८

अर्थात्-राजाको चाहिए कि शूद्रोंसे अपने कर्मोंको कराये, वे जरा अपने कर्मसे फिसले कि जगत् में उथल-पुथल हुई। 'मनुस्मृति' राजाके द्वारा शासन करनेमें क्या कहती है यह भी देखिये—

'नाऽदण्ड्यो नाम राज्ञोऽस्ति यः स्वधर्मे न तिष्ठति' ८।३३५
'तान् सर्वान् घातयेद्राजा शूद्रांश्च द्विजलिङ्गिनः' ९।२२४

जब इस प्रकार स्वधर्म-विरुद्ध आचरण करने वाले शूद्रका वध धर्मशास्त्र सम्मत है, तब उस धर्मशास्त्रके पक्षपाती श्रीरामने वैसे शम्बूकका वध कर जहां शास्त्रीय व्यवहार किया, वहां राजकीय-नियमका भी ठीक-ठीक पालन किया।

इससे स्पष्ट है कि मनुस्मृतिकी मर्यादानुसार चलने-वाले श्रीराम शूद्रकी तपस्याको नहीं सह सकते थे। पर उन्होंने शबरीसे तपस्याकी वृद्धि पूछी है। देखिये—

'कच्चित्ते वर्धते तपः आहारश्च तपोधने !' (३।७४।८।९)

यहां उसे तपोधन बताया है। यदि शबरी शूद्रा होती तो उसे तपोधन वा 'तापसी' (३।७४।१०।) न कहा जाता प्रकृत स्थलमें शबरीके 'धर्मचारिणी' 'धर्मनिपुणा' (१।१।५६) 'सिद्धा' 'धर्मसंस्थिता' (३।७४।६-७) आदि विशेषण आये हैं। यदि वह शूद्रा और तपस्विनी होती तो उसे 'धर्मनिपुणा' न कह कर 'धर्मानभिज्ञा' कहना चाहिए था। जैसे शम्बूक शूद्रके तपस्या करने से ब्राह्मण कुमारकी मृत्यु बताई है, वैसे ही शूद्रा शबरीकी तपस्या करने पर भी अधर्म होनेसे तत्फलस्वरूप किसीकी अकाल मृत्यु बतानी चाहिए थी। पर जब नहीं बताई गई; तब स्पष्ट है कि वह शूद्रा नहीं थी; किन्तु ब्राह्मणी थी। पूर्वोक्त भगवद्गीताके पद्य (१८।४२) में तपस्या ब्राह्मणका कर्म बताया गया है।

अन्य उपपत्ति यह है कि-शबरीको 'श्रमणी' ३।७३।२६, १।१।५६ कहा गया है। श्रमणाका अर्थ है 'संन्यासिनी'। संन्यासाश्रमका अधिकार ब्राह्मणको ही होता है। जैसेकि—'मनुस्मृति' में कहा है—

ब्राह्मणः प्रव्रजेद् गृहात्' (६।३८)।

'विष्णुस्मृति' में कहा है—
'पारिव्रज्याश्रमप्राप्तिर्ब्राह्मणस्त्रै चोदिता' (५'१३)

'वैखानसगृह्यसूत्र' में कहा है—
'ब्राह्मणस्याश्रमा श्चत्वारः' (११।१।१०) क्षत्रियस्याद्यास्त्रयः (११) वैश्यस्य आद्यौ, (१२)।

यहां पर शूद्रको किसी आश्रम का वैध विधान नहीं कहा है। 'शुक्रनीति' में कहाहै—

'चत्वार आश्रमश्चैते ब्राह्मणस्य सदैव हि।
अन्येषामन्त्यहीनाश्च क्षत्रविट् शूद्रकर्मणाम्, (४।३४०)
'वर्तयन्स्योन्यथा दण्डया या वर्णाश्रमजातयः (४।३४२)

यहां तो स्पष्ट ही शूद्रादिको संन्यासाश्रम लेने पर दण्ड विधान कहाहै। तब स्पष्टहै कि-संयासिनी शबरी शूद्रा नहीं थी।

पहले कहा जा चुका है कि-श्रीरामका व्यवहार 'मनुस्मृति' के अनुसार था, जैसे कि-उन्होंने बालीको स्वयं कहा था—

'श्रूयते मनुना गीतौ श्लोकौ चारित्रवत्सलौ।
गृहीतौ धर्मकुशलैः तथातच्चरितं मया (४।१८।३०)

रामायणमें मनुस्मृतिके कहे हुए वे दोनों पद्य 'मनुस्मृति' में यथास्थान मिलते हैं। कीजिये दोनोंकी

तुलना (वाल्मी० ४।१८।३०।३१।३२, मनु० ८।३१६-३१८)। शबरीको यदि भिल्ल जातिकी माना जाय, तो वह शूद्रवर्णकी भी नहीं रहेगी, किन्तु अन्त्यज मान जायगी। 'व्यासस्मृति' (१।१२-१३) में भिल्लको अन्त्यजों में गिना गया है। 'अमरकोष' (२।१०।२०) में भी 'शबर'को चाण्डाल के भेदोंमें बताया गया है। 'स्त्रीशूद्रहूणशबरा अपि पापजीवाः' (२।७।४६) इस श्रीमद्भागवतके पद्य में 'शबर' को शूद्र' से पृथक गृहीत किया गया है। यह ठीक भी है, क्योंकि शूद्र 'वर्ण' है, शबर 'अवर्ण' है। जब इस प्रकार 'शबर' चाण्डाल सिद्ध हुआ; तब यह जानना पड़ेगा कि 'मनुस्मृति' चाण्डालको स्पृश्य मानती है या अस्पृश्य? उसमें कहा है—

दिवाकीर्तिमुदक्यां च पतितं सूतिकां तथा।
शवं तत्स्पृष्टिनं चैव स्पृष्ट्वा स्नानेन शुध्यति (५।८५)

यहां पर चाण्डाल (दिवाकीर्ति) को अस्पृश्य कहा है। तब मनुस्मृत्यनुसारी मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामने उस चाण्डालीको अपना पांव क्यों छूने दिया? क्यों उसका जल स्वीकार किया? जब किया है, तो स्पष्ट है कि—वह शबर जातिकी नहीं थी, किन्तु श्रीराम-भक्त ब्राह्मणी थी।

इस पर कहा जा सकता है कि-'जब श्रीरामने' निषाद गुहका आलिङ्गन किया और निषाद चाण्डालको कहते हैं, तब चाण्डाली शबरी भी उनका चरणस्पर्श कर सकतीहै।' इस पर यह जानना चाहिए कि निषाद दो प्रकार का होता है। एक अनुलोमज, दूसरा प्रतिलोमज। प्रतिलोमज निषाद तो चाण्डाल एवं अस्पृश्य होता हैं, पर अनुलोमज निषाद वैसा नहीं। अनुलोमज निषादका दूसरा नाम पारशव होता है, देखिये 'मनुस्मृति'

'निषादः शूद्रकन्यायां यः पारशव उच्यते' (१०।८)

यह अनुलोमज निषाद दाश (कैवर्त) का उत्पादक होता है, देखिये—मनुस्मृति (१०।३४)। 'मनुस्मृति' के अनुसार उसके बाल बच्चे नौकर्म जीवी होते हैं। इस लिये 'रामायण' में भी उनका काम नौकाओंका चलाना दिखलाया गया है। यदि वह निषाद चाण्डाल होता, तो 'मनुस्मृति' के अनुसार—

'अबान्धवं शवं चैव निर्हरेयुरिति स्थितिः' (१०।५५)

'बध्यांश्च हन्युः सततं यथाशास्त्रं नृपाज्ञया' (१०।५६)

इस प्रकार निःस्वामिक मुर्दोंका उठाना कर्म होता, पर रामायणके निषादके ये कर्म नहीं बताये गये, किन्तु नौजीवन ही कर्म बताया है। इसलिए वह चाण्डाल भी नहीं हो सकता। 'मनुस्मृति' के अनुसार आचार वाले श्रीराम निषाद गुहके चाण्डाल होने पर उनके साथ स्पर्श न करते। इससे स्पष्ट है कि—रामायणीय निषाद अनुलोमज है, प्रतिलोमज नहीं। इस लिए वह स्पृश्य है। पर शबरी यदि चाण्डाली है तो मर्यादापुरुषोत्तम राम प्रतिलोमज होनेसे उसका स्पर्श स्वीकृत न करते। यदि किया है तो वह चाण्डाली नहीं; किन्तु तपस्विनी ब्राह्मणी थी, यह सिद्ध हो गया।

अनुलोमज होनेसे स्पृश्य होने पर भी शूद्र सधर्मा होने से निषादसे श्रीरामने कोई वस्तु नहीं ली बल्कि—

अस्ति चैतन्मूलफलं निषादैः स्वयमर्जितम्'
(वाल्मी० २।८४।१७)

यह उसकी फलादि सामग्री भी नहीं ली। मित्रताके नातेसे केवल इतना कह दिया कि—

'यत् त्विदं भवता किञ्चित्-प्रीत्या समुपकल्पितम्।
'सर्वं तदनु जानामि नहि वर्ते प्रतिग्रहे' (२।५०।४३)।

बल्कि जल भी उससे न लेकर लक्ष्मणका लाया ही पिया—

ततश्चीरोत्तरासङ्गः सन्ध्यामन्वास्य पश्चिमाम्।
जलमेवाददे भोज्यं लक्ष्मणेनाहृतं स्वयम् (२।५०।४८)

पर शबरीका आचमन भी स्वीकार किया; वन्यफल भी स्वीकृत किये। इससे स्पष्ट है कि—वह चाण्डाली नहीं थी; किन्तु रामभक्ता ब्राह्मणी थी। जब श्रीरामने सवर्ण शम्बूक शूद्रको भी 'दण्डेनैव तमप्योपेत् स्वकाद् धर्मोद्धि विच्युतम' (मनु० ६।२७३) तपस्या करनेसे दण्डित किया; तब अवर्ण शबरीको (यदि वह भिलनी है) स्वधर्म विरुद्ध आचरण करनेपर बिना दण्डके क्यों छोड़ दिया? स्त्री होनेका व्याज व्यर्थ है—स्मरण कीजिये इस पर ताटका एवं शूर्पणखाको। बिना दण्ड दिये शबरीको तपस्यासे स्वर्ग देनेसे सिद्ध होता है कि वह ब्राह्मणी थी।

पाठकोंको यह भी स्मरण रखना चाहिए कि—शबरी

यह उसकी जाति नहीं थी; किन्तु यह नाम था। जैसे कि 'मृच्छकटिक' के प्रणेताका 'शूद्रक' यह नाम था, जाति नहीं। रामायणके पात्र शबरीके गुरुका 'मतङ्ग' यह भी नाम था, जाति नहीं। 'मीमांसादर्शन' के भाष्यकार 'शबराचार्य' का जैसा यह नाम था, जाति नहीं। वैसे ही 'शबरी' यह भी उसका नाम था, जाति नहीं। तभी 'वाल्मीकिरामायण' में भी 'श्रमणी शबरी नाम काकुत्स्थ ! चिरजीविनी' (३।७३।२६) इस स्थलमें उसका 'शबरी' यह 'नाम' आया है, जाति नहीं। रामायणमें 'निषाद' यह जाति नाम है, किन्तु उसका अपना नाम 'गुह' बताया है। यदि 'शबरी' यह जातिनाम अभीष्ट होता, तो रामायणकार उसका अपना नाम भी अवश्य बताते; क्योंकि—जातिनाम केवल देनेकी रामायणकारकी शैली नहीं।

शेष प्रश्न यह रह जाता है कि—शबरीको यदि वह ब्राह्मणी है; तो उसे कहीं-कहीं 'हीनजाति समुत्पन्ना' 'अधमजाति' 'अधमजन्म' 'जातिहीन' 'हीनजन्मा' 'अधमजन्मा' आदि क्यों कहा है ? इस पर उत्तर यह है कि—स्त्रीजाति पुरुषजातिकी अपेक्षा हीनजाति मानी गयी है; क्योंकि—पाप करनेसे ही पुरुष दूसरे जन्ममें स्त्री बनता है। तभी तो गोस्वामी तुलसीदासको भी स्त्रीजातिकी हीनता बतानेके लिए शबरीके मुखसे—

'अधमते अधम, अधम अति नारी

यह कहलाना पड़ा। उसे (स्त्रीको) यज्ञोपवीतका अधिकार भी नहीं। इसी लिए ही उसे कहीं शूद्रा, कहीं शूद्रसदृशी तथा हीनजाति कहा जाता है—

'येपि स्युः पापयोनयः स्त्रियोवैश्यास्तथा शूद्राः;
(गीता ९।३२)

यहांपर स्त्रीको पापयोनियों अथवा निकृष्टोंमें रखा गया है।

स्त्रीशूद्रहूणशबरा अपि पापजीवाः (भा० २।७।४६)

यहां स्त्रीकी भी पापजीवोंमें गणना की गई है। स्त्रीका शूद्रोंसे साहचर्य तो प्रायः—शास्त्रोंमें आता ही है। तब शबरीके लिए प्रयुक्त 'अधमजन्मा' आदिका समाधान तो हो गया। यह वेदसिद्ध भी है। कृष्णयजुर्वेदमें कहा है—

तस्मात् स्त्रियो निरिन्द्रिया अदायादीरपि पायात् पुंस उपस्तितरं वदन्ति (तै०सं० ६।५।८।२)

तब ब्राह्मणी पक्षमें भी उसे 'अधमजन्मा' आदि कहा जा सकता है। शबरीके लिए प्रयुक्त 'श्रमजीवी' शब्द भी उसे शूद्र सिद्ध करनेमें समर्थ नहीं; क्योंकि—श्रमः तपसि खेदे च' इस कोषके प्रमाणसे, तथा 'श्रमु तपसि खेदे च' इस दिवादिगणीय धातु पाठमें कहे हुए अर्थे विशेषसे 'श्रमजीविनी' का 'तपस्विनी' अर्थमें पर्यवस्थान हो जाता है। इसीका अन्य पर्याय 'श्रमणी' भी प्रसिद्ध है।

इस प्रकार रामचरितप्रतिपादक प्राचीन ग्रन्थ 'श्रीवाल्मीकिरामायणके अनुसार 'शबरी' यह उसका नाम सिद्ध हुआ; तदनुसार वह ब्राह्मणी सिद्ध हुई, शूद्रा नहीं। तदनुसार ही अर्वाचीन इतिहासोंमें भी शबरी विषयक इतिहासों को रामायणानुकूल ही समन्वित करना है। 'भक्तमाल' आदि अर्वाचीन ग्रन्थोंमें तो शूद्रोंमें भी भक्तिभावको फैलाने के उद्देश्यसे कई प्राचीन भक्तोंको प्राचीन ग्रन्थोंके विरुद्ध चाण्डाल कह डाला है ! श्री वाल्मीकिको भी उसमें चाण्डाल कह दिया गया है जो कि रामायणसे विरुद्ध है। इस प्रकार अजामिलको भी शूद्र बताया गया है; जबकि यह श्रीमद्भागवतसे विरुद्ध है। उक्तग्रन्थ भक्तिमार्गके हैं। भक्तिके अर्थवादस्वरूप वहां भगवद्भक्त अन्त्यजोंका भी उच्छिष्ट द्विजोंको भी खिलाया गयाहै; जबकि यह धर्म शास्त्रोंसे विरुद्ध है। अतः इस विषयमें उन ग्रन्थोंका अव्याहत प्रमाण भी नहीं है। फलतः 'शबरी शूद्रा थी' यह बात रामचरित्रके सब ग्रन्थोंके उपजीव्य श्रीवाल्मीकि रामायणसे विरुद्ध है; अतः माननीय नहीं। इस पर विद्वानों को अवश्य विचार करना चाहिए। इस कसौटीसे उन्हें इस सोनेके खरे-खोटे होनेका पता लग सकेगा।

लगे हाथ श्रीराम द्वारा शबरीके जूठे फल खाने पर भी विचार किया जाता है। भक्तोंकी सूक्तिमें प्रसिद्ध है—'जैसे तुम भीलनीके जूठे बेर खाये हो'। इस विषयमें यह जानना चाहिए कि वाल्मीकि रामायणमें तो बेरोंका नाम ही नहीं हैं। वहां पर तो—

'मया तु संचितं बन्यं विविधं पुरुषर्षभ !
तवार्थे पुरुषव्याघ्र ! पम्पायास्तीरसम्भवम्' (३।७४।१७)

यह कहा है। उच्छिष्टकी तो यहां गन्ध भी नहीं है।

वेर तो आजकल मुसलमानोंसे भी ले लिये जाते हैं। 'अध्यात्मरामायण'में भी उच्छिष्टका गन्ध नहीं है, देखिये—

संगृहीतानि दिव्यानि रामार्थं शबरी मुदा।
फलान्यमृतकल्पानि ददौ रामाय भक्तितः

कई लोग—

फलानि च सुपक्वानि मूलानि मधुराणि च।
स्वयमासाद्य माधुर्यं परीक्ष्य परिभक्ष्य च॥
पश्चान्निवेदयामास राघवाभ्यां दृढ़व्रता।
फलान्यास्वाद्यकाकुत्स्थस्तस्यै मुक्तिं परां ददौ॥

इस 'पद्मपुराण'के वचनसे अपने पक्षकी पुष्टि देखते हैं। इसमें शबरी द्वारा फलोंका स्वयं खाना तथा माधुर्यकी परीक्षा करना कहा है। पर यहां पर जानना चाहिए कि यहां पर उच्छिष्टका गन्ध भी नहीं है। किसी आम बेर आदिके वृक्षके फलोंके खट्टापन वा मिठास जाननेका प्रकार यह है कि स्थालीपुलाक न्यायसे उस उस वृक्षका एक फल खाना पड़ता है, उसीसे ही उन-उन वृक्षोंके अन्य सब फलोंका खट्टापन वा मिठास मालूम पड़ जाता है। शबरीने भी इसी प्रकार परीक्षा की। तब यहां उच्छिष्टता कैसी? हमें भयानक गर्मीमें अतिथिविशेषकी ठंडे जलसे सेवा करनी है। हमारे पास पांच छः कुंए हैं। क्रम क्रमसे हम उन कुओंसे जल निकाल कर स्वयं पीते हैं और जांच करते हैं कि—किस कुएंका जल अधिक शीतल है। जिस कुएंका जल बहुत शीतल सिद्ध होता है, वही जल अतिथिओंको उपहृत किया जाता है। पर इससे वह जल जूठा नहीं कहा जा सकता।

इस प्रकार जब सब वृक्षोंके एक एक फलके खानेसे उन का मिठास जानकर अन्य फल किसीको दिये जाएं; वहां पर उन अन्य फलोंकी उच्छिष्टताका अवसर ही उपस्थित नहीं होता। आधा स्वयं खाकर आधा श्रीरामके लिए रखना माना जाए; तो यह नहीं हो सकता। क्योंकि वैसा फल शीघ्र विकृत हो जाता है और सूख भी जाता है। इसी प्रकार "कन्दमूल फल सरस अति दिये राम कंह आनि। प्रेम सहित प्रभु खायउ बार हि बार बखानि"॥ तुलसीरामायण' के अरण्यकाण्डस्थित इस दोहेमें भी उच्छिष्टताका गन्ध नहीं। इस प्रकार अन्य ग्रन्थोंमें भी जानना चाहिए। तब वादियोंका मत सर्वथा उच्छिन्न होगया।

तेजी मंदी

वायदा-व्यापार

[लेखक—श्री स० अ० रानडे, बी० ए० (आनर्स), बी० टी०, एडवोकेट]

[यदि पाठक प्रस्तुत विषय से सम्बन्धित अपनी कठिनाइयां और शंकाएँ उपस्थित करें तो उनका समुचित उत्तर 'श्रीस्वाध्याय' में प्रकाशित किया जायगा। —सम्पादक]

वायदा-बाजार और वायदेके धन्धेका नाम लेते ही कितने ही लोग चौंक उठते हैं। मामूली मनुष्य तो 'वायदा, और "सट्टा" शब्द सुनते ही घबरा जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि वे लोग अधिकतर उन्हीं लोगोंके बारे में सुनते रहते हैं, जो अपना सारा पैसा वायदा-बाजारमें गंवा कर कङ्गाल हो गए हैं।

कङ्गाल होनेके अनेक कारण हो सकते हैं

यद्यपि उक्त धारणा कुछ अंश तक सही है, परन्तु बहुतांशमें गलत भी है। केवल एक सट्टे में ही पैसा हाथसे नहीं निकलता, तैयार मालका नकद लेन-देन करने वाले व्यापारियोंको भी कई बार हानि उठानी पड़ती है। अधिक सूदकी आशासे दूसरोंको कर्ज देने वाले साहूकार भी कभी कभी अपनी पूंजी खो बैठते हैं। सरकारी ऋणपत्र (Government Securities) मे पैसा लगाने वालों को बहुत कम सूद मिलता है। और यह भी एक तरहसे अप्रत्यक्ष रूपमें सूदका नुकसान ही है। इस तरह अन्दाज या हिसाबमें गलती हो जाने पर अथवा अन्य कारणोंसे भी आर्थिक हानि हो सकती है. फिर केवल सट्टे से ही घबराने की क्या आवश्यकता है? गत महायुद्धके बाद भयङ्कर मन्दी छागई थी और खानदेश-बरारके किसान कङ्गाल होगये थे। उन्होंने तो सट्टा नहीं लगाया था? फिर वे क्यों कङ्गाल बन गये?

वायदे-बाजारोंका कार्य

कपास, अलसी, अरण्डी आदि फसलें हर साल पकती हैं। उनके पकनेका मौसम भी निश्चित होता है। बुआईके बाद से लेकर कटाई तकके चार-छः महीनोंमें किसानको काफी खर्च उठाना पड़ता है। प्रायः किशान यह खर्च साहूकारसे रुपया कर्ज लेकर ही पूरा करता है। इस कर्जेके बदलेमें साहूकारको गाहनीके बाद अनाज देना पड़ता है। यदि भाव अच्छा रहा तो अपने हिसाबसे वह कुछ अनाज बेच भी सकता है। ऐसे ही समय वायदे-बाजारका उपयोग होता है।

कभी कभी कई लोग माल तैयार होते ही उसे न बेच कर कोठोंमें भर कर रख देते हैं और आगे चल कर जब भाव तेज हो जाते हैं, बेच डालते हैं। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो माल तैयार होनेके पहले ही उसे खरीद लेते हैं, परन्तु माल चाहते हैं आगे निर्धारित समय पर। ऐसे लोगोंके लिए भी वायदा बाजार सुविधाजनक होता है, क्यों कि वायदे बाजारमें माल कब मिलेगा, यह पहले ही तय हो जाता है। वायदे-बाजारकी इस सुविधाके कारण माल उचित समय पर मिलता है और बीचकी अवधिमें माल कोठोंमें भर कर रखने की झंझट नहीं उठानी पड़ती।

मान लीजिये, आपकी एक कपड़े या तेलकी मिल है। आप अपने गोदाममें माल भरकर नहीं रखना चाहते, ऐसे समय पर आप फरवरीमें ही जुलाईके वायदे पर माल खरीद लेते हैं; जो फरवरीमें तय हुई कीमत के अनुसार जुलाईमें रकम अदा कर देने पर आपको जुलाईमें मिल जाता है। इस बीच होनेवाले भावोंके हेरफेरका आपके सौदे पर कोई असर नहीं होगा। इसके विपरीत जुलाईमें माल देनेकी हैसियत रखने वाले व्यापारी भी इसी तरीकेसे माल बेच सकते हैं। इसीको "माल हेज" (Hedge) करना" कहते हैं। रुई—बाजार में यही "हेज करार" (Hedge Contract) शब्द हमेशा सुनाई पड़ता है। इस प्रकार वायदेके व्यापारमें एक निश्चित

अवधिके पश्चात् माल देना अथवा मालकी डिलीवरी देना या लेना ही मुख्य कार्य होता है। उदाहरणार्थ मईके महीने में रुईका आगामी जनवरीका वायदा खुला। यद्यपि मईमें कपासकी बोनी नहीं होती और न वर्षा ही होती है, तथापि खेती-बाड़ीके आगामी कामों तथा अड़चनोंका अनुमान लगा कर रुईके आगामी जनवरी-वायदेके सौदे रुई-बाजारमें होने लगते हैं। इसमें अपने किये सौदेके अनुसार तुरन्त ही माल या पैसा देना नहीं पड़ता, परन्तु बाजारके नियमानुसार प्रति-माह एक बार हिसाब होता है और उस समय यदि मुनाफा हो तो मिल जाता है और घाटा हुआ तो पूरा कर देना पड़ता है। हाजिर या तैयारी माल "हेज" कर लेने पर भी उसकी कीमत तुरन्त आपको नहीं मिलती, वायदेकी मुद्दत पूरी होने तक आपको रुकना पड़ेगा। वायदे बाजार के भावोंका हेरफेर इस तरह प्रत्यक्ष माल देनेके समयकी परिस्थितिका अनुमान लगा कर भी होता है।

वायदेके व्यवहारका एक उदाहरण

रुई, अलसी, अरण्डी आदि कच्चे मालके प्रायः दो वायदे होते हैं—(१) कुआँर और (२) वैशाख। मान लीजिए, इस समय ज्येष्ठका महीना है और रुईका कुंआर वायदा शुरू है। बम्बईके बड़े रुई बाजारमें कम से कम ५० गठानों अर्थात् २५ खण्डीका धन्धा चलता है (२ गठानें —१ खण्डी)। आपने १०० गठान या ५० खण्डी रुई कुआंर वायदेमें खरीदी, जिसका भाव प्रति खण्डी ४१०) रु० है। इसका मतलब यह हुआ कि आपकों इस भावमें १०० गठान माल कुआंरमें मिल सकेगा। यदि आप डिलीवरी ही लेने वाले हैं तो फिर आपके लिए दूसरी बात सोचनेकी आवश्यकता ही नहीं रह जाती, क्योंकि वायदेके सौदेमें अन्त में कोई-न-कोई माल प्रत्यक्ष लेता और कोई-न-कोई प्रत्यक्ष बेचता है। दूसरे शब्दोंमें हम यह कह सकते हैं कि एक निश्चित अवधिके बाद प्रत्यक्ष माल लेने-देनेके करारको ही वायदा कहते हैं। इस से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वायदेमें मालका प्रत्यक्ष लेन-देन नहीं होता, वह केवल एक तरहका जुआ है—यह धारणा क़रीब-क़रीब गलत ही है।

वायदे-बाजार कैसे चलते हैं?

उक्त उदाहरणमें हम कल्पना कर लें कि ५० खंडी रुई खरीदकर आप चुपचाप बैठ गये। यदि इस तरह प्रत्येक व्यापारी खरीद या बिक्री कर चुपचाप बैठा रहे तो वायदे बाजारमें कोई विशेष हेरफेर नहीं हो सकता; परन्तु वायदेके व्यापारमें ऐसा नहीं होता। लेने या बेचने वाला प्रत्येक व्यक्ति प्रायः डिलिवरीकी आशासे न माल लेता है और न बेचता है, वह सिर्फ बीचमें मुनाफा खाने की इच्छासे वायदा करता है और बीच-बीचमें बाजारका रुख़ देखते हुए सौदा 'बराबर' करता रहता है। अपनी खरीद बेचना अथवा बिक्री खरीदना ही "सौदा बराबर करना" कहलाता है। उक्त उदाहरणमें आपने ५० खंडी ४१० रु० प्रति खंडीके भावमें खरीदी हैं, उन्हें किसी भी भावमें बेच देने पर सौदा 'बराबर' हो जाता है। बिक्रीका भाव ४१० रु० से जितना कम—ज्यादा होगा उसी हिसाबसे प्रतिखंडी आपको घाटा होगा या मुनाफा मिलेगा। यदि आप चुपचाप बैठे रहे तो अवधि पूरी होने के बाद पैसा भरने पर आपको माल मिल जायगा।

यद्यपि वायदेमें डिलिवरी मिल सकती है; परन्तु शायद ही ऐसा कभी होता हो। लगभग ६६ प्रतिशत लोग वायदे-बाजारमें खरीद-बिक्री करनेके लिये घूमते फिरते रहते हैं। यह तो सभी जानते हैं कि इनमेंसे माल खरीदने वाले न तो प्रत्यक्ष माल लेते हैं और न बेचने वाले प्रत्यक्ष माल देते हैं। वे डिलिवरीकी तारीखके पहले ही अपने सौदे बराबर कर डालते हैं अर्थात् जो मुनाफा या घाटा होता है उसे लेकर या भरकर छुट्टी पाते हैं।

हाजर मालके व्यवहारमें माल भरना, नगद रकम देना, मालकी खराबी न हो इस दृष्टिसे देख भाल करना आदि झंझटें रहती हैं। इसके विपरीत वायदेमें ये झंझटें नहीं रहतीं। इसलिये वायदेमें ही अधिक धन्धा चलता है। उक्त उदाहरणमें हाजर मालकी ५० खंडी ४१० रु० के भावमें खरीदनेके लिये लगभग २१ हजार रुपये नगद देना पड़ेगा। पर ४१० रु० का वायदा लेकर यदि वह दूसरे दिन ४०० रु० कटा तो केवल ५०० रु० नुकसान भर देनेसे ही काम चल जाता है।

इसका परिणाम यह होता है कि लोगोंमें वायदे बाजारमें बड़ा धन्धा करनेका झूठा आकर्षण पैदा हो

जाता है और इससे वे कभी कभी बुरी तरह मुंहकी खाते हैं। २०,००० रु०की पूंजी वाला व्यापारी तैयार अर्थात् हाजर माल अधिक-से-अधिक १०० गठानोंका धन्धा कर सकेगा; परन्तु वायदेमें वही १००० गठानोंका धन्धा आसानी से कर सकता है। इससे अनभिज्ञ और दुःसाहस करने वालोंको गहरी चोट खानी पड़ती है। इस तरह लाखों रुपया हाथसे खोकर कंगाल होने वाले लोगोंके कतिपय उदाहरण पाये जाते हैं और सट्टेका व्यापार बदनाम होता है।

वायदे-बाजारकी हलचल

वायदे-बाजारका स्वरूप ही कुछ ऐसा है कि वहां प्रतिदिन भाव घटते-बढ़ते रहते हैं। कई अफवाहें, समाचार अथवा बाजारके खास व्यापारियोंकी खरीद-बिक्री आदि बातें वायदे-बाजारमें बहुत बड़ी उथल-पुथल करनेमें कारणीभूत होती हैं। उक्त कारणोंमेंसे किसी भी एक कारणके अभावमें यदि बाजार अधिक दिनों तक टंडा रहे तो तेजी वाले और मन्दीवाले ऊब जाते हैं तथा अपने सौदे 'बराबर' कर डालते हैं। फलतः बाजारमें हेरफेर होता रहता है।

वायदे-बाजारमें खरीद-बिक्री करने वालोंको चार-छः मास बादकी संभाव्य परिस्थितिका विचार करना पड़ता है। हाजर माल पर तत्कालीन परिस्थितिका असर पड़ता है। यही कारण है कि हाजर और वायदेके भावोंमें कभी कभी अत्यधिक अन्तर दिखाई देता है, इससे वायदे बाजारमें भविष्य कालीन स्थितिकी प्रतिध्वनि तुरन्त सुनाई देती है।

इन सब कारणोंसे वायदा-बाजार चक्रव्यूह-सा भले ही जान पड़ता हो; किन्तु उसका यथार्थ स्वरूप, हाजर माल का व्यापार करने वालोंके लिये सुविधा करना तथा हफ्तों हफ्तोंमें (Instalments) मालकी खरीद-बिक्री करने वालोंको सहायता पहुंचाना ही है। इन सहूलियतोंका दुरुपयोग कर अनभिज्ञ और मूर्ख लोग लाखों रुपये हाथसे खो बैठते हैं तथा धूर्त और चालाक काफी रकम पैदा कर लखपति बन बैठते हैं; भला इसके लिये कोई क्या करेगा? ऐसा कहा जाता है कि ९५ प्रतिशत लोग हानि उठाते हैं और केवल ५ प्रतिशत लोगोंको ही लाभ होता है। यद्यपि ये सभी बातें सच हैं तो भी भारतके प्रायः सभी धनवान व्यापारी वायदे-बाजारमें धन्धा करते ही हैं; कारण यह है कि वहां अल्प कालमें लखपति बननेका अवसर मिल जाता है।

सामान्य व्यवहारमें भी वायदा मौजूद रहता है

हम अपने प्रतिदिनके व्यवहारमें भी प्रायः वायदे बाजारकी तर्क प्रणालीसे काम लेते रहते हैं। अन्न-वितरण-व्यवस्था (राशनिंग) शुरु होनेकी अफवाह उड़ते ही हजारों धनिकोंने शक्कर, चावल, गेहूँ, कोयला, मिट्टीका तेल खरीद खरीद कर अपने कोठोंमें भरकर रखा था। कई लोग साल भरका घी, तेल आदि उस समय खरीद कर रख लेते हैं, जब कि वह आसानीसे व सस्ते भाव पर मिल जाता है। यह सब करते समय लोगोंका यही एक दृष्टिकोण होता है कि आगे चलकर बढ़े हुए भावमें माल न खरीदना पड़े और इस प्रकार वे फायदे में रहें। जीवन में सफलता पानेके लिये भी यह दृष्टिकोण आवश्यक होता है। हम यह नहीं चाहते कि सभी पाठक वायदेका धन्धा अपनावें, परन्तु सामान्य व्यापारीको भी इस धन्धेसे परिचित रहना आवश्यक है। उसे इसका ज्ञान हो,उसका वह सदुपयोग करे, वायदे सम्बन्धी उसकी गलत धारणाएं दूर हों और नित्यप्रतिके जीवनमें भी वे व्यापारिक दृष्टिकोणसे काम लेना सीखें आदि बातोंको सोचकर ही प्रस्तुत लेख पाठकोंकी भेंट किया जा रहा है। स्मरण रहे वायदा बाजार केवल भारतमें ही नहीं, अपितु न्यूयार्क, लन्दन आदि बड़े बड़े विदेशीय नगरोंमें भी बहुत बडे पैमाने पर चलते हैं।

वायदा-बाजारके कायदे

बाजारका नियम, रीति रिवाज आदि पहलेसे ही निश्चित रहतेहैं। धन्धेमें प्रवेश करनेके पूर्व इन सबका अच्छी तरह अध्ययन कर लेना आवश्यक है। उदाहरणार्थ बम्बईके रुई बाजारमें "जरीला' करार (Contract) जरीला नामसे पहिचानी जानेवाली बढ़िया रुई देनेका वायदा होता है. परन्तु प्रत्यक्ष मालकी डिलिवरी देते समय थोडी हलकी रुई देनेसे भी काम चल जाता है दूसरी ओर इस समय बंधा हुआ भाव कम से कम ४३० रु० और अधिक से अधिक ५२० रु० है। इस कारण यह करार

'मन्दी' का समझा जाता है। उदाहरणार्थ जनवरी डिलिवरी के समय भाव ४७५ रु. है और मई डिलिवरीका भाव ४६५ रु. है। मान लिजिये आपने जनवरी वायदा ४६५ में बेच दिया। उसीको आपने १० रु. घाटा उठाकर ४७५ रु. में खरीद लिया और अगामी मई वायदा ४८५ रु. को बेचा तो डिलिवरी के समय मई वायदा ४७० रु. का होने की ही अधिक सम्भावना है क्यों कि उच्चतम भाव (Ceiling price) ५३० रु. और निम्नतर भाव (Floor price) ४३० रु. के बंधे हुए हैं। ५३० रु.का भाव सबसे ऊंचा होने से ५०० रु से अधिक भाव चढ़ना साधारणत: सम्भव नहीं है, क्योंकि खरीददार कुछ मुनाफे की आशासे ही माल खरीदता है।

वायदे-बाजारकी कुछ परिभाषाएं

वायदे-बाजारमें चलनेवाले कुछ पारिभाषिक 'टेकनिकल' शब्दोंका यहां स्पष्टीकरण करना आवश्यक है। लेख में आगे भी यथासंभव इन शब्दोंका स्पष्टीकरण किया गया है। इससे वायदे बाजारकी स्पष्ट जानकारी होनेमें सुविधा होगी। यदि पाठक कुछ अन्य शब्दोंका स्पष्टीकरण करवाना चाहें अथवा कुछ शंकाओं का निराकरण करवाना चाहें तो इस पत्र द्वारा उनका अवश्य ही हल किया जावेगा।

बदला करना— इसको अंग्रेजीमें "Carry forward Transaction" कहते हैं। उक्त उदाहरण में जनवरी वायदा खरीद कर मई वायदा बेचना एक तरह से 'बदला' ही है।

रुई और अलसीका भाव पांच वर्ष पूर्व ५ : ६ था। परन्तु आज उनका अनुपात १३ : १८ है। जिस अनुपात में अलसीका भाव तेज हुआ उसी अनुपातमें रुईका भाव नहीं बढा। इस परसे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि रुईका भाव बढ़ना चाहिये और अलसीका भाव घटना चाहिये। ऐसे समय यदि आप रुई खरीदते हैं और असली बेचते हैं तो इसे भी "बदला" करना ही कहते हैं!

कुछ कारणोंसे एक ही वस्तुका भाव एक बाजारमें कम आता है और दूसरे बाजारमें अधिक। ऐसा फर्क पड़ने पर आप एक जगह माल खरीदते हैं और दूसरी जगह बेचते हैं। उदाहरणार्थ—अरण्डी का सट्टा जारी है और बम्बईमें डिलिवरीके लिये अभी दो महीने बाकी हैं। साथ ही माल लाने लेजाने के लिये माल डिब्बे (वैगन) नहीं मिलते। अतः बम्बईमें भाव मजबूत २०) रु० है। इसके विपरीत गुजरात में माल की डिलिवरी चालू है और माल की अधिकता होने से भाव १६) रु० है। मान लीजिये आपने यह अनुमान लगाया कि माल डिब्बे (वैगन) शीघ्र ही मिल जाएंगे। अतः आप बम्बईमें माल डालते हैं और अहमदाबादमें खरीदते हैं। यह भी "बदला"ही कहलावेगा।

सौदा 'बराबर' करना (Jobbing) कई लोग प्रति-दिन अपने सौदे बराबर कर लेते हैं। इससे धन्धेमें कुछ विशेष हानि नहीं होती और लाभ भी मर्यादित होता है।

वायदे बाजारमें दो दल होते हैं—तेजीवाले (Bulls) और मन्दीवाले (Bears)। तेजीवाले वे कहलाते हैं जो यह समझते हैं कि चालू भाव बढ़ेंगे और मन्दीवाले वे कहलाते हैं, जो यह समझते हैं कि भाव घटेंगे। ऐसा नहीं हैकि एक बार एक दलमें शामिल हो जाने पर वह व्यापार सदा उसी दलमें रहता है। मतलब यह है कि ये दोनों पक्ष स्थायी पक्ष (Watertight) नहीं हैं। तेजीवाले कभी मन्दीवालों में शामिल हो जाते हैं और कभी मन्दीवाले तेजीवालों में शामिल हो जाते हैं।

उदाहरणार्थ आज सोना ८६)रु० है और कल ९०) रु० हो गया तो ८६) रु० के तेजीवालोंका मन्दीमें चला जाना अधिक सम्भव है। ८६) रु० के मन्दीवाले प्रायः मन्दीमें ही टिके रहेंगे। इसके विपरीत ८६ का भाव ८३) रु० हो जाने पर तेजीवालोंका मन्दी में जाना सम्भव होगा।

तेजी मन्दी (Options) लगाना और खाना भारतीय वायदे बाजारों की एक विशेषता है।

निरी सट्टेबाजी न करें
वायदे-बाजारका नियमबद्ध अध्ययन कर लाभ का व्यवहार कीजिये

वायदेका व्यापार करनेकी इच्छा रखने वाले लोगों को चाहिये कि वे वायदे-बाजारोंके नियमोंका सूक्ष्म अध्ययन करें। जिस वस्तुका वायदा करना हो उसके सम्बन्धमें जानकारी प्राप्त करें। उदाहरणार्थ—रुई लीजिये। कपास की फसलका अन्दाज, भारतीय मिलोंकी परिस्थिति, शेष माल (Balance), अन्य वस्तुओंके भाव, मालका निर्यात, बाजारका रुख, बड़े व्यापारी और उनकी नीति, डिलिवरी जिस जगह लेना है उस जगहकी परिस्थिति आदि का सूक्ष्म अध्ययन किया जाना बहुत ही आवश्यक है। आप उक्त बातोंका जितना ठीक अनुमान कर सकेंगे उतना ही अधिक मुनाफा मिलनेकी सम्भावना रहेगी। अतः टाइम्स, स्टेटस्मेन आदि बड़े समाचारपत्रोंकी वाणिज्य व्यवसाय, विदेशी व्यापार सम्बन्धी खबरें और टिप्पणियां हमेशा पढ़ते रहिये। 'श्रीस्वाध्याय'में भी प्रतिमास "व्यापारिक हलचलोंकी मासिक समालोचना" इसी दृष्टिसे प्रकाशित करनेका हम आयोजन कर रहे हैं। राजनैतिक घटनाओं और समाचारोंका प्रभाव बाजार पर क्या होता है इसका भी अनुमान लगाते रहना चाहिये। यद्यपि यह सब कष्ट साध्य और लगनका काम है; तथापि आवश्यक है और सफलता मिलना भी सम्भव है। अतः आधुनिक शिक्षितों से यह निवेदन है कि वे संघ-शक्तिके प्रभावको पहिचानें और व्यापारी क्षेत्रमें संगठित होकर अग्रसर होने की चेष्टा करें।

—

जन्मकुण्डलीका वैज्ञानिक रहस्य

[लेखकः—श्री पं० हनुमान शर्माजी ज्योतिर्विद्]

जन्मकुण्डली एक विलक्षण किन्तु सुप्रसिद्ध वस्तु है। ज्योतिषी लोग इसके द्वारा संसारका बड़ा उपकार करते हैं। साथ ही उनको भी पूर्ण लाभ होता है।

किसी सद्गृहस्थके यहां पुत्र उत्पन्न हो तो ज्योतिषी उसकी 'जन्म-कुण्डली' बनाते हैं और भेंटमें गुड़, नारियल तथा रजतमुद्रा प्राप्त करते हैं। कदाचित् किसी धनवान्के हो तो फिर इनको अन्न, धन, वस्त्र और सुवर्ण भी मिलता है।

यह सब होने पर भी यदि उनसे पूछा जाय कि 'जन्म-कुण्डली' क्या है ? और क्यों बनाते हैं ? तो नक्षत्रसूची (सामान्य ज्योतिषी) इसका यथोचित उत्तर नहीं दे सकते, सिद्धान्तवेत्ता दे सकते हैं।

विज्ञानकी दृष्टिसे देखा जाय तो 'जन्मकुण्डली' किसी अंशमें आकाश का प्रतिरूप है। इसमें जो तत्कालका लग्न लगाया जाता है उसमें आकाशके ग्रहोंको उसी स्थानमें स्थापन करते हैं जिसमें वह आकाशमें उस समय स्थित होते हैं। यथा—

तत्कालका आकाशस्थ सूर्य मेषमें हो तो जन्मकुण्डली में भी (लग्न चाहे जो हो) उसे मेषमें ही लगाया जायगा और मेषके भी ३० अंशोंमें वह जिस पर होगा उसको भी स्पष्ट कर लिया जायगा।

इस प्रकार निश्चय कर लेनेके अनन्तर जन्म, वर्ष, मास, दिन, मुहूर्त, प्रश्न और विवाह आदिकी कुण्डलीमें स्थित हुए सूर्यादिकी जाति, अवस्था, स्वभाव और उपस्थिति देखकर उसके अनुसार सभी प्रयोजनका शुभाशुभ कह दिया जाता है। यही जन्मकुण्डली है।

इस विषयमें अधिकांश व्यक्ति यह सन्देह करते हैं कि आकाशमें हजारों कोस ऊपर घूमनेवाले ग्रहोंका प्रभाव भूतलके प्राणी और पदार्थों पर कैसे पड़ सकता है ? इसका साधारण समाधान जन्मकुण्डलीसे हो जाता है।

भारतके त्रिकालदर्शी तत्वज्ञ महर्षियोंने जन्मकुण्डलीके निर्माणमें कुछ ऐसे गूढ़ तत्व गुम्फित किये हैं जिनसे

सूर्यादि गगनगत उपस्थितिका यथावत् प्रतिबिम्ब कुण्डली गत ग्रहोंमें आ जाता है और उससे किसी भी प्राणी या पदार्थोंके भविष्यका शुभाशुभ भलीभांति कहा जा सकता है।

कुण्डलीमें तन्वादि द्वादश भाव होते हैं, उनमें १ तनु, २ धन, ३ भ्राता, ४ सुख, ५ सुत, ६ शत्रु, ७ स्त्री, ८ मृत्यु, ९ धर्म, १० कर्म, ११ आय और १२ व्यय सम्बन्धी प्रयोजनोंका पूरा फल यथाक्रम ज्ञात होता है। विशेषता यह है कि उक्त बारह भावोंमें एक-एक भावसे अनेक-अनेक बातें ज्ञात होती हैं यथा (१) तनुसे शरीरका रूप-रङ्ग, आकार-प्रकार, प्रकृति (स्वभाव) आदर और आरोग्यता आदिका निश्चय होता है। इसी प्रकार अन्य भावोंसे अन्य बातें देखी जाती हैं।

इस विषयमें जो लोग यह सन्देह करते हैं कि 'हजारों कोस ऊंचे ग्रहोंका प्रभाव नीचेके लोगों पर क्यों पड़ सकता है?' इसके लिए प्रत्यक्षमें प्रमाण की आवश्यकता नहीं।

(१) वर्षाकालमें बुध और शुक्रके समीपस्थ हो जानेसे जल बहुत बरसता है और उसी अवसरमें शनि भौम या राहु भौमके एकत्र हो जानेसे वर्षामें कमी हो जाती है। (२) अमावस्याको क्षीण चन्द्रमासे रुष्ट होकर समुद्र दूर चला जाता है और पूर्णिमाके पूर्णचन्द्रका आलिंगन करनेके लिए अपनी उतंग तरङ्गोंसे आकाशमें ऊंचा चढ़ जाता है। (३) ग्रहणके समय गहते हुए सूर्यको गर्भवती स्त्री देख लेता है तो उसका गर्भस्थ बालक विकृतांग हो जाता है।

(४) आकाशके घन-गर्जनसे भूतलके खादमें 'छत्राक' (बुढली या सांपकी छत्री) प्रकट होती है और उसी शब्दके श्रवण मात्रसे या सूर्यके प्रकाश मात्रसे माता और मोतीझराके रोगी मर जाते हैं। (५) हजारों कोस ऊंचे सूर्यकी किरणोंसे आतसी शीशेके द्वारा अग्नि प्रकट होती है, और उसी आतपसे आधा शीशी आराम आ जाता है।

(६) अधिकांश फल फूल और धान्य सूर्यकी आतपसे बढ़ते और विकसित होते हैं और बहुतसे उसीसे नष्ट हो जाते या उनमें रोगकारी कीटाणु उत्पन्न हो जाते हैं। इसी प्रकार कई एक फल फूल और अन्न चन्द्रोदयसे प्रफुल्लित होते और अधिक फल देते हैं।

(७) आकाशमें मनोहर उदय हुए अगस्तके प्रभावसे वर्षा कालकी समाप्ति हो जाती है और कन्यागत सूर्य होते ही शीत प्रारम्भ हो जाता है, जिसके प्रभावसे मनुष्योंकी आरोग्यता और क्षुधा बढ़ जाती है।

(८) शुक्ल द्वितीयाके चन्द्रोदयसे बाजारके विक्रेय पदार्थोंकी महगाई सस्ताईमें अन्तर आ जाता है और संसारके सुख दुःख या शान्ति अशान्तिमें भी अन्तर पड़ जाता है।

(९) वर्षाकालमें रात्रिके समय चन्द्रमाके चारों ओर दिव्य मण्डल होने और उसके मध्यमें एकाधिक तारे दीखनेसे अतिशीघ्र वर्षा आती है और दिनमें सूर्यके चारों ओर वृत्ताकार जलहरी होनेसे वर्षा, तथा मण्डल होनेसे अन्धकार आता है।

(१०) सूर्यके दिव्य दर्शन होते रहनेसे संसारी मनुष्योंके सुख-स्वास्थ्य और सौभाग्य यथाक्रम बढ़ते रहते हैं। बादल कोहरा या घटाटोप आदिके द्वारा उसके १०-५ दिन ढके रहनेसे खेती बाड़ी, पशु पक्षी और मनुष्य अस्वस्थ या हीन सत्व हो जाते हैं।

(११) आकाशमें केतुके उदय होने पर संसारमें अभूत पूर्व अनिष्ट होते हैं और जनतामें दुःख क्लेश और अशान्तिका साम्राज्य हो जाता है और उल्कापातसे तो तत्काल ही घात होना सम्भव है।

(१२) भूतल संलग्न इन्द्र धनुषके स्पर्शसे कंटकादिमें महाविष हो जाता है और मनुष्यके शरीरमें उनके गड़ जानेसे विषकंटक नामका विष्फोटक गुल्म होकर प्राणीके प्राणोंका हरण कर लेता है।

इस प्रकार सैंकड़ों प्रमाण प्रत्यक्ष देखनेमें आते हैं जिनसे आकाशस्थ अतिदूरके ग्रह नक्षत्र वा ताराओंका प्रभाव भूतलके प्रत्येक प्राणी और पदार्थ पर यथायोग्य अवश्य पड़ता है और उससे उनके सुख सौभाग्य और शान्ति का या तो ह्रास हो जाता है या अपूर्व अभिवृद्धि होती है। ऐसी दशामें जन्मकुण्डलसे कहा हुआ फल अवश्य मिलता है यह मानना ही चाहिये।

भविष्यवाणी

[श्री० माननीय चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य भारतीय गवर्नरजनरल महोदय]

[हमारे नये गवर्नर जनरल श्री माननीय चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य महोदय केवल विश्व-विख्यात राजनैतिक नेता ही नहीं, प्रत्युत भारतीय ज्योतिर्विज्ञान पर आस्था रखनेवाले एक कुशल कलाकार भी हैं। आपकी यह 'भविष्य-वाणी' इस दृष्टिसे पठनीय एवं संग्रहणीय है। आशा है पाठकगण अपने प्रथम व अन्तिम भारतीय वायसरायकी इस 'भविष्यवाणी' को बड़ी रुचि व उत्सुकताके साथ पढ़ेंगे।
—सम्पादक]

श्री स्वामीनाथ अय्यर टंडा मण्डल हाई स्कूलमें बारह वर्षसे हेडमास्टर थे। उनका और उनकी पत्नी अखिलाका दाम्पत्य जीवन बड़ा सुख-पूर्ण था। परन्तु अखिलाको एक बातका बड़ा दुःख था कि उसके कोई बच्चा नहीं हुआ।

"तो क्या बात है अखिला! स्कूलमें दो सौ लड़के हैं, ये सब भी तो मेरे ही बच्चे हैं।" हेडमास्टर कह उठते।

"तुम्हारे लिये कोई बात न हो। तुम उन्हें अपने बच्चे समझ सकते हो, किन्तु मैं तो सारे दिन घरमें अकेले पड़ी रहती हूँ, एक स्त्रीके लिए बिना बच्चेका जीवन बिताना बड़ा कठिन होता है"—उनकी पत्नी अखिला उत्तर देती।

समयके साथ अपनी पत्नीकी पुत्र-लालसा बढ़ते देख कर स्वामीनाथने तीर्थ-यात्रा करनेका निश्चय किया। उन्होंने दो महीनेकी छुट्टी ली और दक्षिण पलनि और रामेश्वर ऐसे पवित्र स्थानोंकी यात्रा करते हुए वे मैसूर पहुंचे। वहां उन्होंने पवित्र मनसे एक दो अश्वत्थ (पीपल) वृक्षोंकी परिक्रमा की, जो बांझ स्त्रियोंको पुत्रका सौभाग्य प्रदान करनेके लिये वहां प्रसिद्ध थे।

इसके बाद वे घर लौट आये और अखिलाकी जन्म-पत्री बनाने वाले एक ज्योतिषीने जैसी भविष्यवाणी की थी वह समयानुसार गर्भवती हो गई।

"ज्योतिषशास्त्र गलत नहीं हो सकता"—स्वामीनाथने हर्षसे फूल कर कहा।

अखिलाने कहा—"यह अश्वत्थ वृक्षोंकी पूजाका फल है।"

जो कुछ भी हो उन्होंने निश्चय किया कि बच्चा होनेके बाद फिर हम एक बार पलनि चलेंगे। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि वह शुभ अवसर कब आयेगा।

स्वामीनाथ अय्यरके कुछ मित्रोंने उन्हें सलाह दी कि अब विवाहके बहुत वर्ष बाद गर्भ रहा है अतः आपकी पत्नीकी विशेष रूपसे देखभाल होनी चाहिये। उन्होंने उन्हें अपनी पत्नीको एगमोर जच्चा-बच्चा अस्पतालमें भर्ती करने की सलाह दी। अखिलाकी मां बहुत पहले मर चुकी थी और स्त्रियोंमें केवल उनकी फूफी जीवित थी। आशा थी कि वह अखिलाकी देख-रेख करनेके लिये आ जाएंगी, पर किसी कारणसे वह न आ सकी। तब यही हुआ कि घर पर प्रसव करानेके बजाय अखिलाको अस्पतालमें ही भर्ती करा दिया जाये।

प्रसवमें कोई कष्ट नहीं हुआ। स्वामीनाथके हर्षका ठिकाना न रहा। उन्होंने अस्पतालके डाक्टर और नर्सोंको अच्छे-अच्छे उपहार देनेका निश्चय किया।

बच्चा रातको नौ बजे हुआ था। नियमानुसार नर्स उसे तुरन्त नहलाकर दूसरे दफ्तरमें ले गई। उस दिन लगभग एक ही समयमें तीन बच्चे हुए थे। नर्सें इतने उत्साह और तत्परतामें थीं कि मानो वे ही इन बच्चोंकी मां हों।

अस्पतालमें नियमानुसार जो कुछ हुआ करता है वही इन तीनों बच्चोंके साथ हुआ और इस भयसे कि वे एक दूसरेसे मिल न जांय उनके कूल्हों पर नम्बरके कार्ड बांध दिये गए।

इन तीनों बच्चोंमें से एकका रङ्ग सांवला था। परन्तु दो गोरे थे और उनका रंग और तोल लगभग एक जैसा ही था।

अखिलाके बच्चेको जो नर्स लायी थी वह उसे दूसरी

नर्सोंको सौंपकर चली गई। वैसे तो प्रत्येक बच्चेके आते ही उस पर उसके नम्बरका कार्ड लगा दिया जाता था, परन्तु उस समय नर्सें गप्प लड़ा रहीं थीं, इसलिये वे कार्ड लगाना भूल गयीं और बादमें उनकी समझमें न आया कि अखिला का बचा कौन सा है।

सांवले बच्चेका तो कोई प्रश्न था ही नहीं, दूसरे दोनों बचों पर उन्होंने अपनी समझके अनुसार कार्ड बांध दिये। अखिलाका बचा कुछ अधिक गोरा था, आठवें वार्ड में जो मुसलमान औरत थी, उसका रङ्ग सांवला था, इस लिये उन्होंने सोचा कि सांवला बचा उसीका होगा। जो बचा कुछ ज्यादा गोरा था—उन्होंने अखिलाके पास लिटा दिया इससे कुछ गड़बड़ी नहीं हुई।

'तुम्हारा बचा बड़ा सुन्दर है'—एक फ्रांसीसी नर्सने कहा—"इसका वजन सात पौण्ड है। क्या यह तुम्हारा पहला ही बचा है?"

'जी हाँ'—स्वामीनाथने कहा। बचेकी मां खाट पर पड़ी थी। उसके हृदयकी खुशी उसकी मुस्कराहटमें फूटकर निकल पड़ी। उसके आनन्दका कोई ठिकाना नहीं रहा था। अब उसे पुत्रवती कहलानेका सौभाग्य होगया था और उसके जीवनका उद्देश्य भी बन गया था।

"क्या बचा तन्दुरुस्त और हट्टा कट्टा है?" पिताने पूछा। पिता सदा व्यावहारिक और वैज्ञानिक प्रकृतिके होते हैं।

"आज तीन बचे जन्मे हैं। उन तीनों बचोंमें से यह सबसे अच्छा है'—नर्सने अङ्गरेजीमें कहा, जिसका आशय स्वामीनाथने अखिलाको तामिलमें समझा दिया।

इसी बीचमें वह नर्स जो पहले-पहले बचेको ले गई थीं, वार्डमें आई। उसने बचेको उठा लिया और कुछ देर तक वह उसे खिलाती रही। फिर दोनों नर्सें बाहर चली गयीं। "इस बचेकी ठुड्डीके पास एक तिल था, वह इतनी जल्दी कैसे गायब हो गया?'—पहली नर्सने पूछा।

'क्या तिलवाला बचा इस औरतका था, हमने तो उस पर मुसलमान बचेका नम्बर बांध कर नम्बर आठमें भेज दिया है।' दूसरी नर्सने उत्तर दिया।

'हे भगवन्! अब हमें इस बारेमें चुप रहना चहिए।' पहली नर्स बोली।

'नहीं, यह बहुत बुरी बात है; अगर तुम्हें विश्वास है तो हमें अबसे बचे बदल कर अपनी गलती सुधार लेनी चाहिये।' दूसरी नर्सने आपत्ति करते हुये कहा।' 'तुमतो पागल हो गयी हो'—पहली नर्स बोली—'अब ऐसा करने से गड़बड़ी होगी और हमें अपनी नौकरियोंसे हाथ धोना पड़ेगा। माताओंके दिलोंमें तो फिर भी सन्देह बना ही रहेगा दोनों दुःखी होंगे अब तो चुप रहने में ही भलाई है।'

बारह दिन बाद अब्दुल-तैयबजी की पत्नी और अखिला अपने-अपने घर क्रमशः एण्डर्सन स्ट्रीट और तिरुवल्लिकेण वापिस चली गईं।

दोनों घरोंमें दोनों बचोंका खूब लाड़-प्यारसे लालन पालन हुआ। सेठ तैयबजी के घर धन और आराम बहुत था और स्वामीनाथके घर प्यार और सन्तोष अनन्त। दोनों बचोंकी देख रेखमें किसीने कोई कसर नहीं उठा रखी।

जब स्वामीनाथका बचा वर्ष भरका था तो उसकी मौसी आई। 'बचेकी आंखें तो हमारे भाई मुत्तू स्वामी जैसी हैं, सिर्फ इसकी नाक स्वामीनाथके घर वालोंसे मिलती है।' उसने बचेको देख कर कहा। इससे स्वामीनाथको बड़ा सन्तोष हुआ और माताकी दूनी प्रसन्नता हुई।

सेठ तैयबजीके घरमें भी ऐसा ही हुआ।

सेठ तैयबजी को मरे २२ वर्ष होगये हैं। अब उनका बेटा, जो जन्मसे ही बड़ा चतुर था, अपने पिताके बड़े व्यापारको बड़ी सावधानीसे चला रहा है।

स्वामीनाथका लड़का अश्वत्थनारायण बेहद होशियार करने पर भी स्कूल लाविङ्ग परीक्षासे आगे नहीं बढ़ सका। वह बम्बईमें अपने मित्रोंके यहां गया और वहां ठहर कर उसने इधर-उधर सिफारिश कराने और नौकरी ढूँढनेकी चेष्टाकी, परन्तु अन्तमें असफल होकर लौट आया।

इन सब बातोंका स्वामीनाथ पर गहरा असर पड़ा। ज्योतिषीने जो पत्र लिखकर दिया था, उसमें लिखा था "तुम्हारा बेटा बहुत बड़ा सौदागर होगा, किन्तु अपने माता पिताके किसी काम न आ सकेगा।'

'इसकी तो कोई बात ही नहीं। वह प्रसन्न रहे यही पर्याप्त है। परन्तु उसे तो कहीं सफलता मिलती ही नहीं।

★ विशेष धनवान् योग ★

[लेखक—श्री पं० रामचन्द्रजी शर्मा गौड़ ज्योतिर्विद्]

जिसकी जन्मकुण्डलीमें पंचम, नवम, स्थान और त्रिकोणेश बलवान् होकर लग्नेशसे सम्बन्ध करें तो वे उस पुरुषको धनवान् बनानेमें निश्चयपूर्वक चमत्कार दिखाते हैं। जिस प्रकार त्रिकोणेशका बलाबल, स्थान स्थिति और ग्रहोंकी दृष्टि हो उसी प्रकार धनवान् बनाता है। वृहद् पाराशरीमें बताया है—

"नवमं पंचमं विशेषं धनमुच्यते।"

यह सूत्र महान् चमत्कार पूर्ण है। लग्नेशसे त्रिकोणेशका सम्बन्ध होने पर निश्चयपूर्वक दृढ़ विश्वासके साथ धनी योग कहा जा सकता है। इसी प्रकार ये विशेष धनदायक पंचम नवमके स्वामी (त्रिकोणेश) बिगड़ कर पाप स्थानसे युक्त हो तो निश्चय दरिद्रताका दर्शन बड़े बड़े धनवानोंको भी करा देते हैं।

वास्तवमें नवम (भाग्य) स्थानसे पूर्वपुण्यका ज्ञान होता है, पुण्योदयसे वैभव सुख होता ही है। इसी प्रकार पंचम (बुद्धि) स्थानसे विद्या बुद्धि आदिके द्वारा मनुष्य धनवान् बनता है। इसीलिए जन्म-कुण्डलीमें उक्त दोनों स्थान बहुत महत्वपूर्ण माने गये हैं।

स्व पार्जित धनकी प्राप्तिके लिए त्रिकोणेशका सुधरना परमावश्यक है।

धन-प्राप्तिमें अष्टम धन और लाभ (एकादश) स्थान भी सहायक हैं। अष्टमसे गुप्त तथा मृत्यु पथ द्वारा लाभदायक योग बनता है। लाभ स्थानसे भी मोटा लाभ हो जाता है, धन स्थानसे पूर्वार्जित सम्पत्ति मिल जाती है। परन्तु त्रिकोणेशके सुधरे बिना मोटा लाभ होता ही नहीं, यदि हुआ भी तो ठहरता नहीं। लग्नेशसे सम्बन्ध होने पर निश्चय पूर्वक विशेष धनका सुख होता है।

जब-जब त्रिकोणेश योग कारक या लग्नेशसे सम्बन्धी हों तब-तब उनकी दशा, अन्तर्दशामें अवश्य ही पर्याप्त लाभ होता है। यदि गोचरमें भी धनदायक ग्रह सुधर जावें तब तो बहुत ही देता है। सुधरे हुए त्रिकोणेशकी दृष्टिमें शुभ फलदायक ग्रह हो तो उसकी दशा, अन्तर्दशामें अवश्व धन-लाभ हो जाता है।

विंशोत्तरीदशा

दृक्प्रत्यय निरयनमानके चन्द्र स्पष्ट या केतकी ज्योतिर्गणितादि नवीन सूक्ष्म पद्धतिके नक्षत्रमानसे जो विंशोतरी दशा निकाली जाती है उसीसे फलादेश बराबर सत्य होता है! सायन चन्द्रसे दशाका फल नहीं मिलता यह हमारा अनुभव है।

जिनका जन्म शुक्ल पक्षमें चन्द्र होराके लग्नमें हो और कृष्ण पक्षका जन्म सूर्यहोराके लग्नमें हो तो विंशोत्तरी दशाका फल बराबर मिलता है। विंशोत्तरी दो प्रकारसे है। जिनका जन्म शुल्क पक्षमें सूर्य होरा तथा कृष्ण पक्षमें चद्रहोराका हो उन्हें विंशोतरी कृत्तिकासे नहीं मिलती है। उन्हें आर्द्रा नक्षत्रसे ही मिलेगी। इसके अतिरिक्त विंशोतरी दशामें वर्ष संख्यामें भी घटाना बढ़ाना पड़ेगा। इस सम्बन्ध में फिर लिखूंगा। भारतीय पद्धतिमें दशा–पद्धतिका मुख्य महत्व है। गोचरकी भी आवश्यकता मानी गयी है।

दशाके साथ गोचरका पूर्ण सम्बन्ध है। दशा अनुकूल हो और गोचरभी अनुकूल हो तब विशेष उत्तम फल होता है। इससे विपरीत अशुभ फल समझें। एक शुभ और एक अशुभमें दशाका फल $\frac{1}{3}$ गोचरका $\frac{2}{3}$ फल ही रहता है। विशेष विचार और अपने अनुभव 'श्रीस्वाध्याय' के आगामी अंकोंमें पाठकोंको भेंट करूंगा।

ज्योतिषशास्त्र एक ढकोसला है।' स्वामीनाथने बिगड़ते हुए कहा।

'तुम यह कैसे कह सकते हो कि ज्योतिष-शास्त्र झूठा है? क्या बच्चेका जन्म ठीक ठीक भविष्यवाणीके अनुसार नहीं हुआ? विधाताका लिखा कोई मेट नहीं सकता। कौन जाने अभी क्या होगा और क्या नहीं। उसे किसी चेटियर के यहां काम सीखनेको भेज दो। स्यात् वह व्यापारमें होशियार निकले।' अखिलाने कहा।

चांदी सोनेका भविष्य-ज्ञान

[लेखक—राजवैद्य श्री पं० अमरदत्त मिश्र एल.एम.ए. कोमरशियल एस्ट्रोलोजर]

पश्चिमी सिद्धान्तानुसार चांदीका अधिकारी चंद्रमा और सुवर्णका अधिकारी सूर्य है। कर्क और सिंह राशियां चांदी सोनेको क्रमशः अपने अधिकारमें रखती हैं, किन्तु वराहमिहिराचार्यके सिद्धान्तानुसार मंगलके अधिकारमें सोना Gold और गुरुके अधिकारमें चांदी है। पश्चिमी सिद्धान्तका परीक्षण हो चुका है और इसका अभी हुआ नहीं है। आर्षज्योतिष यामलीय ग्रन्थानुसार भी चांदीका अधिकारी चंद्रमा है और सूर्य सोनेका अधिकारी। अन्य ग्रह भी इस अधिकारमें आते हैं किन्तु जो सर्वबली होता है उस समय उसे ही अधिकारी मानते हैं। परन्तु पश्चिमी सिद्धान्तानुसार इन्हें नैसर्गिक अधिकारी ही माना जाता हैं, हमें चांदी सोनेके भविष्य पर लक्ष्य देना है, किसी बाद-विवादमें नहीं जाना। अतः प्रधान कार्य पर पाठक गण ध्यान देवें।

ग्रहोंकी प्रधान दृष्टियां पाश्चात्य सिद्धान्तानुसार

स्क्वायर चतुर्थ दृष्टि ९० अंशकी।

सेमी स्क्वायर अर्द्ध चतुर्थ दृष्टि ४५ अंशकी।

ट्राइन पञ्चम दृष्टि १२० "डिग्री" अंशकी।

सम्मुख पूर्ण दृष्टि १८० 'डिग्री' अंशकी।

कञ्जक्शन युति जब दो ग्रह राशि अंशमें समान हों तब युति समझें। पेरेलल "समान क्रांतिवृत्त"

चतुर्थ दृष्टि "Square Aspect" दो ग्रह परस्पर में चतुर्थसे देखे जाते हैं जब कि उन दोनों ग्रहोंका अंतर ९० अंशका हो। यथा-शनि कर्कके २४ अंश पर और सूर्य तुलाके २४ अंश पर हो तब ठीक चतुर्थ दृष्टि-योग होता है। सूर्यकी गति शनिसे तीव्र है, अतः सही चतुर्थ दृष्टिके दिनसे ३ दिन पूर्व जब कि ८७ अंश शनिसे दूर रहता है दो दिन पूर्व ८८ अंशों पर, एक दिन पूर्व ८९ अंशों पर-जब सूर्य उस दिन चतुर्थ दृष्टिके योगको कार्यरूपमें परिणत करता है तब समझो कि वह उसकी योगावस्था है Applying Stage" उससे १, २, ३ अंशोंकी अवधि ही में उसका प्रभाव होता हैं।

अर्द्ध चतुर्थ दृष्टि (Semi Square Aspect 45 digrees) यह ४५ अंशोंके अंतरकी दृष्टि है।

पञ्चम दृष्टि (Trine Aspct, 120 digrees) इसका अंतर १२० अंशों का है, जबकि इस दृष्टिमें ११७, ११८, ११९, अंशोंका अन्तर रह जाता है तब जाने कि अब १२० पर सही दृष्टि योग होगा। यह उसकी योगावस्था Applying Stage जब शनि २३ अंशों पर कर्क राशिमें हो और बुध Mercury वृश्चिकके २३ अंशों पर हो तब यह योग होता है। जब शनि और बुधमें अन्तर १२१ अंशोंका हो जाता है तब समझो कि बुध शनिसे पृथक् हो रहा है। १।२।३ अंशों तक समझें।

पूर्णदृष्टि (Opposition Aspect 180 digrees) जब दो ग्रह परस्पर एक दूसरेसे सप्तम हैं तब १८० अंशों पर यह योग होता है। जब १७७ डिग्री पर ग्रह हो तब समझो कि यहांसे योगावस्था पर दृष्टिगत हो गया है। इसे Appplying stage कहते हैं और इसके भीतर ही फल हो जाता है। पुनः पृथक् काल १।२।३ अंशों तक दूसरी अवस्था आजाती है।

युति "Conjuction Aspect जब एक ग्रह दूसरे ग्रहकी ओर जाता है एक राशि अंश कलाओंमें तब युति होती है। गुरु २० अंश कर्कमें है और मंगल जब कर्कके २० अंशों पर आजाता है तब सही युति होती है। गुरुसे शीघ्रगामी मंगल है, जब मंगल कर्कके १८ अंशों पर आता है तब इसे योगावस्था (Applying State समझो। इसी अवस्थासे पूर्णावस्थामें इसका फल होता है।

समान दृष्टि (Parallel Aspect) जब दो ग्रह

एक समान क्रांतिवृत्तमें हों तब उसे समान दृष्टि या पेरेलल कहते हैं।

अब उपरोक्त दृष्टियोंके प्रभावका विवेचन पाठकोंके सम्मुख रखना है जो चांदी सोने पर होगा। इन उपरोक्त दृष्टियोंका प्रभाव ६० प्रतिशत सही होता है, किन्तु चन्द्र और अन्य संबंधित ग्रहोंकी चाल प्रत्येक घण्टेकी गणनानुसार निकाल लें और उसका ध्यान रक्खें। चद्रमा सबसे जल्दी चलनेवाला है, इसका पूर्ण ध्यान रखना चाहिये। यदि उपरोक्त दृष्टियोंसे संबंधित कोई भी ग्रह वक्री होवे तो उसका प्रभाव अल्प होता है। जब दो ग्रहों की परस्पर चतुर्थ दृष्टि योग हो रहा हो तब सोना और चांदीके मूल्यमें वृद्धि होगी, जब तक कि उसकी योगावस्था है। २।३ डिग्री तक। जिस प्रकार वे शीघ्र ही सही दृष्टि योगमें जाते हैं तब सोनेका बाजार उत्तेजित हो जाता है। और जब वे दो ग्रह पृथक् होते हैं सही अंशोंसे तब चांदी सोनेका बाजार तेज होता है और फिर गिर जाता हैं और बाजारका गिरना चालू रहता है जब तक कि उक्त ग्रहोंका अन्तर २ अंशसे अधिक न हो जाये।

अर्ध चतुर्थ दृष्टि फल (Semi Square Aspecteffect)

इस योगमें चांदी सोनेका बाजार उस दिन ही तेज होता है।

पञ्चम दृष्टि 'Trine Aspect' जब दो ग्रहोंका पञ्चम दृष्टि योग होता है तब दो अंश के अंतर से ही चांदी सोनेका भाव गिरने लगता है। यथाशीघ्र जिस प्रकार वे ग्रह सही स्थानपर जाते हैं उस समय तक मूल्य घटता रहता है और जिस प्रकार वे पृथक् होते हैं तबसे दो अंश तक उलटा प्रभाव होता है यानि बाजार उठता है

समान दृष्टि और युतिफल

युति या आपोजीशनका प्रभाव समान ही है—जिस प्रकार चतुर्थ Square दृष्टिका है। गुरु और शुक्र के अतिरिक्त किसी भी ग्रहका जब कभी युति या आपोजीशन हो तो बाजारको गिराता है। उनकी 'Applying Stage' योगावस्थासे दो अंश पूर्व और जब सही स्थानसे पृथक् होता है तब उलटा प्रभाव करता है। दो अंश तक पेरेलल (समान क्रांतिवृत्तमें) Parallel चद्रमा और दूसरे ग्रहोंकी चांदी सोनेके बाजारको गिराती है और अन्य ग्रहोंकी नियमित अवस्थामें गिराती है। उपरोक्त आदेशके आधार पर समान दिन एक पञ्चम दृष्टि। एक अंश योगावस्था (Applying Stage) और दूसरे ग्रहोंकी चतुर्थ Square वह भी १ अंशकी योगावस्था "Applying Stage" में एक योग तो बाजारको गिराता है और दूसरा ऊंचा उठाता हैं तो इस अवस्थामें घटा-बढ़ी होती है। ऐसी अवस्थामें चद्रमाकी अवस्थाको पूर्णतया जांचना चाहिये, क्योंकि ऐसी स्थितिमें चंद्रमा ही उस दिन बाजारका अधिपति है।

लम्बी तेजी मंदी मंदगति ग्रहोंपर निर्भर करती है। क्योंकि यह ग्रह (शनि गुरु राहु यूरेनस) योगावस्थाकी दो डिग्रीको पूरा करनेमें १०।१२ दिन लेलेते हैं। इसलिये यह १०-१२ दिन तेजी चलाते हैं फिर उतने ही समय तक मंदी, क्योंकि पृथक् होनेमें भी उतना ही समय लेते हैं। यूरेनसके साथ अन्य ग्रहोंका दृष्टि संबंध अधिक तेजीको सूचित करता है, क्योंकि यूरेनस एकदम परिवर्तन करने वाला ग्रह है। मंगल ४-७-८ स्थानको देखता है, जब कभी मंगलकी दृष्टि गुरु पर पड़े तब योगावस्थाकी २ डिग्री (Applying Stage) में ही चांदीके बाजारमें गडबड कर देता है। तेजी अवश्य लाता है, खूब घटा बढी करता है।

गुरु ५।६।७ स्थानको देखता है, जब गुरु मंगलको देखता है तब Gold सुवर्णका भाव गिर जाता है।

मंगल और यूरेनसकी युति तथा मंगल और शनिकी युति चांदी सोनेके बाजारमें भयानक होती है। मंगल और यूरेनसको युति सब पदार्थों में भारी परिवर्तन कर देती है। चांदी सोनेमें ही नहीं सभी बायदों पर इसका प्रभाव होताहै, और पुनः इसका लेबलमें आना देरीसे होता है। मंगल और शनिकी युति सब पदार्थों को अधिक नीचे गिरा देतीं है, रुई और चांदी सोनामें भारी क्रांति करती है। विशेष आगामी अंकोंमें लिखेंगे।

★

—ः दन्त रक्षाके पांच मार्मिक नियम ः—

[ले०— कविविनोद वैद्यभूषण श्री पं० ठाकुरदत्तजी शर्म्मा वैद्य आविष्कारक अमृतधारा]

——:०:——

अथर्ववेदका एक मन्त्र है, जिसमें ईश्वरसे यह प्रार्थना की गई है—"हे प्रभो ! मेरा शरीर दन्त सहित रहे"। कृत्रिम दांत निस्संदेह लग जाते हैं, किन्तु प्राकृतिक दांतोंकी तुलना वे नहीं कर सकते। इस लिए यत्न यही करना चाहिये कि दांत असली अर्थात् प्राकृतिक ही स्थित रहें। इस विषयमें कुछ आवश्यक बातें लिखी जाती हैं।

(१) लोग समझते हैं कि दांत दो बार निकलते हैं। वास्तवमें वे तीन बार निकलते हैं। पहले दूध के दांत कहलाते हैं, वे शीघ्र ही गिर जाते हैं और फिर उनकी जगह नये दांत उगते हैं। पहले पहल दांत २० होते हैं, किन्तु बादमें जबड़ा बढ़ जाता है तो ३२ दांत हो जाते हैं। यदि कोई १०० वर्ष तक जीवित रहे तो तीसरी बार पुनः नये दांत निकलने लगते हैं।

दूधके दांत जब निकलते हैं तब ही से उनकी रक्षाकी आवश्यकता है। एक दांतके निकलते ही माताको प्रतिदिन उसे साफ करना चाहिये। और जब बच्चा समझने बूझने लग जाय तो उसे सुझा दिया जाय कि वह अपने दांत सदा साफ रक्खे। जो कुछ खावे उसके बाद दांतोंमें मिठाईके परमाणु न लगे रहें, क्योंकि वे अम्ल होकर दांतोंको खाने लगते हैं। यह ख्याल करना कि इन दांतोंको तो कुछ समयके बाद गिर ही जाना है इसलिए उनकी रक्षा क्यों की जावे, एक भारी भूल है। क्योंकि यह देखा गया है कि इनमें यदि कृमि-दन्तक हो जायें तो अगले दांतोंमें भी यह जल्दी ही हो जाता है। वे यदि भद्दे और खराब हों अथवा हिलते हों तो नये दांत भी वैसे ही हो जाते हैं। यदि दूधके दांत स्वच्छ और सुदृढ़ रखे जावें तो आगामी दांत भी उसी प्रकारके रहेंगे। बालकोंको उंगली मुंहमें डालकर दांतोंको टेढा न करने दो, जिससे नया दांत भी बाहर निकला हुआ अथवा अन्दर धंसा हुआ न निकले।

(२) बालकोंको दांत साफ रखनेकी आदत आरम्भ में ही डाल देनी चाहिये। दातुन नित्य किया करें तो अच्छा है। कुछ पिसा हुआ नमक सरसोंके तेलमें मिला कर मला जाए तो और भी अच्छा है। दांतों पर दातुन इस प्रकार फेरनी चाहिये कि मसूढ़ों पर उसकी रगड़ न लगे और एक-एक दांत साफ हो जाए। कई लोगोंको देखा है कि वे दातुन मुंहमें डाले रखते हैं और पानी लिए बिना बहुत देर तक चबाते रहते हैं। टहलने निकले तो दातुन भी रास्तेमें लेकर चले जाते हैं, यह बहुत बुरा है। दातुनको एक बार मुंह से निकाल कर धोये बिना पुनः मुंहमें न डालनी चाहिये। देखो, कभी कोई थूक कर भी चाट सकता है? यह जिस प्रकार एक गन्दी बात है, उसी प्रकार वह भी गन्दी आदत है। उससे दांत खराब हो जाते हैं। दातुन करते समय जलको पास रखो और बार-बार दातुन और मुंहको साफ करो।

(३) सोते समय दांतोंको अवश्य साफ करना चाहिए। दांतोंमें यदि अन्न आदिके कण लगे रहें तो वे वहीं सड़ कर मसूढ़ों और दांतोंको दूषित करते हैं। रात भर इनका कार्य होता रहता है। प्रत्येक वस्तु खानेके बाद दांतोंको भली प्रकार साफ करना चाहिए। योरुपीय फैशनके अनुसार किसीके सामने कुल्ली करना ठीक नहीं होता। चाय-पार्टियां होती हैं तो हाथ धोये बिना खान-पान प्रारम्भ करते और दांत साफ किये बिना समाप्त करते हैं। डिनरके बाद भी केवल उङ्गलियोंके पोरे तो साफ कर लिये जाते हैं किन्तु गरारे अर्थात् कुल्ले करनेका कोई प्रबन्ध नहीं होता। ऐसी दशामें पार्टीसे उठकर एक तरफ जाकर दांतोंको अच्छी तरह साफ कर लिया

करें।

(४) व्यायामके बिना स्वास्थ्य नहीं, इसलिए दांतोंका भी व्यायाम करना चाहिए। यदि आहारको पूरी रीतिसे चबाकर खाया जाये तो दांतोंका व्यायाम आपसे आप ही हो जाता है। फिर, खानेकी सब वस्तुएं नरम न होनी चाहिएं। कुछ आहार सख्त भी होना चाहिए। चने भुनाकर चबानेका देहाती रिवाज बहुत ही अच्छा है।

(५) बहुत गरमके बाद बहुत ठण्डी और बहुत ठण्डीके बाद बहुत गरम चीजें मुंहमें नहीं डालनी चाहिएं। अधिक गरम और अतिठण्डी चीजें भी दांतोंको बिगाड़ देती हैं। मैंने एक वृद्ध मनुष्यको देखा है जिसके सब दांत मौजूद थे। मैंने इसका कारण पूछा तो उसने बताया कि उसने भोजन सदैव ठण्डा करके खाया है, गरमागरम खानेकी चेष्टा कभी नहीं की। 'गरम गरम फुलका'—यह सार्वजनिक मांग है। इधर गरम फुलका खा रहे हैं, उधर ठण्डी बरफका जल पी रहे हैं। दन्त-रक्षा करने वालोंको इन दोषोंसे बचना चाहिए।

नोट—जो लोग दातुनके स्थान पर ब्रुशका प्रयोग करते हैं तो उन्हें एक बार ब्रुश बरतनेके बाद उसे खौलते पानीमें डालकर अथवा किसी कृमिनाशक वस्तुसे प्रतिदिन धोकर साफ कर लेना चाहिए, नहीं तो दांत और भी खराब हो जायेंगे। ब्रुशमें यही बड़ा दोष है। मुसलमान लोग जो एक ही मसवाक रखते हैं—इनमें यही दोष है।

'विशूचिका' निदान और 'विशूचिका' पर एक अत्युत्तम योग

[लेखक—श्री० पं० सरयूप्रसाद जी भट्ट]

रोग परिचय—

विशूचिका का आर्ष-ग्रन्थोंमें विशेष विवरण अजीर्ण रोगके अन्तर्गत दिया हैं और यह व्याधि वस्तुतः अजीर्ण जन्य ही है। परन्तु नवीन मतवाले इसे जन्तु जन्य ही मानते हैं।

यह व्याधि संक्रामक है; क्योंकि इसका विषप्रकोप वायु द्वारा ही सर्वत्र फैलता है।

हम आयुर्वेदिक निदान ही सत्य मानते हैं; क्योंकि कीटाणुओंका ही सर्वत्र प्राबल्य उचित नहीं हो सकता, यह हो सकता है कि उपरोक्त कारणसे ही रोगकी उत्पत्ति होकर रोगाक्रान्त क्षेत्र विषाक्त और दूषित हो जाता है; यह शंका हो सकती है कि सर्वत्र एक समयमें ही इतने लोगोंको अजीर्णसे रोगोत्पत्ति कैसे हो सकती है?

इसका समाधान भी यह है कि इस रोगकी उत्पत्ति भी एक समयमें ही थोड़ा-सा कारण पाकर बढ़ जाती है, वह समय है सर्दोष्ण, विशेषतया आषाढ़ और श्रावण, क्योंकि थोड़ी बरसात हुई और अत्यधिक गर्मी बढ़ जाती है। उस समय पृथ्वीकी ऊष्मा और शारीरिक ऊष्मा दोनों मिलकर शरीरके दोषोंको दूषित करतीं हैं; उस समय पाचक संस्थान पर उस ऊष्माका प्रभाव पड़ता है और भुक्त द्रव्य तथा उससे दूषित होकर बनने वाला रस विशूचिकाके पूर्व कारण तैयार करते हैं। जब एक जगह कुछ लोगों पर व्याधिका प्रभाव हुआ तब यह क्षेत्र स्वभावतः विषाक्त और दूषित हो जाता है, इस तरह फिर यह व्याधि संक्रामक रूप धारण कर लेती है। वायु संचय-प्रकोप काल भी यही है। प्रावट्-कालमें जब अत्यधिक गर्मी पड़नेको होती है तब ही यह व्याधि बढ़नेका समय पाती है। वह काल ऐसा होता है कि स्वभावतः मनुष्योंकी अग्नि मन्द पड़ जाती है, तब अति आहार और गरिष्ठ अहारोंका पाचन सम्यक् नहीं हो पाता, तब ही अजीर्ण होकर विषाक्त व्याधि विशूचिकाका जन्म होता है।

अन्य ऋतुओंमें भी विशूचिकाका रोग बढ़ते देखा गया है, पर कालानुसार अजीर्ण-जन्य ही होता है।

निदान और रोग नामका कारण—

भावप्रकाशमें इसका निदान और नामकरण।

यथा —

सूचीभिरिव गात्राणि तदन्सुन्तिवृतेऽनिलः।
यत्राजीर्णेन सा वैद्यैर्विसूचीति निगद्यते॥

जिस रोगमें अजीर्णके कारण वायु शरीरमें सुई छेदनेकी-सी पीड़ा करती है उस रोगको वैद्य विसूचिका कहते हैं (सूची नाम सुई का है)

पुनश्च—

न तां परिमिताहारा लभन्ते विदितागमाः।
भूयस्तापजितात्मानो लभन्तेऽसन लोलुगः।
= विदिता गमाः ज्ञातायुर्वेदाः।

परिमित भोजन करने वाले और आयुर्वेदको जाननेवाले मनुष्योंको विशूचिका रोग नहीं होता, किन्तु जिन मूर्ख मनुष्योंके मन और इन्द्रियां वशमें नहीं हैं और भोजन में अत्यन्त आसक्त हैं, उनको यह विशूचिका उत्पन्न होती है।

लक्षण —

मूर्च्छातिसारौ वमथुः पिपासा,
शूलं भ्रमोद्वेष्टन जृम्भदाहाः।
वैवर्ण्यं कम्पो हृदयेरुजश्च,
भवन्ति तस्यां शिरसश्च भेदः॥

विशूचिकामें मूर्च्छा, अतिसार, तृषा, शूल, हाथपावोंका जकड़ जाना, जम्भाई, कम्प और शरीरमें पीड़ादि लक्षण होते हैं।

उपद्रव —

निद्रा नाशोऽरतिः कम्पो मूत्राघातो विसंज्ञता।
अमी उपद्रवा घोराः विशूच्याः पंच दारुणाः॥

निद्रा का नाश, मूत्र अवरोध, मूर्च्छा आदि उपद्रव होते हैं।

उत्तम प्रयोग —

मेरी चिकित्सामें आए हुए रोगीने जो कि मरणासन्न थे, इस औषधिका प्रयोग कर अपूर्व लाभ उठाया है। इस औषधिको १-१ घण्टेसे जब तक रोग काबूमें आवे जल या शक्करके साथ देते हैं और पीनेके लिए लौंग धनियां साधित पानी देते हैं। यह प्रयोग रसतन्त्र वा सिद्ध-प्रयोग-संग्रह वटी प्रकरणका है। विशूचिकामें मूत्रका अवरोध हो जाता है जो प्राणघातक ही है। परन्तु इन गोलियोंसे कै-दस्त आराम होकर पेशाब भी खुल जाता है, फिर भी यदि पेशाब होनेमें देरी प्रतीत हो तो निम्नलिखित पेशाब लाने वाले प्रयोगको शीघ्र बनाकर दे दें, तुरन्त पेशाब हो जावेगा, क्रमशः वे दोनों प्रयोग ये हैं —

विशूचिका हर वटिका —

भुनी हींग	३ तोले
आमकी गुठलीकी गिरी	२ तोले
लाल मिर्चके छिलके	२ तोले
अफीम जायफल	जावित्री
शुद्ध शिंगरफ — चारों	१-१ तोला
पीपरमिंट के फूल	६ माशे

इन आठ औषधियोंको मिलाकर ६ घण्टे नींबू और लहसनके रसमें खरल कर आध-आध रत्तीकी गोलियां बना लें।

मात्रा — १ से २ गोली जल या शक्करके साथ रोग काबूमें आवे तब तक १-१ घण्टेसे देना चाहिए।

गुण — चमत्कारिक लाभ मिलता है।

पेशाब लाने वाला योग

उक्त प्रयोग से ही पेशाब भी आ जाता है, यदि फिर भी देरी प्रतीत हो तो यह प्रयोग बनाकर शीघ्र दे दें। पेशाब खुल जावेगा, यह प्रयोग भव-प्रकाश मूत्राघाताधिकारका है।

प्रयोग — काली मूसलीकी जड़का क्वाथ करके इसमें घी तैल और दहीका पानी डालकर यथोचित मात्रा २ तोला से चार तोला तक निर्धारण कर पिला दें।

पथ्य — दोष शमन होकर रोग-निवृत्ति हो जाने पर पथ्यका ख्याल रखें, जल्दबाजी न करें और गरिष्ठान्न सेवन न करने दें। पथ्यमें साबूदाना या पतली खिचड़ी ही दें।

'धन्वन्तरि'

त्रैमासिक भविष्य-फल

प्रत्येक वस्तुकी तेजी-मन्दी, सामाजिक हलचलें और राशिफल

[लेखक—श्री पं० रमानन्द शास्त्री सारस्वत साहित्य-रत्न]

भारतीय ज्योतिःशास्त्र सर्वथा सत्य एवं प्रत्यक्ष फल प्रद शास्त्र है। इसका गणित विभाग जितना उपयोगी है उससे कहीं अधिक फलित विभाग है। जो लोग इसे असत्य मानते हैं, वे आत्म-प्रवञ्चना करते हैं। हां; कुछ ज्यौतिषियोंके फलोंमें विभिन्नता देखकर ऐसी भ्रान्ति हो जाया करती है, पर उसका सबसे सही मार्ग यह है कि सबके फलोंकी तुलना की जाय। जिसका जितने अंशों में सही निकले उसका पाठकगण पत्रोंमें उल्लेख करते रहें, इससे प्रथम तो लाभ ज्यौतिषियोंको ही यह होगा कि वे विशेष विवेचनकी ओर ध्यान देंगे। द्वितीय लाभ पाठकों को यह होगा कि उनकी भ्रान्ति निर्मूल हो जायगी। अस्तु। 'श्रीस्वाध्याय' के इस सप्तम वर्षके 'ग्रीष्माङ्क' से मैं भी 'भविष्यफल' मे जनेका साहस कर रहा हूँ, विज्ञ पाठक परीक्षा कर अनुभव करें।

(१) प्रथम मास (कर्क संक्रान्ति)

१६ जुलाई से १६ अगस्त तक

यह मास स्वास्थ्यकी दृष्टिसे साधारण रहेगा। जल एवं वनस्पतियोंकी न्यूनता; गर्मी व आंधी झक्खड़ आदिकी प्रचुरता रहेगी। पूर्वीय देशोंके लिये यह मास भयङ्कर व्यधि पूर्ण तथा उत्तरीय देशोंको भी अनिष्टमय सा ही रहेगा। साथ ही संभवतः इस मास में हैदराबाद सम्बन्धी समझौतेकी भावनामें अन्तर आ जायगा और हैदराबादमें या हैदराबादकी तरफ विग्रहके चिन्ह दृष्टि गोचर होने लगें, पर हानि विशेष न हो सकेगी। हैदराबादकी कर्क राशि है और कर्कमें शनि व सूर्य तथा कर्क लग्नमें ही संक्रान्ति प्रवेश है, अतः हैदराबाद सम्बन्धी वार्तालाप इस मासमें अवश्य ही कोई-न-कोई नवीनता लायेगी। साथ ही शायद भारतकी राजधानी इन्द्रप्रस्थमें भी कुछ-न-कुछ सम्प्रदायिकता या मजदूरों द्वारा श्रेणि-संघर्ष होनेकी सम्भावना प्रकट हो। दक्षिणीय देशोंमें अग्निभयकी संभावना प्रत्यक्ष दिखलाई दे। विशेषतया यह समय मेष, मिथुन, कर्क, कन्या और तुला राशिवालोंको खराब रहेगा। वृष, सिंह, मकर और कुंभ राशिवालोंको साधारण रहेगा। कर्क राशि या मेष राशिवालोंको पूर्ण सावधान रहना चाहिये। कर्क राशिके लग्नमें उत्पन्न व्यक्तियों को आर्थिक संकट, राजभय, कुटुम्बके लोगोंसे कलह तथा स्त्री सम्बन्धी किसी चिन्तामें विशेष रूपसे ग्रस्त होना पड़ेगा। वैसे इस मासमें किसी विद्या सम्बन्धी नवीन कार्यो के आरम्भ होने अथवा शिक्षा सम्बन्धी योजनाके प्रसारके लिये सुयोग बन रहा है। देशमें वैसे बाहरी हलचल विशेष तथा किसी परम निपुण महान् नेताके अन्तर्द्धानके होनेपर भी देशकी अन्तर्राष्ट्रिय स्थिति पर्याप्त मजबूत रहेगी। वर्षा बहुत स्वल्प, खंड रूपसे कहीं कहीं होगी। यदि थोड़ी बहुत हुई भी तो उष्णताकी मात्रा विशेष रहेगी। कुल मिला कर मौसम सरसामका-सा रहेगा। बादल घिरेंगे तो बहुत पर वर्षा साधारण ही होगी।

व्यापार

इस मासमें सस्येश रवि कर्कगत शनिके साथ हैं, अतः पीत वस्तुओंका तथा श्वेत वस्तुओंका व्यापार ऊंचा न चढ सकेगा। वैसे भी कुल मिला कर व्यापार पक्ष साधारण ही रहेगा। एक बार जल व्यापारमें लोगोंको अत्यन्त हानिका सा झोंका दीखते दीखते अन्तमें पूर्ण लाभ होता प्रतीत होगा। वस्तुओंकी तेजी मन्दीमें धान्य मासके पूर्वार्ध जौलाई समाप्ति पर्यन्त कुछ मन्दा ही चलेगा। प्रायः २५ जौलाईसे तेजीका रुख आते आते ८ या १० अगस्तसे साधारण भाव रहेगा।

रुई, चांदी, बारदाना, सोना, धान्य आदि—

ता० १६ जुलाई से २४ तक साधारण तेजी । २५ से ३१ तक धान्य तेज रुई चांदी मंदी । १ अगस्त से ५ अगस्त तक मामूली मन्दी तेजीका दौर रहते स्थिति साधारण होगी। ६ तारीखके सायङ्कालसे रुई, चांदीमें तेजीका उछाला आश्चर्य जनक आवेगा, जो १० तारीखके मध्यान्ह तक रहेगा, पर इसी बीचमें यदि ८ तारीखकी शामको कुछ मन्दीका जोर-सा मालूम पड़े तो व्यापारियोंको घबराना न चाहिये। धान्य खरीद कर रख लेनेका यह अच्छा अवसर है। १६ जुलाई से २४ तक सोनेमें एकाध टकेकी उथल पुथल एवं २५ से ३१ तक दो से चार टकेकी पहले तेजी फिर मन्दी। ७ तारीख अगस्तसे सोनेमें मन्दी दिखलाई देगी जो विशेष न ठहर कर १४ या १२ अगस्त तक झूलती हुई अन्तमें तेजी दिखलायेगी।

द्वितीय मास (सिंह संक्रान्ति)

१६ अगस्त से १६ सितम्बर तक

यह मास कुछ चमत्कारिक है। इस मासमें भी रोग अशान्ति, कलह और उत्पात बढ़ेंगे ही। फलतः स्वास्थ्यकी दृष्टिसे विशेष उत्तम नहीं रहेगा। मासके पूर्वार्धमें अनाचार बढ़ेंगे, पर वे स्थायी न रह सकेंगे। देशकी राजनीतिके गगनमें श्रावण शुक्ल पक्ष आश्चर्यमय सिद्ध होगा। हो सकता है कि समाजवादी दलकी लोक-प्रियता आशासे अधिक बढ़े। यदि गत मास अर्थात् १६ अगस्तसे पूर्व हैदराबाद और भारतमें मनोमालिन्य बढ़ता गया अथवा अब जैसी ही स्थिति रही तो हैदराबादको अवश्य किसी निपुण व्यक्तिके हस्तक्षेप या परामर्श द्वारा झुकना पड़े। फलतः बिना किसी रक्त पातके समझौता हो जाय। परन्तु काश्मीर सम्बन्धी इस मासमें कोई महत्व पूर्ण निश्चय हो जाना प्रतीत नहीं होता। इस मासमें अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति भी यद्यपि बहुत सुन्दर तो नहीं रहेगी किन्तु मास प्रारम्भ में ही कुछ अनिष्ट होनेकी भी अंशतः संभावना है। साथ ही पाकिस्थानकी मैत्री भावनामें भी यदि कुछ अन्तर आजाय तो कोई आश्चर्य नहीं। यद्यपि भारत सरकारके लिये इस मासमें शत्रुओं द्वारा अनिष्ट होनेकी संभावना तो नहीं है, तथापि भारत सरकारके मन्त्रियोंको जागरूक रहना आवश्यक है। साथ ही शिक्षा सम्बन्धी अथवा किसी विज्ञान सम्बन्धी उन्नतिकी वार्ता या ऐसे ही किसी कार्यके द्वारा देश के नेताओंमें मनमुटाव हो जाना स्पष्ट लक्षित हो रहा है। वैसे यह मास मेष तुला राशि वालोंको अनिष्ट कारी रहेगा, पर सिंह राशि अथवा सिंह लग्नमें जन्म लेने बल्लों को विशेष ध्यानसे रहना चाहिये। और खास कर अपने स्वास्थ्य Helth तन्दुरुस्ती पर ध्यान देना चाहिये। इस मासमें भी कहीं कहीं अग्निसंघर्ष होनेकी संभावना है। मासके पूर्वार्ध में वर्षाके कई योग प्रतीत होते हैं। मासके पूर्वार्धमें ही कहीं कहीं किन्हीं देशोंमें बाढ आनेके समाचार सुनाई देंगे। बहुत विशेष वर्षा न होने पर भी ऊष्माकी मात्रा कुछ कम अवश्य हो जायेगी। मासके उत्तरार्धमें ही २७ अगस्तको अगस्त्योदय हो रहा है। अतः मासका उत्तरार्ध उतना जल के लिये शस्त नहीं जितना कि पूर्वार्ध। इस मासमें वैसे शस्यकी न्यूनता सी रहेगी। वायव्यकोण स्थित प्रदेशोंके लिये यह मास कई अनघटित घटनाएं लेकर आवेगा।

व्यापार

इस मासमें धनेश अष्टम राशि स्पर्श कर रहे हैं, अतः व्यापारकी स्थिति डांवाडोल रहेगी। बहुत सी नई दुकानें खुलेंगी; परन्तु चलेगी नहीं। व्यापारमें भी अनीति एवं कुटिलताका साम्राज्य रहेगा। मासके पूर्वार्धमें व्यापारमें एक प्रकारका ज्वार सा आता दिखलाई देगा-पर वह बरसाती नदी की तरह उत्तरार्ध तक शान्त हो जायगा। फलतः व्यापारमें इस मासमें भयङ्कर उथल पुथल होगी। घट बढ़का खूब दौर रहेगा। कहीं अतिवृष्टिसे धान्य नाश और कहीं अनावृष्टिके कारण धान्य तेज ही रहेगा। सोना, गेहूँ; चना तथा अन्य पीले रंगके पदार्थ तेज रहेंगे।

रुई, सोना, चांदी, बारदाना आदिकी तेजी मन्दी

ता० १६ अगस्तसे २० अगस्त तक रुई, चांदी साधारण मन्दी, और सोना बारदाना आदिमें २ से चार टके तककी मामूली तेजी। २२ अगस्तके मध्यान्हसे ३१ अगस्त तक चांदीमें तेजी। इस बीचमें २७ तारीखके करीब शाम को यद्यपि बाजार कुछ गिरते से नजर आवेंगे, किन्तु व्यापा-

रियोंकों अधीर नहीं होना चाहिये। बल्कि एकाध पर्चे और लेलेने चाहिये। ३१ तारीखके आसपास तेजीका जबर-दस्त योग है। सोना भी प्रायः वैसे घट बढमें ही रहेगा।

१ सितम्बर से ७ सितम्बर तक सोनेके व्यापारियोंको होशियारीसे काम लेना चाहिये और बाजारके रुखके मुताबिक चलना चाहिये। ३ तारीखकी शामको जैसी टोन रहे उसी के मुताबिक व्यवहार करना चाहिये। हमारी समझमें ४ तारीख से तेजीका ही योग है, जो ७ तक चलेगा। फिर १० तारीख तक साधारण मन्दी रहेंगी। १० से १६ तक मामूली उछाले आते रहेंगे। कोई विशेष योग दिखलाई नहीं देता। हां ६ तारीख से हस्तमें बुध और सूर्यका योग होने से चांदीमें तेजीके उछालेका लक्षण तो दीखेंगा पर वह साधारण ही होगा।

तृतीय मास (कन्या संक्रान्ति)

१६ सितम्बर से १६ अक्टूबर तक

यह मास वायव्यकोणके देशोंके लिये अनिष्ट रहेगा। जनतामें ताप जनित पीड़ा बढ़ेगी। मौसम सरसामका रहेगा, पर सुभिक्ष होगा। लोगोंमें शान्ति और सुख बढ़ता सा दिखलाई देगा। वैसा कुल मिलाकर इस मासमें मृत्यु संख्या दुगुनी और जन्म संख्या एक गुनी होगी। तरह तरहके उत्पातोंके बढ़नेकी शंका होगी पर अधिकतर यह शंका निर्मूल ही होगी। रस पदार्थ और बनस्पतिमें वृद्धि होगी। कफ सम्बन्धी रोग प्रचुर मात्रामें बढ़ेंगे और फैलेंगे। कहीं कहीं वर्षा बहुत ज्यादा होगी। देशमें अन्तर्राष्ट्रीय हलचलोंका बुरा परिणाम होगा। किन्तु यदि सावधानी की गई तो स्थितिमें अन्तर न आ सकेगा। भारतके किन्हीं कुटिल शत्रुओंके द्वारा धमकियां सुनाई पड़ेंगी, पर भारतकी प्रजा और सरकारका बाल बांका न हो सकेगा। कहीं-कहीं अग्निकाण्ड भी होंगे—जो विशेष तौरसे अग्निकोण वायव्य कोण, कुछ पश्चिमके देशोंके लिए भी भयानक सिद्ध होंगे। सुरक्षा सम्बन्धी कार्योंमें भारत सरकारका व्यय बहुत होगा। कुछ कुटिल लोग भी जनताकी सहानुभूति पा गुप्त षड्यन्त्र करनेकी चेष्टा करेंगे। वैसे यह मास पिछले दो मासोंसे अच्छा ही रहेगा। किसी धार्मिक कार्यका प्रारम्भ इस मास में अवश्य होगा। भारतवर्षके नेता लोगोंकी किसी अभूत पूर्व कारणसे ख्याति जनतामें बढ़ेगी।

व्यापार

व्यापार पक्ष साधारण रहेगा। व्यापारमें अधिकतर लोग हानि ही उठावेंगे। जल व्यापार इस मासमें अवश्य लाभदायक होगा। धान्य भाव प्रायः तेज ही रहेंगे। मासके मध्यमें अलसी, गल्ला आदि पदार्थ मन्दे होंगे। चांदी, कपड़ा, खांड, गुड़, हैसियन तेज ही रहेंगे। पर न तो यह तेजी ही स्थायी रहेगी और न मन्दी। तत्व यह कि मास का प्रारम्भ तेजीसे ही होगा। पर २५ सितम्बरसे ५ अक्टूबर तक प्रायः मन्दीके ही दौर चलेंगे। पर इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि इसमें तेजी होगी ही नहीं। हां, पर ज्यादातर मन्दीके ही दौर रहेंगे। मासका अन्तिम भाग फिर तेजी ही करेगा।

मुख्यतः हम ऊपर बतला चुके हैं कि मासके शुरूमें तेजी ही होती रहेगी और मध्यमें मन्दी और अन्तमें फिर तेजी पर व्यापारी इसमें भी ध्यान रखें और होशियारीसे बाजारका रुख देखकर कार्य करें। उदाहरणके लिये १८ तारीखको अश्लेषामें शुक्र जाता हुआ अवश्य ही काले पदार्थों में तेजी देगा। पर यदि मन्दीका झोंका मालूम भी पड़े तो भाव जारी रखना चाहिये। १६ सितम्बरसे २० तक चांदीमें साधारण घटबढ़ और २० से ३० तक तेजी रहेगी—व्यापारी इससे फायदा उठा सकते हैं। ३० से ५ अक्टूबर तक बाजारमें खरीदनेका अच्छा समय है, पर याद रखें कि ५ तारीख से १० तक कभी बेच दें। वना फिर १८ अक्टूबर तक रोकना पड़ेगा और १८ से २० तक तेजी मिलेगी। इसी प्रकार सोनामें १६ से २० सितम्बर तक साधारण तेजी और २० से ३० तक अच्छी घट-बढ़ रहेगी। हां, अक्टूबरका प्रथम सप्ताह सोनेकी तेजीमें ही बीतेगा। ५ अक्टूबर से १० अक्टूबर तक साधारण मन्दी रहेगी। १० से १६ अक्टूबर तक मामूली तेजी रहेगी। धान्य भाव प्रायः सम ही रहेगा।

नोटः—उपर्युक्त भाव केवल संकेत मात्र ही लिखें हैं। प्रतिदिन या सप्ताहकी तेजी मन्दी अथवा ९९ प्रतिशत विशेष चांसोंको पानेके लिये या केवल जन्म तिथि अंग्रेजी

त्रैमासिक व्यापार-विमर्श

प्रत्येक वस्तुकी अर्ध साप्ताहिक तेजी-मंदी

[लेखक— श्री पं० बिहारीलालजी शर्मा दैवज्ञभूषण]

कर्क संक्रान्ति (सौर श्रावण मास)

(ता० १६ जुलाई से १५ अगस्त तक)

इस मासमें खड़ी फसलमें कीटाणु (जन्तु) लग कर लाखों टन अनाज बर्बाद हो जाये। राजनैतिक समाचारोंमें परस्पर विद्रोहकी अफवाहें सुनाई दें। सरकारी हल्कोंमें कार्य कर्त्ता समुदाय हड़ताल दुराग्रहादि उपद्रव पैदा करें। वस्तुओं केभावमें रुई कालीमिर्चमें सस्ताई हटते मंहगाईका असररहे। सोना चांदीके भावमें तेजी टिकी हुई चले। अलसी अरण्डी मूंगफली, हेसियनके भावमें दुतर्फा चढ़ाव उतार मालूम देगा। महीना पर्याप्त घटाबढ़ीका है।

ध्यान रखने योग्य मासिक व्यापार व्यवस्था

ता० १६ शुक्रवार—रुईकी क्लीयरिङ्ग और शेयरका बदलेका दिन है।

ता० १७ शनिवार—आषाढ़ी पूर्णिमा वायदा सोना चांदीके तेजी मन्दी सही पड़ने का दिन है।

ता० २१ बुधवार—रुईकी मासिक तेजी मन्दी सही पड़ेगी और सोना, चान्दीके बदलेका दिन है।

ता० २३ शुक्रवार—शेयरका बदला, रुईकी क्लीयरिङ्ग छपनेका दिन है।

ता० ३० शुक्रवार—रुईकी क्लीयरिङ्गका दिन है, शेयर के बदले होंगे।

ता० ३१ शनिवार—अरण्डी मूंगफली अलसीकी तेजी मंदी सही पड़ेगी।

ता० ३ मङ्गलवार—वायदा श्रावण पूर्णिमाके सोना-चान्दीकी तेजी मन्दी सही पड़ने का समय है।

ता० ५ गुरुवार—श्रावण वायदा सौदा सोना-चान्दीके क्लीयरिङ्गका दिन है।

ता० ६ शुक्रवार—रुईकी क्लीयरिङ्ग भरी जायगी, शेयरके बदले होंगे।

ता० १३ शुक्रवार—शेयरका बदला और रुईकी क्लीयरिङ्गका दिन है।

ता० १४ शनिवार—अलसी, अरण्डी, मूंगफलीकी क्लीयरिङ्ग भरी जायगी।

व्यापारकी आयोजना—ऊपरकी तारतम्यता देखते रुई व्यापारकी आयोजनामें ता० २१ जुलाई और २१ अगस्त की ड्यू-डेटकी मन्दी वायदा सितम्बर लगावें, प्रत्येक घटे-भाव खरीद करते उछालेमें बार बार नफा सुधारते जावें। सोना, चान्दी, व्यापारके लिए चालू ड्यू-डेटकी तेजी लगाते उछालेमें बेचके नफा प्राप्त करें। तिलहनका व्यापार करने में घट-बढ़की आशासे नजराना लगाते चढ़ाव उतारमें लेवा बेचीके सौदे कर तारुणी सुधारें, अथवा क्लीयरिङ्गकी जोखम संभाल खुल्ला सौदा ले बेचके करते रहें। भाव जरूर मिलेंगे। उतरती हुई संक्रान्तिके अन्तिम दिनोंमें व्यापार नजरानासे कर लीजिये। नफामें सौदा सुधारें।

ता० १६ जुलाई प्रातः ६ बजेसे ३$\frac{1}{3}$ दिनमें—
बढ़ती तिथिमें सूर्यने नक्षत्र बदला, अतः ध्यान लगाया जाता है कि वायदा बाजार दो तीन दिन बन्द रहेगा।

ता० १६ जुलाई दिनके ३ बजेसे ३$\frac{1}{3}$ दिनमें—
गुरु पूर्णिमाके प्रसङ्गमें वयोवृद्ध गुरुजनों और बाजारके दादाओंसे सलाह कर सौदेकी आयोजना बना लें।

ता० २२ जुलाई रात ११ बजेसे ३$\frac{1}{3}$ दिनमें—
जब तेजीका संकेत हो तो वायदा सौदामें वस्तु खरीद

या हिन्दी किसी सन् संवत् की हो—द्वारा आयुभरका समस्त फल पानेके लिये अध्यक्ष श्रीशारदासदन हजारीका मुहल्ला अलवर, पते से पृथक् पत्र-व्यवहार करें। और उपर्युक्त फल कितने अंशोंमें मिलता है इसकी सूचना सम्पादक महोदय 'श्रीस्वाध्याय' को दें, जिससे मैं अपना परिश्रम सफल समझूं। ——

की बोल दीजिये। बाद खरीदके आये हुए उछालाका जल्दी ही नफामें उपयोग कर लीजिये।

ता० २६ जुलाई प्रातः ७ बजेसे ३⅓ दिनमें—

रुई शेयर डिफर्ड और सोना चान्दीके मूल्यमें अचानक ही अच्छी तादादमें उल्टा पल्टी होना पाया जाता है। समय सावधानीका है। बहुत दिनोंसे फिर चढ़ाव उतारका समय आया हैं। अतः व्यापारी समुदायको चाहिये कि नजराना लगा कर व्यापार करें। क्लीयरिङ्गका ध्यान रख सम्भाल पूर्वक खुल्ला सौदा करें। बेचें अथवा खरीदें भाव दोनों पार्टियोंको जरूर मिलेंगे।

ता० २६ जुलाई दिनके ४ बजेसे ३⅓ दिनमें—

यहां प्रत्येक वस्तुके भावमें मंहगाई मालूम देगी। वायदा व्यापारमें वस्तु खरीद कर, एक दिन आगे या पीछेके उछालामें वापिस बेच दीजियेगा, चान्स पक्का और परीक्षित है।

ता० १ अगस्त रात ११ बजेसे ३⅓ दिनमें—

हरियाली अमावस्या के निकट रुई भावमें १५) २०) डिफर्ड शेयर रेट में ५०) ७०) कालीमिर्च ३०) ४०) चांदी ४) ५) सोना, हेसियन, अलसी, २) अरण्डी, मूंगफलीमें, ५) ७) टकेकी मन्दी आना पाया जाता है। हमने इकतर्फा मन्दीका ऐलान किया है। ऐसे ऐलानमें जिस सटोरियाकी जौनर्स वस्तुमें सम्पर्क हो उस वस्तुको वायदामें बेचा, बोल दे। और बीच मार्केटमें रहते अपने २ सौदा सूतकी सम्भाल करें।

ता० ५ अगस्त प्रातः ८ बजेसे ३⅓ दिनमें—

चलती मन्दीमें तत्काल उछाला आजाना जान पड़ता है। जबकि मंहगाई प्रतीत होती है तो माल खरीद कर तुरन्तके नफेमें निकाल डालिये।

ता० ८ अगस्त दिन के ५ बजे से ३॥ दिन में

भावमें पुख्ता घट-बढ़ रहे। समय व्यापार करने का है।

ता० १२ अगस्त दिनके ८ बजेसे ३॥ दिन में

वायदा व्यापारमें अवश्य फेरफार पड़ने वाला है। सचेत रहें, समय घटा-बढ़ीका है।

सिंह संक्रान्ति (सौर भाद्रपद मास)

(ता० १६ अगस्तसे १५ सितम्बर तक)

इस मासमें वायदा बाजारोंमें पर्याप्त परिवर्तन होना पाया जाता है। अधिकतम असर सस्ताईका चलता जानिये। कई वस्तुओंके भाव बड़ी तादादमें गिर जाएंगे। बहुतायतसे रुई रेटमें ३५) ४०) स्टील डिफर्ड शेयरमें २७०) ३००) चान्दी ८) १०) सोना, हेसियन, अलसी, ४) ६) एरण्डा मूंगफली १०) १५) कालीमिर्च १००) ७५) टके घटना प्रतीत होता है। ध्यान रहे, बीच २ में तेजीके उछाले भी गश्त लगाते रहेंगे।

ध्यान रखने योग्य मासिक व्यापार व्यवस्था

ता० १७ मङ्गलवार—सोना चान्दीकी तेजी-मन्दी सही पड़नेका दिन है।

ता० १८ बुधवार—श्रावणी पूर्णिमा वायदा सोना-चान्दीके बदलेका दिन है।

ता० २० शुक्रवार—शेयरका बदला, रुईकी क्लीयरिङ्ग का दिन है।

ता० २१ शनिवार—रुईकी तेजी-मन्दी सही पड़े, अगस्त ड्यूकी।

ता० २७ शुक्रवार—रुईकी क्लीयरिङ्ग छपेगी। शेयर का बदला होगा।

ता० ३१ सोमवार—एरण्डा, मूंगफली, अलसी, की तेजी मन्दी सही पड़े।

ता० १ बुधवार—वायदा भाद्रपदका, सोना-चान्दी, की तेजी मन्दी सही पड़े।

ता० ३ शुक्रवार—चान्दी सोना रुईकी क्लीयरिङ्ग भरी जायगी, शेयरका बदला।

ता० १० शुक्रवार—रुईकी क्लीयरिङ्ग और शेयरके बदलेका दिन है।

ता० १५ बुधवार—एरण्डा, अलसी, मूंगफलीका क्लीयरिङ्ग दिन है।

वायदा व्यापार की आयोजनाः—यहां इकतर्फा सस्ताईका संकेत है। ताकि क्लीयरिङ्गमें धन कमानेका मौका

है। मतलब बेचनेका ध्यान रखें, अगर जोखम बांध कर व्यापार करना है तो मन्दी लगा कर बैठे रहें। चान्स जरूर मिलेगा, बशर्ते बाजारको सम्भालते रहें।

ता० १६ अगस्त प्रातः ६ बजेसे ३॥ दिनमें—

सम्भव है ताता स्टील डिफर्ड रेटमें १५०) काली-मिर्च ४०) ५०) रुई रेट में १५) २०) अरण्डा मूंगफली ५) ७) चान्दी ३) ४) सोना, अलसी, हेसियनके मूल्यमें १) २) टकेका चक्कर पड़ जाये चान्स परीक्षित हैं। नजदीकमें जिस वस्तुका भाव बढ़ा हो, उसको बेचना मंजूर करलें, अथवा मन्दी लगायें, क्योंकि चकमा तेजीका है।

ता० १६ अगस्त दिन के ४ बजे से ३॥ दिन में—

समय साधारण घट-बढ़में निकले। वस्तुके मूल्यमें किसीका भाव घटेगा और किसींका भाव बढ़ेगा।

ता० २२ अगस्त रात ६ बजे से ३॥ दिन में—

यहां ध्यान अच्छी तेजीका है। वायदा खरीद किया बोल दीजिये। बाद खरीद किए आये उछालेमें नफा सुलझानेमें रहें।

ता० २६ अगस्त प्रातः ६ बजे से ३॥ दिन में—

ऐसे समय चान्दीके भावोंमें अक्सर सस्ताई आ जाया करती है। ध्यान रहे, यहां वायदा बाजारोंमें पुख्ता घबराहट मालूम देगी, फिर भी कभी २ बजाय तेजीके ऐसा पैगाम जबर मन्दीमें उतर जाया करता है। सचेत रहें।

ता० २६ अगस्त दिन के ३ बजे से ३॥ दिन में—

रुई ८) १०) कालीमिर्च २०) ३०) चान्दी ५) ७) सोना, हेसियन २) एरण्डा, मूंगफली, ५) ७) डिफर्ड-शेयर ५०) ७५) और अलसी १) टकेकी तादादमें मन्दी होना पाया जाता है। चान्स अनुभव किया हुआ है। परन्तु यह चान्स उन्हीं के हाथ लगेगा, जो वायदा बाजारमें मन्दीका खिलाड़ी होगा, वहमी और दूरदर्शी हाथ मलते रह जायेंगे।

ता० १ सितम्बर ११ बजे रातसे ३॥ दिन में—

खास कर अमावस्याको मन्दी मालूम देगी। ऐसे मौके वायदा बाजारमें मन्दीका रिएक्शन आते भाव बढ़ जाया करते हैं। मतलब दुतर्फा घटाबढ़ीका है। हमने पुख्ता संकेत किया है। अक्लमन्द पोइण्ट बना लें।

ता० ४ सितम्बर प्रातः ६ बजेसे ३॥ दिनमें—

टाटास्टील डिफर्ड शेयरमें अच्छी घटा बढ़ीका प्रसङ्ग है वायदा वस्तुके भावमें पुख्ता फेरफार होगा। आये हुये उछालेमें नफा बनाना न भूलें।

ता० ७ सितम्बर दिनके ३ बजेसे ३॥ दिनमें —

सोना और चांदी भावको बाद करते शेष वस्तुके मूल्यमें मंहगाई मालूम देगी। खयाल रखो, कि भभके और बढ़े हुए भावमें डबल बेचना न भूलें।

ता० ११ सितम्बर रात १० बजेसे ३॥ दिनमें —

चान्दीके भावमें अच्छी तेजी सुनाई देगी। अनुमान रुईमें ८) १०) चान्दीमें २) ३) डिफर्ड शेयर ५०) ६०) कालीमिर्च २०) ३०) एरंडी, मूंगफली ४) ६) अलसी, हेसियन १) १।) बढ़ना पाया जाता है। समय सावधानी का है।

कन्या संक्रान्ति (सौर आश्विन मास)

(ता० १६ सितम्बरसे १६ अक्टूर तक)

इस मासमें बाजारोंमें, मोटी घटाबढ़ी चले। अनुमान लगाया जाता है कि तातास्टील डिफर्ड शेयरके भावमें २००) ३००) कालीमिर्च १००) १५०) रुई ३०) ४०) चान्दी एरण्डा मूंगफलीके मूल्यमें १०) १५) सोना ४) ६) अलसी और हेसियनके भावमें ३) ४) टकेका चक्कर पड़ जाये।

ध्यानमें रखने योग्य मासिक व्यापारिक व्यवस्था

ता० १७ शुक्रवार — रुईका क्लेरिंग व शेयरके बदलाका दिन है।

ता० १८ शनिवार — पूर्णिमा वायदा सोना-चान्दीका बदला होगा।

ता० २१ मंगलवार — रुईकी तेजी-मन्दी, रुई वायदा जनवरी सही पड़े।

ता० २४ शुक्रवार — शेयरका बदला, रुईकी क्लेरिंग छूपेगी।

ता० ३० गुरुवार—एरंडा, मूंगफली, अलसीकी तेजी मकीसे ही पड़े।

ता० ६ शुक्रवार—रुईका क्लेरिंग व शेयरका बदलेका

दिन है। वायदा आश्विनी पूर्णिमाका सोना चांदीकी तेजी मन्दी सही पड़े।

ता० २ शनिवार—वायदा, चान्दी सोनेकी क्लीयरिङ्ग भरी जावे।

ता० ८ शुक्रवार—शेयरका बदला और रुईका क्लीयरिङ्ग छपेगा।

ता०१५ शुक्रवार—सोना चान्दीकी तेजी मन्दी सही पड़ेगी। शेयरका बदला, एरंडा,, मूंगफली अलसी रुईके क्लीयरिङ्ग भाव छपेंगे।

वायदा—सौदाओंकी व्यापारिक आयोजना—

जो भी कारण ऊपर बताये जा चुके हैं। और जब महत्वमय संयोग आते हैं, तब २ वस्तुओंके भाव में बड़ा फेरफार पड़ता है, सोदागरोंको यह समझ लेना चाहिये कि कन्या संक्रांतिमें जब २ चढ़ाव उतार होने वाला है। ऐसे स्थितिमें साधारण व्यापारी नजराना लगा व्यापार करें। पूंजीवादी क्लीयरिंगमें रकम लाना मंगवानेका ध्यान रख खुल्ला सौदा करें। समय व्यापार करने लायक हैं। हमने सूचना लिख दी,करना न करना सौदागरकी इच्छा पर है।

ता. १६ सितम्बर दिन ४ बजे से ३॥ दिन में—

कोई अच्छा परिणाम प्राप्त हो ऐसा प्रतीत नहीं होता है। बदस्तुर वस्तु खरीद कर और थोड़ा बहुत मिलता नफाके भावसे बेचते भी जायें।

ता० १६ सितम्बर रातके ११ बजेसे ३॥ दिनमें—

रुई, चान्दी, और डिफर्ड शेयरके भावमें प्रत्याघाती सुधारा आवे। डिफर्ड शेयर, रुई, चान्दी, बगैरह जिस वस्तुके भाव घटे हुए हों, उसी वस्तुको तुरन्त खरीद करें दो दिन-देर अबेरमें सोदा जरूर नफामें रहेगा। आया चान्सको सुधारे।

ता० २३ सितम्बर प्रातः ६ बजेसे ३॥ दिनमें—

वस्तुओंके भावमें दुतर्फा पुखता घटाबढ़ीका संकेत है। खरीद बढ़ते तेजी आना जायज है। बदस्तूर जिन्स खरीद करें। और थोड़े अथवा बहुत नफासे वापिस बेचना न भूलें।

ता० २६ सितम्बर दिनके ४ बजेसे ३॥ दिन में—

मामला पुखता रद्दोबदलका है। यह तेजी चाहे धातु में रहे चाहे रुई अलसी आदि वनस्पतिमें रहे।

ता० २६ सितम्बर रातके ११ बजेसे ३॥ दिनमें—

चलती मंहगाईमें अचानक मन्दी आना पाया जाता है। सलाह यह कि है बाजारका जैसा टोन मालूम दे मुताबिक उसके धंधा-रोजगार कर लीजिए।

ता० ३ अक्टूबर प्रातः ६ बजेसे ३॥ दिनमें—

अचानक तेजी आ धमके ऐसा अनुमान है। ताता स्टील डिफर्ड शेयरके भावमें ५०) ७५) चांदी रेटमें ४) ६) सोना २) ३) अलसी-हेसियन १॥) २) रुई रेटमें १०) १५) कालीमिर्च २०) ३०) एरण्डा मूंगफली ५) ७) टके की घटबढ़ होते नितान्तमें तेजीका सन्नाटा रहेगा।

जब तेजी आने वाली होती है तो खरीदकी तयारी रखना और "ले लिया" बोल देना समझदार व्यापारीका काम है। मुताबिक संकेतके सोदा सूत कर लीजियेगा।

ता० ६ अक्टूबर दिन ४ बजेसे ३। दिनमें—

समय बड़ा फेरफारका है। यहां रद्दोबदल वस्तुओं के भावमें बहुत होगी। तेजी वाली पार्टियां सिंडीकेट आदि नामसे "लाओ-लाओ" का तूफान मचाते वायदा बाजारमें वस्तुके भावमें तूफान मचा देंगे। समय सावधानीका है। चान्स पक्का परीक्षित है।

ता० ६ अक्टूबर रात ११ बजेसे ३॥ दिनमें

प्रथम बने संयोगोंकी स्मृति करते ध्यान लगा लीजिये कि रहा सहा पैगाम यहां पूरा होगा। चान्स साधने लायक समय है। समय बराबर सोदा सूत करनेका है।

ता० १३ अक्टूबर प्रातः ६ बजेसे ३॥ दिनमें—

वस्तु भावमें मामूली फेर फार मालूम देगा। ऐसे मौके नजराणा खा जाना उपयुक्त मौका है। फिर भी कामकाज बाजारका टोन देखके करें।

❀ तीन मासका पाक्षिक फलादेश ❀

['श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग' से]

—:^:—

[व्यापारीवर्गके विशेष आग्रह पर गताङ्ककी सूचनानुसार 'श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग' का पाक्षिक भविष्य यहां प्रकाशित किया जा रहा है। यह 'श्रीस्वाध्याय' के आगामी अङ्कोंमें भी आता रहेगा]

श्रावण कृष्णपक्ष

(ता० २२ जुलाई से ५ अगस्त तक)

इसपक्षमें रुईका बाजार कठिन समस्यासे व्यतीत होगा; कहीं कहीं रुईके गोदामोंमें अग्निकांडके योग हैं। ति० ६तक मन्दी, ति० ७ से १० तक तेजी, बाद मन्दी, इस पक्षमें रुईमें ५।१० टकोंकी घटाबढी होगी चान्दी बाजार ति० ६ तक थोड़े फरकमें चलेगा, मन्दी ही रहे। ति० ७ से ३० तक तेजी, बीच २ में मन्दीके रिएक्शन भी आवेंगे। सोनेके भावमें अधिक घटाबढी नहीं आती। फिर भी रुख तेजीका है। यह तेजी ति० ५ तक रहकर बाद २)३) की मन्दी होवे। ति० ११ से १) १।।) की घटबढ चलकर बाजार ति० १४ तथा ३०का तेज। गेहूँ, चणा, चावल, जौ, अलसी तेज। हल्दी, मोठ, बाजरा, ज्वार, सरसों, तोरियां मन्दे हों, व्यापारी इस पक्षमें नुकसानमें रहेंगे। अतः सोच समझ कर व्यापार करें। शेयर बाजार भी नीचे जायगा। लोहा, स्टील, सीसा, जस्त, एल्यूमीनियम मन्दे, ताम्बा, पीतल, कांसी उत्तरार्द्ध में तेज। अलसीमें तेजी मन्दी अधिक चले। इमारती सामान मशीनरी और रेल्वे तथा बिजली कम्पनियोंके शेयर तेज रहेंगे। अफीम तेज। हल्दी, मिर्च, सुपारी, सरसों, मजीठ, जीरा, राई मन्दे। उड़द, तिल, तेल, तथा विदेशी वस्तुओं का भाव तेज रहें। विदेशी वस्तुओंकी आयात न्यून होगी। मित्र राष्ट्रमें आपसी मतभेद होकर आपसमें सशंकता निर्माण होगी। वर्षा विचार — इस पक्षमें वर्षा उत्तम होगी,मध्यप्रान्तमें श्रावण कृष्ण ८ तक वर्षाकी खेंच रहेगी। परन्तु ति० १० के पश्चात् वहां भी वृष्टि उत्तम होगी। दिल्ली प्रान्त में वर्षा अच्छी होगी।

श्रावण शुक्ल पक्ष

(ता० ६ से १९ अगस्त तक)

रुईका बाजार बहुत ऊंचा नीचा होगा, अतः बड़ी सावधानीसे व्यवसाय करें। ति० २ से रुईमें तेजीके योग बनते हैं। यह योग दिन २ तक रहकर ति० ५ से ६ तक घटबढ़ अधिक होगी। ति० ७ को अकल्पित तेजी। ति० ८ से १० तक मन्दा, ति० ११ से १५ तक भावोंमें बड़ी क्रान्ति होगी। १५) २०) की घटबढ जान पड़ती है, रुख तेजीका रहे। चान्दीका बाजार भी ति० ७ तक तेजीका चल कर ति०८ से१० तक कुछ मन्दी होगी। बाद तेजीके योग हैं, ति० १५ का वायदा बाजार प्रायः तेजीमें बन्द होगा। सोनेके लिये इस पक्षका उत्तरार्द्ध तेजीका जान पड़ता है। ति० ११ से १५ तक ४) ५) की घटाबढ़ीके योग हैं। रुख तेजीका। गेहूँ, चणा, उड़द, जौ, मूंग, मोठ, मसूर ति० ५ से तेज, मिर्च, अलसी, अफीम, सरसों, तिल, तेल, तोरिया, हल्दी, गुड़ ति० १० से तेज हो। लोहा, स्टील, जस्त, सीसा, कथील, फोलाद ति० ११ तक मन्दे, बाद अधिक तेज। टाटा डिफर्ड-शेयर तेज हों, भारतकी व्यापार स्थिति अस्थिर रहे। इस पक्षमें अनेको विषयों में मंत्रिमण्डलमें मत भेद हों प्रजामें असन्तोष बढे,तथा सर्वत्र विरोधी बाते उठें वायुका उत्पात अधिक रहे। भारतीय सरकारको आर्थिक कठिनाइयोंका सामना करना पड़े, पूर्वी बंगाल और दक्षिणमें साम्प्रदायिक वैमनस्य बढे। पश्चिम यूरोपमें असंतोष आपसी मत भेद हो। वर्षा योग— ति० ८ तक वायुके साथ वर्षा तथा कहीं २ अवर्षण, कहीं अतिवृष्टि होकर खेतियोंमें हानि हो। नैपाल राज्यमें वर्षाकी खेंच रहे। उडीसा एवं मद्रास

के पूर्वी विभागमें अवर्षण या अतिवृष्टिसे हानि भारतके पश्चिमीय, दक्षिणी प्रदेशमें वर्षा उत्तम।

भाद्रपद कृष्णपक्ष

(ता० २० अगस्त से ३ सितम्बर तक)

रुईमें ति० १ से ४ तक तेजीके योग बनते हैं। तथा ति० ५ से १० तक घटबढके योग हैं, रुख तेजी की रहे। ति० ११ से रुईमें दिन१५में २०)२५)की मन्दी आनेका योगहैं। बीचर में तेजीके रिएक्शन आयेंगे। अतः इस घटावढ़ीमें बडी सावधानीसे लाभ उठावें। चांदीका बाजार ति० ४ से तेज होकर ति० १० से मन्दीके योग बनते हैं। यह मन्दी ति० १४ तक रह कर ति० ३० को तेजीके योग हैं। सुवर्णके भावोंमें घटाबढीके योग बने हैं। ति० ५ से सोनेमें तेजी चल कर दिन ६ तक तेजी रहे, बाद १) १।।)की मन्दी होने का योग है। यह मन्दी स्वल्प होगी। गेहूँ, चावल, चणा, उड़द, नमक, मूंग, सरसों, तिल, तैल, इञ्जिनियरिंग और स्टेशनरी सामान प्रायः तेज रहे। अलसी में घटबढसे रुख तेजीका रहे। हल्दी, मिर्च, सुपारी, तोरिया, चवला, मूंगफलीमें मन्दीके योग हैं। बृटेन तथा यूरोपीय राष्ट्रोंको यह पक्ष अनिष्ट सूचक है। रूस अमेरिकामें वैमनस्य बढे। चीनमें देश विप्लव युद्धादिका भय, भारतमें चारों ओर अशान्ति रहे।

वर्षा योग—बादल बहुत होवे, दक्षिणोत्तर भागमें कहींर वर्षा भी होवे, पूर्वी पश्चिमी विभागमें वर्षाकी खेंच रहे। बम्बई प्रान्तमें खण्ड वृष्टि हो। मध्य भारतमें अवर्षणका भय है। राजपूतानामें वायुके साथ वर्षा अधिक होनेका भय है। उडीसामें अति वृष्टिका योग है। सिन्ध प्रान्तमें खण्ड वृष्टिसे फसल में हनिके योग हैं।

भाद्रपद शुक्लपक्ष

(ता० ४ से १८ सितम्बर तक)

ति० १ को रुई बाजार तेजीका जान पड़ता है। यह तेजी ति० ३ तक रहेगी। बीच २ में मन्दीके रियेक्शन भी आएंगे। ति. ५ से ति. १२ तक मन्दी रहकर ति० १३ से बाजार ऊंचा जायगा। इसमें १५) २०) की घटाबढी होनेका योग है। चान्दी बाजार ति० १ से ३ दिन तेजीका चलकर ति० ८ तक टोन मन्दीको झुकेगा। ति० ६ से तेजी का उछाला आयगा, यह तेजी दिन ४ तक रह कर ति० १५ का बाजार घटा बढ़ीका जाकर रुख तेजीका रहेगा। सोनेका बाजार इस पक्षमें प्रायः जनरल तेजीका जान पड़ता है। मन्दीके रिएक्शनमें सौदाकर तेजीका लाभ उठाएं। अलसी, अफीम, एरण्डा तिल, तैल, ति० ५ से मन्दे जावेंगे। गेहूं, चावल, मसूर, गुड़, राई, जीरा, सरसोंका भाव तेज रहेगा। मूंग, मोठ, उड़द, हल्दी, मिर्च, सुपारी, तोरियाका भाव मन्दा होवे। भारतको यह पक्ष उन्नति कारक एवं प्रगतिशील रहेगा। भारत सरकारकी ओरसे जनहितार्थ कई नई आयोजनाएं प्रकट की जाएंगी। धारासभामें कई नये २ सुझाव पेश होंगे। किसी रेल्वे में दुर्घटना या हड़तालकी सम्भावना है।

वर्षाविचार—इस पक्षमें सर्वत्र वर्षाकी खेंच रहे। ति० ७. से १० तक कहीं कहीं सामान्य वर्षा होगी। पूर्वीय प्रान्तमें बादलों का तूफान होगा। मद्रासमें वर्षा खूब होवे। मध्यभारतमें वर्षा स्वल्प होवे।

आश्विन कृष्णपक्ष

(ता० १६ सितम्बरसे २ अक्टूबर तक)

रुईमें घटीबढ़ी अधिक होनेके योग हैं, ति० १ से ४ दिन तक ५) १०) का हेरफेर होकर रुख मन्दीका रहे। ति० ५ से १० तक विशेष घटबढ न होते एक तर्फी बाजारका टोन रहेगा। ति० ११ से तेजी चलेगी, यह तेजी ४) ६) की है। चांदी बाजार इस पक्षमें ति० २ से ७ तक तेजी, ति० ८ से ११ तक मन्दीके योग हैं। बादमें तेजी होवे। चान्दीमें ४) ५) की घटाबढ़ी होगी। सोनेका बाजार जनरल मंदी क है, फिर भी ति० ६ से ति० १२ तक तेजीका उछाला आयगा और २) ३) की घटा बढ़ी होगी। धान्यभाव तेज रहें। गेहूँ, चावल, जौ, चणा, मूंग, मसूर, मोठ, बाजरा तेज हो। रसपदार्थ, गुड़, शक्कर,

जीरा, राई, सरसों, तिल, तेल, मजीठ ति० १२ से तेज हो। मिल शेयर ति० ७ से तेज रहे, लोहा स्टील जस्त पीतल सस्ता। ताम्बा, खनिज पदार्थ बीज औषधि आदि पदार्थ तेज होनेके योग हैं। भारतीय राष्ट्रीय पक्ष बलवान् बने, धारा सभामें कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत होंगे। पूर्वीय और दक्षिणी देशोंमें उपद्रव अधिक होवे। यूरोप और अमेरिकाके कूटनीतिज्ञ पाकिस्तानको आन्तरिक सहयोग देकर भारतको हानि पहुँचानेका दुष्प्रयत्न करेंगे। सीमाके विवाद बढ़ेंगे। पश्चिमी पाकिस्तान सामाजिक और आर्थिक कठिनाइयोंमें फंसेगा।

वर्षाविचार—इस पक्षके उत्तरार्द्धमें वर्षा अधिक होने से कहीं २ जन धनकी हानि होगी। दक्षिणी व पश्चिमी विभागमें खण्ड वृष्टि हो, तथा कहीं बिजली गिरे। उत्तरीय भारतमें बादल होवें। पञ्जाब राजपूतानामें वर्षा होवें। मध्यप्रान्तमें वर्षा न्यून रहे, कृषकोंको सन्तोषप्रद वर्षा सर्वत्र हो जाने से आनन्द रहे। दक्षिणमें खेती उत्तम होवें।

आश्विन शुक्ल पक्षः

(ता० ३ से १८ अक्टूबर तक)

ति० ७ तक रुईमें घटाबढ़ी विशेष होगी, ति० २ से ति० ५ तक रुईमें १०) १५) की घटाबढ़ी होकर रुख मन्दा रहे, बीच २ में तेजीके उछाले भी आयेंगे। ति० ६ से रुईमें तेजीके योग हैं। यह तेजी ति० १५ रविवार तक २०) २५ तक होनेका योग है। ति० १५ सोमवारको बाजार कुछ नीचा जाकर वायदा बाजार बन्द होगा। चांदीमें ति० २ से तेजी प्रारम्भ होगी, यह तेजी ति० ६ से अधिक होगी ५) ७) तक बढ़नेकी सम्भावना है, बीच २ में मन्दीके रिएक्शन आते हुए भी रुख तेजीका ही होगा। सुवर्णमें ति० ५ से ६ तक मन्दी आकर बादमें रुख तेजीका जान पड़ता है। सोनेमें ३)४) टका सुधरनेका योग है। मूंग मोठ, बाजरा, ज्वारका भाव मन्दा और सब धान्यके भाव प्रायः तेज रहेंगे। मिल आदि कारखानों तथा रेलवे वर्कशापमें असन्तोष बढ़नेसे गड़बड़ होगी। राजकीय कार्यमें उन्नति एवं परराष्ट्रीय महत्वपूर्ण घटनाएं होवें। कहीं २ वायुयान दुर्घटनाएं भी होवें। संसारमें रोग और पारस्परिक अविश्वासकी वृद्धि।

रुई चांदी सोना गुड़ खांडकी अनुभूत रिपोर्ट

[लेखक—ज्यो० भू० दै० र० श्री पं० गिरिधारीलालजी शर्मा 'दैवज्ञ']

(१) प्रथम सप्ताह

आषाढ शुक्ला ११ ता० १६ जुलाई ४८ से २३ जुलाई तक।

चांदी सोना रुई ३ दिन तेज होके निश्चय मंदा होगा। ४ दिन तक। ता० १६-२० में रुई सोना चांदीमें दोनों ही दिन धड़ाकेका मन्दी आनेका योग है। नहीं एक दिन तो अवश्य मन्दी होगी। गुड़ साधारण रहेगा। हमारा ध्यान रुई चांदीमें ता० १६ को मंदा और २० को तेजीका है। ता० २१ को सोना चांदी तेज। यह पक्ष पूर्ण उत्पातों का है।

(२) द्वितीय सप्ताह

ता० २४ से ३१ जुलाई तक रुई में २०।३० टका की खरडीमें मंदी, परन्तु कहीं—ता० २४ को ही नहीं बेच देना, ता० २७ के सायंकालसे मन्दी होगी। ता० २६ से या २८ से सोना चांदी तेज होगा। गुड़ भी तेज हो के मन्दा होगा, ता० २८ या २६ से गुड़ मन्दा होगा। ता० २६ को रुईका फीचर जरूर तेज, अंकोमें ६ या ० शुभ होगा।

(३) तृतीय सप्ताह

ता० १ से ५ अगस्त तक रुईमें घटबढ़ रहेंगी।

दो तरफा लगाके जिधर निकले उधर ही बदल दो चांदी सोनामें तेजी। ता० २ को चांदी सोना तेज। ता० ३ को ४ बजे तक सब वस्तु तेज, बादमें मंदी। ता० ४ ५ में सब वस्तु मन्दी। पूरा विश्वास ता० ५ पर रक्खो। ता० ४ को अन्न अलसी की तेजी।

(४) चौथा सप्ताह

ता० ६ से १२ अगस्त तक सोना चांदी तेज। रुईमें घटबढ़से खंडीमें २०) २५) की तेजी, परन्तु एकतरफी नहीं है। गुड़की तेजी। ता० ६।७ दोनों दिन नहीं भी तो एक दिन तो रुई चांदीमें निश्चय तेजी आवेगी। ता० ६ को चांदी तेज, रुई मंदी। ता० १० को यदि चांदी सोना तेज रहे तो ८ दिन तक तेजी समझो ता० १० को घटबढ अच्छी होगी।

(५) पांचवां सप्ताह

ता० १३ से १६ अगस्त तक रुई और सोना चांदी में जरूर तेजी एक तरफी होगी। घटे वहां खरीदो। गुड़ खांड तेजीमें बेचो, कुछ मंदीका ध्यान है। ता० १३को रुई चांदी तेज होगी। ता० १४ को घटबढ़से सब वस्तु मन्दी होगी। वहां पर खरीदना। ता० १८ को दो बजे तक सब वस्तु इकतर्फी तेज रहेगी। ता० १६ को सब वस्तु मन्दी होगी।

नोट—ता० ६ अगस्त से १६ अगस्त तक चांदीमें ५ से १०) रु० तक की तेजी।

(६) छठा सप्ताह

ता० २० से २५ अगस्त तक रुई चांदी मन्दी। गुड़ खांड भी मन्दी। ता० २३-२४-२५ इन ३ दिनोंमें अच्छी मन्दी।

(७) सातवां सप्ताह

ता० २६ अगस्त से ३ सितम्बर तक व्यापार बहुत उथल पुथल होगा। पहले तेज होके मन्दा होगा। यहां पर गुड खांड तेज रहेगा। ता० ३० या ३१ तक रुई चांदी तेज पीछे चांदीकी तो पूर्ण नहीं कह सकते, परन्तु रुई अवश्य मन्दी। ता० २७।२८ को अच्छी घटवढ और तेजी। ता. ३०-३१ में एक विशेष मन्दी होगी। हमारा ध्यान ऐसा है कि ता० ३० के ४ बजे से ता० ३१ तक मन्दी रहे। ता० २ को अच्छी घटे और बादमें तेजी।

(८) आठवां सप्ताह

ता० ४ से ११ सितम्बर तक रुई चांदीमें साधारण बजार रहेगा। एक दिन तेजी एक दिन मन्दी, वैसे कुछ तेजी हो हो के मन्दा होगा। ता० ७,८ तेजी। गुड खांडमें तेजी। ता० ६।१० में घटबढ़। ता० ११ को तेजी।

(९) नौवां सप्ताह

ता० १२ से १६ सितम्बर तक—बढे वहां रुई चांदी सोना बेचने की राय है। ता० १२।१३।१४ प्रायः मंदी। ता० १५ को जगत्में और व्यापारमें चित्र विचित्र काम होगा। हमारा ध्यान तेजीका हैं। ता० १६ की सायंकाल बद बजार जिस वस्तुका तेज होवे उसका व्यापार तेजीका करो, मन्दा होवे तो उसका ता० १८ तक मन्दा करो।

(१०) दशवां सप्ताह

ता० १६ से २६ सितम्बर तक—रुईमें तेजी। चांदीमें साधारण तेजी, सोनेमें तेजी। ता० २२-२३में सब वस्तु तेज। ता० २४-२५ घटबढ विशेष होके मन्दी। यहां पर गुड खांड की तेजी होगी।

(११) ग्यारहवां सप्ताह

ता० २७ सितम्बर से २ अक्टूबर तक सोना चांदी गुड़ तेज। खांड रुई मन्दी। ता० ३० सितम्बर और १ अक्टूबर को देखने योग्य घटबढ होगी। ता० २ को घटबढ से सब वस्तु मन्दी। वैसे इस सप्ताहमें सोना गुड़ गेहूँ अलसी तेज रहेगें।

(१२) बारहवां सप्ताह

ता० ३ से ११ अक्टूबर तक—ता० ५ तक तो रुई चांदी साधारण मन्दा रहेगा। ता० ६ से दोनों में घटबढ अधिक और तेजी। ता० ७।८ को रुई चांदी निश्चय तेज। ता० ४ को विशेष तेज होगा। घटबढ कह नहीं सकते किधर होगा, परन्तु एकतरफा होगा। बाजारका पीछा करो लाभ होगा। ता० ११ को रूई मन्दी, चांदी तेज।

फीसमें भारी रियायत । आज ही ग्राहक बनें । बाजारोंमें भारी तूफान ।

व्यापारसे धन—

कमानेका अचूक समय

सोना १२०) या ७५) चांदी २१८) या ६०) रुई ८५०) या ५५०) कब ?

सोना चांदी रुई अलसी शींगदाणा कालीमिर्च सरसों ऐरन्डा डीफर्ड डांइग लाख आदि वस्तुओं के भावोंमें वह भयावह तूफान होगा । और हर एक वस्तुओंके बाजार चतुरसे चतुर व्यापारियोंको चकमा देकर एकाएक इकवर्फा चलेंगें । इससे कई व्यापारी सफाचट और कई लखपति बन सकेंगें । धनकी ताकतसे बाजारों पर काबू लगाने वाले व्यापारी भी चेतें और जगह २ तेजी या मन्दीकी पार्टी वाली सिन्डिकेटें सावधान ही जांय । आगेके योगोंको देखनेसे स्पष्ट है कि भारी तूफान इन पार्टियोंको भी भुगतान चुकानेमें हिला देंगे । गत वर्षोंसे ज्यादा इस समय घटबढ होकर बाजार तूफानी हो जायेंगे । मार्केकी तूफानी चालको पहले ही जानकर लाभ लेना हो तो चेतें, कम जोखमसे सैंकड़ों हजारों लाखों कमाना है तो चेतें और आज हो सत्येश्वर ज्योतिष कार्यालयके ग्राहक बनें जिसकी प्रशंसा बड़े २ राजा महाराजा एवं बड़े व्यापारियोंने की है । सं० २००५ के चैत्रके स्वाध्यायके अंकमें हमने जो वार्षिक मेंबर १ वस्तुके (सिर्फ ३६) में बनानेकी घोषणा की थी उसमें ग्राहकोंके शीघ्र ही ज्यादा हो जाने से कई व्यापारियोंके मनीआर्डर वापिस करदेने पड़े और उन लोगोंके विशेष आग्रहसे हमने फिर कुछ सुविधा देना सोचा है आशा है, मान्य ग्राहकगण शीघ्रसे शीघ्र ग्राहक बनेंगे ।

(१) १ अगस्त सन १६४८ से १ अप्रेल सन १६४६ तककी आगामी ८ माहकी एक वस्तुकी मासिक रिपोर्ट की फीस ५५) फीस मनीआर्डरसे ही भेजनी चाहिये ।

(२) जो व्यापारी बहुत समयसे हमारी खास स्पेशल रिपोर्ट मासिक लेते रहें हैं उनके लिए भी जैसा कि उनके पत्रोंसे ज्ञात होता है रियायत चाहते हैं, उन्हें नोट कर लेना चाहिए कि आगे अगस्तसे १ वस्तु का १ माहका चार्ज ६१) होगा और आगामी १ अगस्त ४८ से १ अप्रेल ४६ तककी ८ माहकी रियायती फी० २५०) होगी जिसमें १५०) अभी और १००) नवम्बर सन १६४६ में देने होंगें ।
इसलिए शीघ्र ही ग्राहक बनियेगा ।

(३) दोनों तरहकी रिपोर्टें हर अंग्रेजी माहकी २५ वीं तारीखको भेजी जावेंगी ।

(४) ज्योतिषियों या ज्योतिष कार्यालयोंको किसी भी दरमें रिपोर्ट नहीं भेजी जावेगी ।

(५) हमारी खास स्पेशल मासिक रिपोर्ट में मई सन १६४८ कीमें चांदी ऊंचे में १८०।८२ बिकेगी और वापिस मईमें ही १६७६८ हो जायगी यह स्पष्ट लिखा था । इसी तरह हमारी रुई सोनेकी रिपोर्टें भी ६५।६७ प्रतिशत खरी हुई हैं । जो व्यापारी हमारी खास स्पेशल मासिक रिपोर्टको गलत साबित करेंगें उन्हें १००) इनाम दिया जावेगा । वास्ते आज ही ग्राहक बनकर व्यापारसे मनमाना धन कमायें वर्ना समय चूकेसे व्यर्थकी नुकसानी व फीस डबल देनी होगी ।

ज्योतिषरत्न पं० हरिशंकर शास्त्री देवज्ञभूषण, श्रीसत्येश्वर ज्योतिष-कार्यालय

मु० पो० खिड़कीयां, (सी० पी०)

त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय

['श्रीविश्वविजय—पञ्चाङ्ग'से]

आषाढ शु० ११ शुक्रवार ता० १६ जुलाई देवशयनी एकादशी व्रत स्मार्त्त गृहस्थोंके लिए, कर्कसंक्रान्ति मु० ४५ पुण्यकाल मध्यान्ह पर्यन्त

१२ शनिवार ता० १७ ,, एकादशीव्रत वैष्णव निम्बार्कसम्प्रयका।

१३ रविवार ता० १८ ,, प्रदोष व्रत।

१५ मंगलवार ता० २० ,, व्यास पूजा श्रीगुरुपूर्णिमा सत्यव्रत वायुपरीक्षा।

श्रावण कृष्ण ३ शनिवार ता० २४ ,, श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदयस्टे० टा० ६। ३६

११ रविवार ता० १ अगस्त कामिका एकादशी व्रत लो० तिलक निधन दिवस।

१२ सोमवार ता० २ ,, सोमप्रदोष व्रत।

३० गुरुवार ता० ५ ,, हरियाली अमावस।

श्रावण शुक्ल २ शुक्रवार ता० ६ ,, चन्द्रदर्शन।

३ शनिवार ता० ७ ,, मधुश्रवा श्रावणी तीज स्व० रवीन्द्रनाथ ठाकुरका निधन दिन।

५ सोमवार ता० ६ ,, नागपञ्चमी।

७ बुधवार ता० ११ ,, श्री १०८ गो० तुलसीदास जयन्ती।

८ गुरुवार ता० १२ ,, मेला श्री नयनादेवी व चिन्तपूर्णी।

११ रविवार ता० १५ ,, भारतीय स्वतन्त्रता दिन, पवित्रा एकादशी व्रत।

१२ सोमवार ता० १६ ,, सोमप्रदोष व्रत सिंहसंक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल, पर्वाहमें।

१५ गुरुवार ता० १६ ,, ऋषितर्पण श्रावणी १५ रक्षाबन्धन प्रातः स्टे० ६।१७ उप० सत्यव्रत।

भाद्रपद कृष्ण ३ रविवार ता० २२ ,, कज्जली तीज

४ सोमवार ता० २३ ,, श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ६।२

५ बुधवार ता० २५ ,, हल ६ चन्द्रषष्ठी

७ शुक्रवार ता० २७ ,, श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत स्मार्त्त ग्रहस्थोंके लिए, चन्द्रोदय स्टे० टा० ११।७

८ शनिवार ता० २८ ,, गुग्गा ६ जन्माष्टमी व्रत वैष्णव सम्प्रदायका

११ सोमवार ता० ३० ,, अजा एकादशी व्रत स्मार्त्त गृहस्थोंका

१२ मंगलवार ता० ३१ ,, वैष्णवोंका एकादशीव्रत।

भाद्रपद कृष्ण १३ बुधवार ता० १ सितम्बर प्रदोष व्रत।

३० शुक्रवार ता० ३ ,, कुशोत्पाटिनी अमावस, सतीपूजन।

भाद्रपद शु० १ शनिवार ता० ४ सितम्बर चन्द्रदर्शन।

२ रविवार ता० ५ ,, वाराह जयन्ती।

३ सोमवार ता० ६ ,, हरितालिका ३ व्रत, पत्थर चौथ, चन्द्रदर्शनैनिषिद्ध, चन्द्रास्त स्टे० टा० ८।४०

भाद्रपद शु० ५ मंगलवार ता० ७ सितम्बर ऋषि पञ्चमी।
७ गुरुवार ता० ९ ,, सूतड़ा ७ मुक्ताभरण ७।
८ शुक्रवार ता० १० ,, श्री राधाष्टमी श्रीदधीचि जयन्ती।
९ शनिवार ता० ११ ,, श्री चन्द्र ९ उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव।
११ सोमवार ता० १३ ,, पद्मा (जलझूलनी) एकादशी व्रत स्मार्त्त गृहस्थोंका।
१२ मंगलवार ता० १४ ,, वामन १२ मेला अम्बाला पटियाला, वैष्णव ११ व्रत।
१२ बुधवार ता० १५ ,, प्रदोषव्रत, श्री १०५ मान् धर्ममार्तण्ड सोलन नरेशका जन्मदिवसोत्सव।
१३ गुरुवार ता० १६ ,, कन्या संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल अपराह्णपर्यन्त।
१४ शुक्रवार ता० १७ ,, अनन्त १४ व्रत सत्यव्रत मेला छपार बाबा सोढ़ल जालंधर।
१५ शनिवार ता० १८ ,, प्रौष्ठपदी श्राद्ध।
आश्विन कृष्ण १ रविवार ता० १९ ,, पितृपक्ष महालयश्राद्धारम्भ।
४ बुधवार ता० २२ ,, श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ८।३५ स्व० श्री विट्ठलभाई पटेल निधन दिन
९ सोमवार ता० २७ ,, सौभाग्यवती श्राद्ध।
११ बुधवार ता० २९ ,, इन्दिरा एकादशी व्रत।
१२ गुरुवार ता० ३० ,, प्रदोष व्रत।
३० शनिवार ता० २ अक्टूबर सर्वपितृ अमावस महालय श्राद्ध समाप्ति स्व० श्री महात्मा गांधी [जन्म दिन
आश्विन शु० १ रविवार ता० ३ ,, नवरात्रारम्भ, घटस्थापन, मातामहश्राद्ध।
२ सोमवार ता० ४ ,, चन्द्रदर्शन।
६ शुक्रवार ता० ८ ,, श्री सरस्वत्यावाहन।
७ शनिवार ता० ९ ,, श्री सरस्वती पूजन।
८ रविवार ता० १० ,, दुर्गाष्टमी महा ८ श्री सरस्वती बलिदान।
९ सोमवार ता० ११ ,, महा ९ सरस्वती विसर्जन।
१० मंगलवार ता० १२ विजया १० दशहरा राजचिन्हपूजा।

लेखक वृन्द!

आपका लेखनी-प्रसाद पाकर 'श्रीस्वाध्याय' पुष्ट एवं समृद्ध हो रहा है। हम तथा 'श्रीस्वाध्याय' के पाठक हृदयसे आपके कृतज्ञ हैं। आगामी विजयादशमी (ता० १२ अक्तूबर १९४८) पर 'श्रीस्वाध्याय' का आठवें वर्षका 'नववर्षाङ्क' पहले सब विशेषाङ्कोंसे अधिक सुन्दर एवं आकर्षक रूपमें प्रकाशित हो रहा है। अतः आप अपना लेख, कविता, कहानी आदि संक्षिप्त हृदयस्पर्शी मौलिक सुन्दर भाषामें श्रावण शु० १५ ता० १९ अगस्त तक कार्यालयमें सम्पादकके पास भेजनेकी कृपा करें। इस अवधिके पश्चात् आने वाला कोई भी लेख 'नववर्षाङ्क' में प्रकाशित न हो सकेगा। अधूरे अस्पष्ट और कागजके दोनों ओर लिखे हुए लेख भी प्रकाशित न हो सकेंगे।

विनीत—

सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)

त्रैमासिक राशिफल

[यह राशिफल प्रत्येक व्यक्तिको बराबर मिले यह आवश्यक नहीं है। सूक्ष्म यथार्थ फलादेश तो अपनी जन्मकुण्डली एवं वर्षफलसे अनुभवी विद्वान् दैवज्ञों द्वारा ही ज्ञात हो सकता है। यह मध्यम मान हैं। ग्राहकोंके विशेष आग्रह पर यह राशिभविष्यक क्रम इस अंकसे पुनः प्रारम्भ कर रहे हैं। —सम्पादक]

सौर श्रवण मास

(ता० १६ जुलाईसे १६ अगस्त तक)

मेष—मानसिक विकलता, २५ जुलाईसे १६ अगस्त तक व्यापारमेंसाधारण लाभ। मित्रोंसे वैमनस्य, माता या परिवारमें किसी वयोवृद्धा स्त्रीको कष्ट। यात्रामें कष्ट। अकारण शत्रुता। ता० १८।१६।२०।२८।२६।३० जुलाई और ६।७।८ अगस्त चिन्ता एवं व्यय कारक हैं, इन तारीखोंमें सावधानी से कार्य करें।

वृषभ—उदररोग वायुविकार, सन्तान कष्ट, चित्त खिन्न, व्यापारमें साधारण लाभ। २७ जुलाईसे बाद कार्यमें सफलता या कोई शुभ सम्वाद मिले। परिवारमें सन्तोष ता० १८।१६।२०।२८।२६।३० जुलाई और ६।७।८ अगस्त नेष्ट दिन हैं।

मिथुन—स्वास्थ्य निर्बल, पारिवारिक कलह या स्त्री सन्तानको कष्ट। धन व्यय। व्यापारमें साधारण लाभ ता० २१, २२, २३, ३०, ३१ जुलाई और १, ८, ६,१०, अगस्त नेष्ट दिन हैं।

कर्क—मानसिक चिन्ता, आक्षेपका भय है, सावधान रहें। वृथा व्यय, पारिवारिक अशान्ति। व्यापारमें सामान्य लाभ। ता० ६ अगस्त तक उद्योगमें सफलता। ता० १५, २३, २४, २५, २६, २७ जुलाई और १०, ११ १२, अगस्त नेष्ट दिन हैं।

सिंह—स्वजन चिन्ता, नये कार्यका विचार या स्थानान्तर गमन, वायुविकार या नेत्र रोग। लाभ कम व्यय अधिक, पारिवारिक असन्तोष। ता० १६, १७, १८, २६, २७, २८ जुलाई और ४, ५, १२, १३, १४ अगस्त नेष्ट दिन हैं।

कन्या—दुर्बलता, पर्यटन, नये मित्र या अधिकारी से भेट। कार्य सिद्धि। रक्त विकार, व्रण या चोट लगनेका भय है, सावधान रहें। स्त्रीको कष्ट। ता० १८, १६, २०, २८, २६, ३० जुलाई और ६, ७, १४, १५, १६ अगस्त अशुभ दिन हैं।

तुला—शत्रुहानि, अचानक यात्रा, व्यापरमें उत्कर्ष दिखाई देते हुए भी लाभ साधारण, व्यय अधिक। स्त्री सन्तान को कष्ट। ता० २१, २२, २३, ३०, ३१ जुलाई और १, ८, ६ अगस्त अशुभदिन हैं।

वृश्चिक—स्वास्थ्य मध्यम, स्थानान्तरकी चिन्ता, व्यापारमें उन्नति, लाभ साधारण, अनेक मानसिक चिन्ताएं। ता० २३, २४, २५ जुलाई और २, ३, १०, ११, १२ अगस्त नेष्ट हैं।

धनुः—शुभ कार्यमें व्यय, लाभ कम, व्यय अधिक, यात्रामें कष्ट, व्यापारमें उन्नतिके कारण बनेंगे। स्वास्थ्य साधारण रहे। स्त्री सुख उत्तम। ता० १६, १७, १८, २६, २७ जुलाई और ४, ५, १२, १३, १४ अगस्त अशुभ दिन हैं।

मकर—गुप्त चिन्ता, शत्रु पीड़ा, लाभसे व्ययाधिक्य, स्त्री कष्ट। पारिवारिक सुख सामान्य। गृहकलह। ता० १८, १६, २०, २८, २६, ३० जुलाई और ६, ७, १५, १६ अगस्त अशुभ दिन हैं।

कुम्भ—बन्धुकष्ट, स्त्री सन्तानकी ओरसे चिन्ता। व्यापारमें लाभ, धार्मिक कार्योंमें बाधा, वायु-विकार। ता० २१, २२, २३, ३०, ३१ जुलाई और १, ८, ६, अगस्त अशुभ दिन हैं।

मीन—गृह-चिन्ता, स्त्री या सन्तानको कष्ट, यात्रा

में व्यय । पारिवारिक अशान्ति । नये कार्यकी चिन्ता । ता० २३, २४, २५ जुलाई और १०, ११, १२ अगस्त अशुभ दिन है ।

सौरे भाद्रपदमास

(१६ अगस्तसे १६ सितम्बर तक)

मेष—स्वास्थ्य मध्यम, धन चिन्ता । मानसिक तथा पारिवारिक विकलता, व्यापार मध्यम । व्यर्थ विवाद । ता० २२, २३, २४, ३१ अगस्त और १, २, ८, ६ सितम्बर चिन्ता व्ययादिकारक नेष्ट दिन हैं ।

वृषभ—कार्यव्यवसायमें उन्नति । बन्धु कष्ट, स्त्री चिन्ता, यात्रा, मित्रोंसे विवाद अकारण विरोध । ता० १६, २४, २५, २६ अगस्त और २, ३, ४, ११, १२, १३ सितम्बर नेष्ट दिन हैं ।

मिथुन—व्यवसायमें उन्नति, परिश्रमसे कार्यसिद्धि लाभ साधारण, व्यय अधिक, स्त्रीसुख मध्यम । स्वास्थ्य निर्बल । ता० १७, १८, १६, २७, २८, २६ अगस्त और ४, ५, ६, १३, १४, १५ सितम्बर नेष्ट दिन हैं ।

कर्क—स्वास्थ्य हानि, मानसिक विकलता, आर्थिक कष्ट । व्यवसायमें विघ्न । स्त्री सुख उत्तम, गुरुजनों को पीड़ा । ता० १६, २०, २१, २६, ३०, ३१ अगस्त और ६, ७, ८ सितम्बर नेष्ट हैं ।

सिंह—सन्ततिसुख, पूर्वार्धमें चित्त प्रसन्न, उत्तरार्धमें खिन्नता । व्यवसाय सामान्य, व्यय विशेष। धर्ममें बाधा। ता० २२।२३।२४।३१ अगस्त और १।२।८।६।१० सितम्बर अशुभ दिन हैं ।

कन्या—मास अच्छा नहीं है । अकारण चिन्ताएं बढ़ेंगी । व्यवसायमें बाधा । रोगवृद्धि, धनहानि, धर्ममें प्रवृत्ति । यात्रा । ता० १६।२४।२५।२६ अगस्त और २।३।४।११।१२।१३ सितम्बर शुभ नहीं है।

तुला—पारिवारिक सुख, लाभ उत्तम, शिर वा नेत्रमें पीड़ा । पद या व्यवसाय वृद्धि । ता० १७।१८।१६।२७।२८ अगस्त और ४।५।६।१३।१४।१५ सितम्बर शुभ नहीं है ।

वृश्चिक—स्वास्थ्य उत्तम, स्थावर सम्पत्तिकी चिंता, लाभ मध्यम, व्यापारमें उन्नति । ता० १६-२०-२१-२६-३०-३१ अगस्त और ६-७,८ सितम्बर शुभ नहीं ।

धनुः— जल वा अग्निभय, स्त्री सुख उत्तम, लाभ स्वल्प, व्यापार उन्नति पर, उत्तरार्धमें मानसिक कष्ट, परिश्रम अधिक । ता० २२-२३-२४-३१ अगस्त और १।२।८।६।१०सितम्बर नेष्ट दिन हैं ।

मकर—गुप्तचिन्ता, परमार्थकी ओर से विमुखता, भोग विलासमें प्रवृत्ति, मित्र सम्बन्धियोंसे वैमनस्य, व्यय अधिक । ता० १५।१६अगस्त और २।३।४।११।१२।१३ सितम्बर नेष्ट हैं ।

कुम्भ—पहले लाभ मध्यम फिर व्यवसायमें उन्नति । स्त्री कष्ट, बन्धु—चिन्ता, मानसिक क्लेश । शत्रुता । ता० १७,१८,१६,२७,२८,२६ अगस्त और ४,५,६,१३,१४, १५, सितम्बर शुभ नहीं है ।

मीन—पारिवारिक चिन्ता, कार्य सिद्धिमें विघ्न, पूर्वार्धमें प्रसन्नता, उत्तरार्धमें चित्त खिन्न । यात्रा । गुप्तरोग ता० १६,२०,२१,२७,२८,२६ अगस्त और ४,५,६, सितम्बर नेष्ट दिन हैं ।

सौर आश्विन मास

(ता० १६ सितम्बर से १६ अक्टूबर तक)

मेष—वस्त्र भोजनादिमें व्यय, विवादमें जय, पुण्यमें रुचि, स्वास्थ्य मध्यम, स्त्री चिन्ता। ता० १५,१६,१८,१६ २० सितम्बर और ६,७,८, अक्टूबर चिन्ताकारक हैं ।

वृषभ—स्त्री पुत्र चिन्ता गृहकलह, उत्तम भोजन, व्यय अधिक, मासान्तमें प्रसन्नता । २१,२२,२३,३० सितम्बर और १,८,६,१० अक्टूबर अशुभ ।

मिथुन—उत्साह वृद्धि, यात्रा, व्यवसायमें उन्नति, लाभ साधारण, पारमार्थिक कार्योंमें व्यय विशेष, स्त्री या सन्तानकी ओर से विकलता । ता० २३,२४,२५, सितम्बर और २,३,११,१२ अक्टूबर अशुभ हैं ।

कर्क—स्वास्थ्य हानि, व्यापारमें साधारण लाभ,

सामाजिक उलझनें, मित्रसे अनबन, चित्तमें विकलता, भोजनवस्त्रादिमें व्यय विशेष। ता० १६,१७,१८,२५,२६, २७ सितम्बर और ४,५,१३,१४ अक्टूबर चिन्ता कारक है।

सिंह—चित्तमें उद्वेग, व्यर्थ विवाद, स्त्री कष्ट, लाभव्यय समान। परिश्रम अधिक, मासान्त समाधान कारक रहे। ता० १८,१९,२०,२८,२९ सितम्बर और ६,७,८ अक्टूबर चिन्ता कारक हैं।

कन्या—उदरविकार, मानसिककष्ट, अचानक हानि परिवारमें क्लेश। ता० २१,२२,२३ सितम्बर और ४,८, ९,१० अक्टूबर क्लेश कारक हैं।

तुला—गुप्ताङ्गमें पीड़ा, उदर विकार, विस्फोटक या चोटका भय। लाभ उत्तम। ता०२३,२४,२५ सितम्बर और २,३,१०,११,१२ अक्टूबर अशुभ दिन हैं।

वृश्चिक—प्रसन्नता, स्त्री पुत्र सुख उत्तम, यशवृद्धि, लाभ उत्तम, मित्रमिलन, मध्यमें कुछ विकलता और व्ययाधिक्य। ता० २५,२६,२७ सितम्बर और ४,५,१३,१४,१५ अक्टूबर अशुभ दिन हैं।

धनुः—भाग्योन्नतिमें बाधा, स्वास्थ्यमध्यम, उत्तरार्धमें सम्मान या पदवृद्धि, व्यवसायमें सफलता। शुभकार्य एवं विलास वस्तुओंमें व्यय। ता० १८,१९,२०,२८,२९ सितम्बर और ६,७,८,१५,१६ अक्टूबर शुभ नहीं है।

मकर—किसी बने बनाये कार्यमें विघ्न, परिश्रम अधिक, व्यवसायमें साधारण उन्नति, पारिवारिक चिन्ता, मासान्तमें उद्वेग। ता० २१,२२,२३ ३० सितम्बर और १,८,९,१० अक्टूबर शुभ नहीं है।

कुम्भ—बन्धु विरोध, स्त्री द्वारा व्यय। यात्रा, मानसिक उद्वेग। मातृकष्ट। मासान्तमें क्षणिक प्रसन्नता। ता० २३,२४,२५ सितम्बर और २,३,४,१०,११,१२ अक्टूबर अशुभ है।

मीन—स्वास्थ्य हानि, मनमें विकलता, मध्यममें किसी श्रेष्ठ पुरुषके मिलनसे सन्तोष, यात्रा, स्त्रीकष्ट, पारिवारिक क्लेश। मासान्तमें सदनुष्ठान, शुभ व्यय। ता० १७,१८, २५,२६,२७ सितम्बर और ४,५,१३,१४,१५ अक्टूबर शुभ दिन नहीं हैं।

चांदी और गुड़की दैनिक तेजी मंदी

[लेखक—श्री यादवचन्द्रजी जैन ज्योतिर्विद्]

ता० २२ जुलाई गुरुवार—चांदी मन्दी।
ता० २४ जुलाई शनिवार—चांदी तेज होकर मन्दी फिर तेज, गुड़ तेज।
ता० २६ जुलाई सोमवार—मन्दी होकर रातको तेज गुड़ तेज।
ता० २७ जुलाई मङ्गलवार—घटबढ़ होकर तेज।
ता० २८ जुलाई बुधवार—चांदी २) तेज, गुड़ मन्दा।
ता० २९ जुलाई वृहस्पतिवार—चांदी मन्दी, गुड़ मन्दा।
ता० ३० जुलाई शुक्रवार—चांदी २)३) मन्दी, तेजीका रियक्शन, गुड़ तेज।
ता० ३१ जुलाई शनिवार—मन्दी होकर तेज।
ता० २ अगस्त सोमवार—चांदी ।॥) मन्दी खुलकर १।) १॥) तेज फिर मन्दी फिररातको तेज, गुड़मन्दा होकर तेज।
ता० ३ अगस्त मङ्गलवार—चांदी तेज, गुड़तेज।
ता० २-३ अगस्तमें मन्दीका डबल झटका भी आ सकता है
ता० ४ अगस्त बुधवार—चांदी मन्दी होकर तेज।
ता० ५ अगस्त वृहस्पतिवार—चांदी मन्दी।
ता० ६ अगस्त शुक्रवार—मन्दी होकर तेज, गुड़ तेज घटबढ़ बहुत रहे।
ता० ७ अगस्त शनिवार—मन्दी होकर तेज।
ता० ९ अगस्त सोमवार—तेजीसे मन्दी।
ता० १० अगस्त मङ्गलवार—गुड़ तेज, चांदी तेज।
ता० ११ अगस्त बुधवार—घटबढ़ होकर तेजी।
ता० १२ अगस्त वृहस्पतिवार—चांदी गुड़ मन्दे।
ता० १४ अगस्त शनिवार—चांदी तेज गुड़ मन्देसे तेज।
ता० १६ अगस्त सोमवार—चांदी गुड़ तेज।

व्यापारिक तेजी-मन्दी और ज्योतिष

[लेखकः—श्री प्रो० बी० सी० महता एम. आर. ए. एस. अध्यक्ष जैन ज्योतिष कार्यालय, ब्यावर]

मैंने अपने गत लेखमें व्यापारी पाठकमहोदयों से यह अनुरोध किया था कि—"वे अब रुईकी तेजी से निकल कर मन्दीकी लाइनमें आजावें, क्योंकि ता० १४ मईसे एक मन्दीका योग बनता है।" मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि मेरे इस आग्रहके अनुसार अवश्य 'श्रीस्वाध्याय' के पाठक व्यापारीवर्गने रुईकी मन्दीका व्यापार किया होगा और अच्छा लाभ उठाया होगा, क्योंकि उक्त तारीखसे आज तक बराबर मन्दीकी ही लाइन बन रही है। मैंने हर तेजीके उछालेमें बेचनेका अनुरोध किया था।

अब यह लेख व्यापारी मित्रोंके हाथमें ता० १५ जुलाई तक पहुंचेगा। ता० २५ जुलाई से शनि सिंह राशिमें प्रवेश होता है। यह ग्रह आगामी तीस महीने के लिये इस राशिमें रहेगा। यह राशि अत्यन्त महत्व पूर्ण और व्यापारके लिये बहुत ही उपयोगी है। इस राशिके अधिकारमें भारतके प्रमुख नगर बम्बई की जन्म-कुण्डलीका दशमा स्थान याने व्यापार व्यवसाय इत्यादिकी व्यवस्थाका स्थान है और इस राशि पर शनिका आना व्यापार व्यवसायमें कुछ अड़चनोंका सूचक है। जब-जब शनि इस स्थान याने सिंह राशिमें आया है, बम्बईके स्टाक एक्सचेञ्ज व अन्य खास २ व्यापारिक वस्तुओं पर इसका अशुभ प्रभाव देखा गया है तथा इन वस्तुओंमें मन्दीका ट्रेण्ड आरम्भ हो जाता है। यद्यपि यह योग तीस महीनेका पर्याप्त लम्बा है, फिर भी एक बात अवश्य बनाता है कि अबसे व्यापारियोंके जो पुराने भयङ्कर तेजीके स्वप्ने थे वे सब समाप्त कर देता है तथा धीरे धीरे प्रत्येक व्यापारमें मन्दी उत्पन्न करता है। यह एक बड़ा योग जो गत ६।७ वर्षोंसे तेजोको ओर था मन्दीकी ओर आता है और अब ज्यों-ज्यों अन्य मन्दीके योगोंका इसको बल मिलेगा यह बाजारके ऊँचे लेबलको गिरायेगा। इसका विशेष प्रभाव इसके एक तिहाई समय अर्थात् दश महीने निकलने पर आरम्भ हो जावेगा। इसका प्रभाव चांदी, सोना, कपड़ा, खनिज-पदार्थ खाने पीने की सम्पूर्ण वस्तुओं, ऐश आरामकी वस्तुओं, जमीन जायदाद इत्यादि पर अवश्य पड़ेगा और जन-साधारणका जीवन निर्वाह निश्चय सस्ता होगा। शनि विशेष रूपसे श्रमिक-वर्ग का द्योतक-ग्रह है और इसका सिंह राशिमें आना इस वर्गमें पहले अशान्ति और फिर शान्ति उत्पन्न करता है तथा इनके जीवनस्तर को सुखी करता है।

रुई, चान्दी, सोना, शेयर (लोह आदिके) गुड़

ता० १७ अगस्त मङ्गलवार—चांदी तेज गुड़ मन्देसे तेज।

ता० १८ अगस्त बुधवार—चांदी गुड़में अच्छी मन्दी।

ता० १९ अगस्त बृहस्पतिवार—चांदी मन्दी।

सारांश ता० २६ जुलाईको चांदी खरीद कर ता० २८ जुलाई तक तेजीमें बेचकर नफालें। ता० २८ जुलाईको बेचा हुआ माल ता० ३१ या ता० २ अगस्त तक मन्दीमें खरीद कर नफा लें, फिर ता० २-३ अगस्तमें कुछ तेजी रह कर बादमें ता० १४ तक भारी घटबढ़ रहेगी, इसके बाद ता० १६ अगस्तको तेजीमें चांदी बेचें और आगामी (आनेवाली) डबल मन्दीके लिए हर उछाले बेचान ही करते रहें। ता० १६-१७ अगस्तमें भरपेट माल बेचान करें।

नोट—कोई बात समझमें न आने 'पर श्री स्वाध्याय' के ग्राहक तथा पाठक केवल ।=) के टिकट पं० यादवचन्द्र जैन कोसीकलां (मथुरा) के पते पर भेज कर मुफ्तमें पूछ सकते हैं। श्री स्वाध्यायके आगामी 'नववर्षाङ्क' में तीन मासकी गुड़ और चांदीकी दैनिक रिपोर्ट और अनुभूत चांस भेंट करूंगा। परीक्षार्थ अभी श्रावण मासका ही दिया है।

अन्न, स्टेशनरी, कल, मशीनें, जूट, इत्यादि वस्तुओंको सस्ता करता है। यह एक लम्बी मन्दीकी लम्बी लाइन है सो ध्यान रहे।

जुलाई

ता० १६ को मङ्गल अपनी क्रान्ति बदलता है, यह रुई, चान्दी, सोनाके लिये मन्दी बतलाता है। इस योगकी मन्दी ता० २७ तक चलेगी, फिर ता० २८ से ३१ जुलाई तक तेजीके योग बने हैं।

अगस्त

अगस्त मासका पहला सप्ताह तेजीका है। ता० ११ तक घटाबढ़ी के साथ चान्दी सोना, व अन्य वस्तुओंमें तेजी चलेगी। फिर १६ ता० तक मन्दी। ता० १७ को मङ्गल अपने दक्षिण अक्षवृत्तमें प्रवेश करता है और उसी दिन बुध मङ्गल हर्शल और बृहस्पति ग्रहका तृतीयैकादश योग बना है इस लिये यह योग विशेष रूपसे रुई, चान्दी, सोना, शेयर, गुड़ अलसी, सीङ्गदाणा, जूट, सरसों, आदिमें तेजी लाता है। ता० १८ को फिर एक योग इसके काटका बनता है, यह फिर वापिस मन्दीका थोड़ा रिएक्शन लाकर पुनः बाजार ता० २२ से २७ तक तेजीकी ओर रखता है। फिर २-३ दिन बाजारमें मन्दी दिखाई देगी। ता० ३० को फिर एक योग तेजीका बनता है, जिसका प्रभाव ता० ३ तक रहेगा।

सितम्बर

ता० १७ सितम्बर तक इकतरफी घटाबढ़ी चलेगी और रुईमें १७ ता० तक मन्दी। इस मन्दीमें खरीदने वालेको अच्छा लाभ रुईमें हो सकता है। जरीला व अन्य रुईमें यह योग अच्छा प्रभाव करता हैं। तेजी का योग २० से आरम्भ होता है। चांदी, सोना, जूट इत्यादि भी इस योगसे तेज होते देखे गये हैं। ता० २३ को शनि हर्शलका त्रिरेकादश योग बना है, यह सब प्रकारके शेयरमें विशेष रूपसे लोहा व कोयला जूट इत्यादि में अच्छी तेजीका द्योतक है। चान्दी सोनेमें भी तेजी सूचक यह योग है। प्रत्येक घटे भावमें खरीद कर बेचना चाहिये।

अक्टूबर

अक्टूबरमें शनि बृहस्पति दोनों ग्रह रुईकी तेजी बतलाते हैं। घटाबढ़ी तो होगी ही, परन्तु ट्रेण्ड हमें तेजीका दिखाई देता है। चांदी, सोना, शेयर, गुड सरसोंमें भी यह महीना अत्यन्त घटा बढ़ीका सूचक है, बहुत सावधानीसे व्यपार करें नहीं तो उल्टे सीधे फंस जानेका भय है। क्योंकि दो दिन तेजी तो फिर तीन दिन मन्दी, फिर ४ दिन तेजी इस तरहके योग बने हैं सो ध्यान रहे। विशेष विवरणके लिये हमारी तेजी-मन्दीकी स्पेशियल रिपोर्ट मय दैनिक घटा-बढी इत्यादि मगंवाकर लाभ उठा सकते हैं। 'श्री-स्वाध्याय' के ग्राहकोंसे विशेष रियायती फीस केवल १०) प्रतिमास प्रति वस्तु है।

इष्टशोधन विषयक शंकाएं

[लेखकः—श्री ला० बदरीप्रसादजी व्यानियां]

सेवक ज्योतिषी नहीं अपितु ज्योतिषका एक विद्यार्थी होनेके नाते निम्न लिखित जन्म-कुण्डलीका इष्टकाल शोधन किया है। सं० १९८८ शकः १८५३ कार्तिक शुक्ला ८ भौमेष्टम् १०।३४ धनिष्ठा नक्षत्रे ३९।५ ग्रहलाघवा दहर्गणः १७५५ चक्र ३७ भरतपुर नगरे पलभा ६।१० चरखण्डा ६२।४९।२० चरपल १०१।३१ स्पष्टोऽर्कः ७।०।४३।४२ गतिः ६०। ३८ स्पष्टशशिः १०।०।४७। ५४ गतिः ७५२।२४ स्पष्ट लग्नम् ८।२८।४०।५५

इष्ट शोधनके विषयमें दो विद्वानोंके यह कथन प्रचलित हैं।

नित्यानन्देन—

व्यंगाब्जलिप्ताः स्वाध्याष्टांद४शाढया हि नगांग नवेन्दुभिः १९६७। युक्ताः खाभ्रगजै ८०० र्भक्ता गर्भस्थोऽहर्गणः स्थिरः ॥१॥

विचन्द्रांग कला स्वाधिगजांशाढयान्४ विहीनता। त्रिनगाक्षाष्टभूपञ्चात्खखाष्टाप्नाऽहर्गणः ॥२॥

हुरमुचेण—

विलग्नशशिलिप्तिकास्वथ तदुक्तितायास्तनोर्विधाय किलताः सुधी रजनिनाथ भुक्त्या हरेत् ॥ अवाप्तमिह शेषकं जिनहतं विभक्तं तया। भवेद्धुरुमुचो दिनं स्फुटतरं च होरादिकम् ॥१॥

तदन्वित वियुग ध्रुवे जननिगर्भ सद्म स्थितिः।
प्रसिद्धमनु दृश्यते ध्रुववियुग् युवृन्दं पुनः॥
निषेकयुकुलं ततः स्फुटविधुः प्रसाध्यो धिया।
स एव किल जायते प्रसवलग्न शुद्धौ स्फुटः ॥२॥

विचार करने पर इन दोनों विद्वानोंका एक ही मत ज्ञात होता है। क्योंकि चन्द्रमाकी मध्यम गति कलादि ७९०। ३५ है, अतः ३६० अंशोमें मध्यम गतिका भाग देनेसे लब्धि २७ भगण ७ होरा (घंटा) ४३ होराकला (मिनिट) आते हैं, अतः यह चान्द्रमास हुआ। इस प्रकार १० मास तथा ३०० अंशोंका ध्रुवा २७३भगण ५ होरा ११ होराकला और ९ मास तथा २७० अंशोंके भगणादि २४५। २१। २७ होते हैं, यह मध्यम गतिके भगणादि हैं, यतः चन्द्रमाका एक नक्षत्र भोग ८०० कला होता है, इसलिये मध्यम भगणादिके घट्यादि बनाकर ८००से गुणा और ६०का भाग देनेपर दशमास के कलादि २१८५७३ और नवमासके कलादि १९६७१६ होते हैं, परंतु इन दोनों विद्वानोंके मूल वाक्योंसे यह स्पष्ट नहीं होता कि गर्भस्थ अहर्गणका साधन जन्म कुण्डलीसे होगा, अथवा गर्भकुण्डलीसे।

प्राचीन विद्वानोंके उदाहरण तो जन्मकुण्डलीसे मिलते हैं, किन्तु मनुष्य जातकके टीकाकार समरसिंहने निषेकाधिकारके श्लोक ५, ६, ७, की टीकामें गर्भकुण्डलीसे गर्भस्थतिथिका साधन करना कहा है। यदि जन्म कुण्डलीसे गर्भस्थअहर्गण साधन किया जाता है तो २४८ दिन १९ घड़ी ५६ पल आता है और यदि गर्भकुण्डलीसे साधन किया जाता है तो २७० दिन ४६ घड़ी ४४ पल आता है— जिसमें दिवसादि २२।२६।४६ का अंतर है।

क्योंकि विद्वानोंके अधिकतर उदाहरण जन्मकुण्डली से मिले हैं, इसलिये २४८ दिन १९ घटी ५६ पल गर्भस्थ अहर्गण मानकर नित्यानन्दके—

व्यंगाब्जांशाः पृथक् त्रिघ्ना खाब्ध्याप्तोना इनोद्धृताः।
खतत्त्वा ५० द्व्याहि तिथयो गर्भाजन्मावधे स्थिराः।

श्लोकके अनुसार २५२ तिथि आती हैं, जिसके ८ मास १२ तिथि होती हैं। इसको जन्मकालीन मास तिथिसे हीन करने पर सं० १९८७ फाल्गुन कृष्ण ११ गर्भाधानकी तिथि निकलती है। इस तिथि पर ग्रहलाघव का अहर्गण १४७६ होता है, परन्तु गर्भस्थ अहर्गण २४८। १९।५६ जन्मेष्ट सहिताहर्गण १७५५।१०।३४ से कम करने पर १५०६।५०।३८ गर्भेष्ट अहर्गण निकलता है। अर्थात् अहर्गणमें ३० दिनका अन्तर है। जिसका कारण गर्भाधान कालसे जन्म कालके बीच अधिक मासका पड़ना जान पड़ता है, परन्तु प्राचीन उदाहरणोंमें ऐसा उदाहरण नहीं मिला कि ऐसे समय पर गर्भाधान तिथि किस प्रकार ग्रहण होती है। गर्भ कालीन अहर्गणको मुख्य मानकर अधिकका एक मास जन्मकालीन मासादिकमें जोड़कर गर्भस्थ तिथिको कम किया गया तो गर्भाधान तिथि चैत्र कृष्ण ११ सं० १९८७ होती है, और इस दिवसका १५०७ अहर्गण होता है, जो कि सैक निरेकके विधानसे तिथि मिलती है। तत्पश्चात् गर्भाधान इष्ट काल निकाला गया जिसके दो प्रकारके उदाहरण मिलते हैं—

(१) गर्भ दिवसीय प्रातःकालीन सूर्य और गर्भकालीन लग्न (जन्म कालीन चन्द्रमा) से इष्ट निकालना।

(२) जन्मेष्ट सहिताऽहर्गणसे गर्भस्थ अहर्गणादि हीन करने पर जो गर्भेष्ट निकले उस पर सूर्य स्पष्ट करके उस सूर्य और गर्भ कालीन लग्नसे इष्ट निकालना। परन्तु इन दोनों प्रकारोंसे गर्भाधान इष्ट काल साधन करनेसे अन्तर आता है, यदि प्रथम प्रकारसे साधन किया जाय तो गर्भाधानेष्ट काल घट्यादि ५६।२५।२३।५१ आता है। और यदि द्वितीय प्रकारसे साधन किया जाय तो घट्यादि ५६।१९।२०।६ आता है। अर्थात् पलादि ६।३।४५ का अन्तर, है जिसका जन्मेष्ट कालमें भी अन्तर होगा।

अतः मुझे इस इष्ट शोधनमें निम्नांकित ४ शङ्काएं उत्पन्न हुई हैं—

(१) गर्भस्थ अहर्गणका साधन जन्मकुण्डलीसे होगा ? अथवा गर्भ कुण्डलीसे ? (शेष पृष्ठ ६९ पर)

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र—

सिंहके शनिका संसार पर प्रभाव !

अशान्ति, श्रेणि-संघर्ष, अनाचार और उत्पातोंकी सम्भावना !!

श्री राजाजी, काश्मीर कमीशन और निजामकी कुण्डलियों पर शास्त्रीय विचार

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य, सम्पादक—'श्रीस्वाध्याय' और 'श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग']

गताङ्कमें हम वर्तमान सं० २००५ का भविष्य-फल विस्तृत रूपमें प्रकाशित कर चुके हैं। दैवज्ञकी दृष्टिमें आई हुई संसारचक्रकी सभी शुभाशुभ घटनाएँ कालचक्रानुसार घटित होती हुई भारतीय ज्योतिर्विज्ञानके महत्वको स्थापित करती जा रही हैं। पाठकोंको स्मरण होगा कि—गतवर्ष १५ अगस्तके दैनिक पत्रोंमें और 'श्रीस्वाध्याय' के नववर्षाङ्क में "सावधान ! अभी कठिन समय आगे भी आने वाला है।" शीर्षकसे हम स्वतन्त्रताके ये आरम्भिक तीन वर्ष विशेष संकटके सविस्तर रूपमें बतला चुके हैं। आजसे आठ मास पूर्व भारतके बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ हैदराबादकी समस्या को बिल्कुल नगण्यसी मान कर केवल तीन घण्टे या तीन दिनमें निजाम पर काबू पानेका भारतीय जनताको विश्वास दिला रहे थे, उसी समय हमने इस धारणाके सर्वथा विपरीत अपने ज्योतिर्विज्ञानके आधार पर पौष (दिसम्बर)के आरम्भ में ही 'श्रीस्वाध्याय'के हेमन्ताङ्कमें इसी स्तम्भमें "हैदराबाद और काश्मीरकी समस्या अधिक गम्भीर बनेगी" उपशीर्षकके नीचे यह स्पष्ट चेतावनी दी थी कि—

"ता० ११ फरवरीको गुरु धनुः राशिमें प्रवेश करके कर्क राशिसे अपना दृष्टिसम्बन्ध हटा लेगा, अतः ११ फरवरीसे आगे काश्मीर और हैदराबादकी समस्या उत्तरोत्तर अधिक गम्भीर बनती जायेगी।.......हैदराबादके शासक दम्भ दर्प एवं धूर्त्ततापूर्ण द्विविधकार्यवाहियों और षड्यन्त्र करनेमें तत्पर रहेंगे। यथापूर्व स्थितिका करार (समझौता) केवल निजशक्ति सञ्चयका व्याज मात्र है। वहां दिये गये तात्कालिक सुधार जन आन्दोलनको निर्बल करनेके लिए ही हैं। अतः निजामकी प्रत्येक अवाञ्छनीय गतिविधि पर सतर्कतासे ध्यान रखना भारतके लिए हितकर होगा।"

तदनुसार ११ फरवरीके बाद सुरक्षा परिषद्में काश्मीर की समस्या जिस विषम झमेलेमें पड़ी वह सर्वविदित ही है। और तीन घण्टेमें निजाम पर काबू पानेवाले उन्हीं नेताओंके लिए हैदराबादकी विषम-समस्या अब शिरोव्यथाका कारण बन गई है। यदि अब भी हमारी सरकारने २५ जुलाई से पहले पहले कर्कके शनिमें ही हैदराबादके विरुद्ध कड़ीसे कड़ी कार्यवाही प्रारम्भ नहीं की तो आगे यह समस्या भारतके लिए विभीषिका बन जायेगी। कासिम रिजवीकी बारबार की गई दर्पोक्तियोंको केवल दर्पोक्ति मानकर हमें उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

काश्मीर कमीशनके यहाँ आजाने पर भी अभी हमें काश्मीरकी समस्या सुखदरूपमें सुलझती प्रतीत नहीं होती। इसी जुलाई मासमें शनि सिंह राशिमें प्रवेश कर रहा है। अतः इन आगामी ढाई वर्षोंमें यह सिंहका शनि संसारमें भयंकर उथल पुथल मचायेगा।

सिंहके शनिका संसार पर प्रभाव

संवत् २००५ वि० श्रावण कृष्ण ४ रविवार तदनुसार ता० २५ जुलाई १९४८ ई० को शनि कर्क राशिको छोड़ कर सिंहमें प्रवेश करेगा। सिंह शासक राज्यवाद प्रधान राशि है। जब शनि कर्क सिंहमें आकर पाप ग्रहों से सम्बन्ध बनाता है तब संसारमें भयंकर अत्याचार, रक्तपात, युद्ध, दुर्भिक्ष, रोगादि द्वारा प्रजाको संत्रस्त करके

राजाओं पर भी आपत्तियां लाता है। तीस वर्ष पहले सन १६१७ से १६१६ तक शनि सिंहमें रहा था उस समय यूरोपके अनेक राजाओंको इसने आपत्तिग्रस्त बनाया और इस बार कर्क के अन्तमें (सायनमानसे सिंहमें) ही भारतीय राज्यतन्त्रको प्रजातन्त्रमें परिवर्तित कर दिया।

विश्व युद्ध अवश्यम्भावी—

सिंहका शनि भारतको शक्तिशाली बनायेगा। और निजामके व्यक्तितन्त्रको समाप्त करने वाला सिद्ध होगा। हमें तो ऐसा प्रतीत होता है कि सिंहके शनिमें न केवल हैदराबाद और काश्मीरकी समस्या ही विषम बनेगी, अपितु इन आगामी २॥ वर्षोंमें सारे विश्वका वातावरण ही अशान्त संघर्षमय बन कर तीसरा विश्व युद्ध आरम्भ हो जाये तो कोई आश्चर्य नहीं। क्योंकि पहले भी जब-जब शनि सिंह राशिमें रहा तब-युद्ध उत्पापादि अशुभ घटनाएं अवश्य घटी हैं। इतिहास इसका साक्षी है। पहले सं० १७४० वि० सन् १६८३ ई० में सिंहके शनिमें औरङ्गजेबकी दक्षिण पर चढ़ाई हुई। फिर सं० १७६७।६८ वि० सन् १७४०।४१ ई० में सिंहके शनि में ही राघोजी भोंसलेका बंगाल पर आक्रमण हुआ। तदनन्तर सं० १८२७।२६ वि० सन् १७७०।७२ ई० में सिंहके शनिमें माधवराव सिन्धियाका हैदरअलीसे युद्ध हुआ। तात्पर्य यह है कि सिंहके शनिमें युद्ध दुर्भिक्ष रोगादिसे प्रजा का नाश, चतुष्पद नाश, आतङ्क,विग्रह और समुद्र तटवर्ती देशों एवं जलमार्गोंमें उत्पात अधिक होते हैं। यथा—

भूम्यां नाशश्चतुष्पाद्गजहय वृषभैर्युद्ध दुर्भिक्ष रोगैः
पीड्यन्ते सर्वदेशा उदधिपुरपथे दुर्ग देशेषुभङ्गः।
म्लेच्छान्तो धान्यभावो धनसुखमवनीशेन्द्र चन्द्रप्रतापः।
सर्वे ते यान्ति काले भ्रमति युगमिदं सिंहगे सूर्यपुत्रे॥

सिंहके शनिमें आरम्भ और अन्तके ६ मास विशेष अनिष्ट फल कारक होते हैं। सिंहका शनि श्रेणि-संघर्ष कारक है। मिलके कर्मचारी श्रमिकवर्ग और पूंजीपतियों, स्वामिसेवकोंमें असन्तोषकी वृद्धि हो कर संघर्षकी स्थिति उत्पन्न करेगा। जल वायु एवं अग्निसम्बन्धी उत्पात भी अधिक होंगे।

व्यापार पर प्रभाव—

सिंहके शनिमें प्रत्येक वस्तुओंके भावमें एक बार भारी मंदीका झटका आता है। विशेषकर रुईमें पर्याप्त मंदी आती है। तेजीका धन्धा करने वाले व्यापारी सावधान हो जावें। अन्यथा वे भीषण स्थितिमें फँस जायेंगे। तीसवर्ष पहले सन् १६१८ ई० के सितम्बर मासमें शनि सिंह राशिमें प्रविष्ट हुआ था उस समय ढ़ाई वर्षोंमें बम्बईके रुई वायदा बाजारमें जो भयंकर मन्दी आई—उसका विवरण व्यापारी वर्गके लाभार्थ हम यहां दे रहे हैं—

ता०	मास	सन्	रुईका भाव
८	अगस्त	१६१८	६६०)रु०
१०	अक्टूबर	१६१८	८१५)
३१	”	१६१८	७१८)
३०	नवम्बर	१६१८	५६०
२८	फरवरी	१६१६	४६८)
१	दिसम्बर	१६२०	३४०)
२२	दिसम्बर	१६२०	३०७)
२१	मार्च	१६२१	२५५)

अब इस सिंहके शनिमें प्रत्येक वस्तुके व्यापारमें भयानक क्रांति होगी। विशेष विवरण आगामी अंकमें देंगे।

पाकिस्तानसे संघर्ष

भारत और पाकिस्तानकी कटुता तीव्ररूप धारण करनेकी स्पष्ट सूचना हम गत पौष मासमें 'श्रीस्वाध्याय' के हेमन्ताङ्कमें दे चुके थे और गत 'वसन्ताङ्क' में भी हमने स्पष्ट लिखा था कि—"भारतसे पाकिस्तामकी स्थायीमैत्री कभी भी सम्भव नहीं।.........मंगलके कारण वह आन्तरिक गुप्त संगठन करके किसी समय भी भारतकी शान्तिमें बाधक बन सकता है।" इत्यादि। तदनुसार हमें इस सिंहके शनिमें ही पाकिस्तानसे प्रत्यक्ष संघर्ष दिखाई दे रहा है। आगामी अगस्त मासमें मंगल नेपच्यूनकी युति कन्या राशि में शनि राहुकी कर्तरीमें हो रही है, अतः श्रावणसे आगेका समय और मार्गशीर्ष पौषमें क्रमशः शनिके वक्री होने तथा मङ्गलके मकरमें जाने पर वह समय भारत और पाकिस्तानके लिए भयानक सङ्कटका द्योतक है। वैसे तो

सिंहका शनि समस्त संसारके लिए ही न्यूनाधिक रूपमें अशान्ति कारक रहेगा ही, तथापि ६८ से ७२ रेखांशके बीचमें स्थित भूभाग पर युद्धोत्पातादि द्वारा जन-धनका अधिक विनाश करेगा। उत्तर भारतमें ३२ अक्षांश व्यास नदी तक अनिष्टकी सम्भावना है। इसका विशेष विवेचन आगामी अङ्कमें करेंगे।

सं० २०१३ तक शान्ति नहीं

विगत ४०० वर्षोंके इतिहास पर दृष्टिपात करने से यह निश्चित रूपमें प्रकट होता है कि शताब्दी परिवर्तनके संक्रमणकालमें आरम्भके दो दशक संसार और विशेषकर भारतके लिए कष्टप्रद ही रहे हैं। सत्रहवीं शताब्दीके द्वितीय दशकमें सं० १६१२ वि० सन १५५५ ई० में हुमायूं ने सिकन्दर शूरको सरहिन्दके पास पराजित किया। सं० १६१३ वि० सन् १५५६ ई०में पानीपतके दूसरे युद्धमें पंजाबका आक्रमण हुआ। अठारहवीं शताब्दीके दूसरे दशक में सं० १७१४ सन १६५७ ई० में दिल्लीके राजसिंहासन के लिए शाहजहांके पुत्रोंमें युद्ध हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के दूसरे दशकमें सं० १८१३ वि० सन १७५६ ई० में अहमदशाह अब्दालीने भारत पर आक्रमण करके दिल्ली लूटी। बीसवीं शताब्दीके दूसरे दशकमें सं० १९१४ वि० सन् १८५७ ई० में भारतमें सैनिकविद्रोह या ५७ का गदर हुआ। अब वर्तमान २१ वीं शताब्दीके आरम्भिक प्रथम दशकमें ही भारतमें जो वीभत्सकाण्ड हुए उन सबका हम कटु अनुभव कर चुके हैं। उक्त ऐतिहासिक घटनाओं और ग्रहस्थितिको देखते हुए अभी सं० २०१३ सन् १९५६ तक हमें संसारमें शान्ति दिखाई नहीं देती।

श्री राजाजीका पदारूढ लग्न



ज्येष्ठ शु० १५ सोमवार ता० २१ जून १९४८ ई० को प्रातः १०। बजे सिंहलग्नमें श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य महोदयने प्रथमबार भारतीय गवर्नर जनरलका पदग्रहण किया। उस समयकी कुण्डली ऊपर दी गई है।

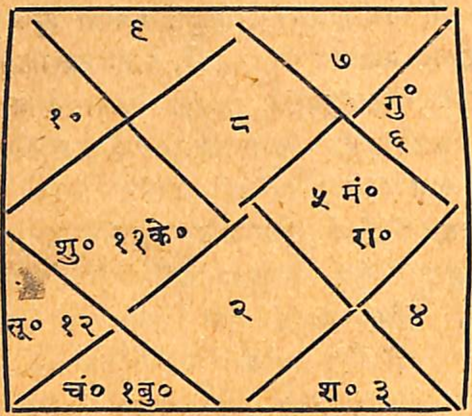
लग्नेश सूर्य लाभमें बुध शुक्रसे युत और गुरु चन्द्रसे दृष्ट है। सुखेश भाग्येश भौम लग्नमें और पञ्चममें गुरु चान्द्रीयोग बहुत उत्तम बना है। उक्त ग्रहस्थितिके आधारपर हम निश्चय पूर्वक कह सकते हैं कि राजाजी अपनी दूर-दर्शिता एवं बुद्धिमत्तापूर्ण आर्यनीतिसे यशस्वी होंगे और इनका कार्यकाल सफलता पूर्वक भारतके लिए हितावह सिद्ध होगा। अष्टमेश गुरु पञ्चम भावमें वक्री है, व्ययेश चन्द्रमा भी साथ है और अस्तङ्गत राज्येश शुक्र एवं सूर्य बुध हर्शलसे प्रतियोग कर रहा है, अतः आरम्भमें राजाजी को अनेक कठिनाइयोंका सामना करना पड़ेगा। व्ययेश चन्द्रमा अष्टमेश गुरुके साथ पञ्चममें षष्ठेश सप्तमेश शनिसे षडष्टक योग कर रहा है, यह राजाजीको देशकी आन्तरिक एवं बाह्य स्थितिको सुलझानेके मार्गमें बाधक बनेगा। परन्तु गुरु स्वक्षेत्री है अतः अन्तमें ये सभी विघ्न-बाधाओं और शत्रुओं पर विजय पा जायेंगे। शनिके सिंहमें आने पर आगामी श्रावण माससे भारतीय सङ्घ शक्तिशाली बनेगा। कठोर हाथोंसे बलपूर्वक बाह्य एवं आन्तरिक शत्रुओंका सामना करेगा। हैदराबाद और काश्मीरमें निर्णायक स्थिति बनेगी। शनि षष्ठेश सप्तमेश होकर लग्नमें जायगा और भाद्रपदमें सूर्य भी इसके साथ होगा—उस समय भारतीय सरकारको आन्तरिक एवं बाह्य शत्रुओंसे बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है। भयानक विस्फोटक स्थिति उत्पन्न हो जाने की सम्भावना है। विरोधीतत्व पनप कर श्रेणिसङ्घर्ष या यत्र तत्र अराजकताकी स्थिति उत्पन्न करने की कुचेष्टा करेंगे। आगे मार्गशीर्ष पौषमें संसारमें अराजकता बहुत बढ़ेगी। राज्येश पराक्रमेश शुक्रका अस्त और वक्री होना गवर्नर-जनरल और भारतीय सङ्घके लिए चिन्तासे खाली नहीं है। विशेष विचार आगामी अङ्कमें देंगे।

निजामका जन्म लग्न

निजाम हैदराबादकी दो जन्मकुण्डलियां पत्रोंमें

प्रकाशित हो चुकी हैं, एकमें कर्क लग्न और दूसरीमें तुला लग्न है। पहली कर्कलग्न वालीमें जन्म तिथि और सम्वत् का भी बहुत अन्तर है। हमें अभी दिल्लीमें अपने सहृदय सहयोगी ज्योतिविज्ञानके अनन्योपासक श्री० प्रो० बी० सी० गङ्गोली महोदय द्वारा निजामकी जो कुण्डली प्राप्त हुई वह हम यहां दे रहे हैं। श्रीगङ्गोली महोदयको यह कुण्डली निजामके एक पारिवारिक राजज्योतिषी द्वारा प्राप्त हुई, अतः निजामका वृश्चिक-लग्न ही हमें ठीक प्रामाणिक प्रतीत होता है।

जन्म ता० ६ अप्रैल १८८६ ई०



निजामके दशम (राज्य) स्थानमें सिंहका बलवान् मङ्गल, राहु युक्त है। अब २५ जुलाईको मङ्गलके साथ निजामके राज्य भवनमें शनि प्रवेश कर रहा है। यह शनि वर्तमान ६३ वें वर्षका अधिपति होकर अष्टम जा रहा है, अतः यह सिंहका शनि इसी वर्षमें निजामके राज्य-तन्त्रको समाप्त कर देगा। परन्तु मङ्गलराहु भी वहीं हैं अतः निजाम अपने नग्नरूपमें प्रकट होकर भयङ्कर रक्तपात जन-धन-विनाश, सामूहिक विद्रोह, दमन, एवं उग्र-सङ्घर्षके द्वारा आर्य जनताको सन्त्रस्त करके अपना पतन करायेगा। निजामके गुरु महादशामें शुक्रान्तर २४ मई १९४९ तक रहेगा। शुक्र सप्तमेश व्ययेश होकर गुरुसे षष्ठ है, यह शुक्र निजामके बुद्धि विवेकको नष्ट कर, भयङ्कर षड्यन्त्रोंमें फंसा पतनकी ओर अग्रसर करता हुआ स्थान-मान भ्रष्ट करवाता है।

मङ्गल-नेपच्यून युति

श्रावण कृष्ण १४ बुधवार ता० ४ अगस्त १९४८ को मङ्गल, इन्द्र या नेपच्यून ग्रहके साथ युति कर रहा है। यह अशुभ युति संसारमें उत्पात युद्ध रोग दुर्भिक्षादिसे जन धनका विनाश करती है। कन्याराशिमें यह युति होनेसे महाराष्ट्र, बरार, निजाम, काठियावाड़, कोल्हापुर और काश्मीर पर इस युतिका अनिष्ट प्रभाव अधिक होगा। राजकीय वातावरण अत्यन्त अशान्त रहेगा। सामन्त, मांडलीक, जागीरदार एवं अधिकारियोंमें असन्तोष बढ़ कर प्रजाका उत्पीड़न होगा। पूंजीपति और श्रमजीवियोंमें श्रेणि-सङ्घर्ष छिड़ जाना सम्भव है। कारखानों या सरकारी विभागों में गतिरोध उत्पन्न होगा। रेल्वे या खानमें कोई भयानक दुर्घटना होगी। मङ्गल-नेपच्यूनका मादक पदार्थोंसे विशेष सम्बन्ध है, अतः युतिके अनन्तर मादक पदार्थोंपर प्रतिबन्ध लगेगा और इनकी उत्पत्ति भी न्यून होगी। यह युति शनि केतुकी कर्तरीमें होने से विशेष अनिष्ट सूचक प्रतीत होती है। तेल या कोयलेकी खानमें भयङ्कर विस्फोट अग्निप्रलय या अतिवृष्टिसे जन-धनका विनाश और रुई कपासके किसी बड़े कारखाने या गोदाममें भयङ्कर अग्निकाण्डका योग है। कन्याराशिमें यह युति होनेसे भारतको दक्षिण प्रदेश और विशेष कर निजामकी ओर से बहुत सतर्क रहना आवश्यक है। भारतके दक्षिण पार्श्वमें अवस्थित फ्रान्सके पाण्डीचेरी एवं चन्द्रनगर गोआदि पुर्तगीज प्रान्तोंसे भी अशान्तिकी सम्भावना है।

काश्मीर–कमीशन

मित्रराष्ट्रीय सुरक्षा-परिषद्की ओरसे प्रेषित काश्मीर-कमीशन आषाढ शु० ४ (रिक्तातिथि) शनिवार ता० १० जुलाई १९४८को कराचीसे वायुयान द्वारा प्रथमबार मध्याह्न १२–३० पर कन्या लग्नमें भारतकी राजधानी नई-दिल्लीमें पहुँचा।

जटिल समस्याओंको सुलझाने और वास्तविक न्याय दिलानेवाला स्थान कुण्डलीमें पञ्चम माना गया है और आर्य नीतिसे निष्पक्ष न्याय करने वाला ग्रह गुरु (बृहस्पति) माना जाता है। इस कुण्डलीमें पञ्चमेश शनि शत्रु राशि में निर्बल है और २५ जुलाईको ही यह १२वें स्थान सिंहमें

जा रहा है। न्यायाधिपति गुरुदेव वक्री हैं, लाभेश चन्द्रमा १२वें और अष्टमेश मंगल लग्नमें, एवं लग्नेश दशमेश बुधका पञ्चमेश षष्ठेश शनिसे द्विर्द्वादश योग भी कुण्डलीमें बन रहा है। इन सब ग्रहयोगोंको देखते हुए ज्योतिर्विज्ञान के आधार पर हमें यह आशंका है कि कमीशनके शक्तिभर पूर्ण प्रयत्न करने पर भी अन्तमें वास्तविक न्याय सम्मत कोई निर्णय (हल) न निकलनेसे यह कमीशन असफल रहे और भारत तथा काश्मीरका हित साधन भी न हो सके। हां, लग्नेश बुध दशममें स्वद्रेत्रका है, अतः हो सकता है कि आरम्भमें इस कमीशनके सदुद्योगसे काश्मीरकी समस्या सुलझती प्रतीत हो। परन्तु यह बुध व्ययेश सूर्यके साथ है और स्वयं नपुंसक बालस्वभाव अस्थिरमानस ग्रह है, एतदर्थ परिणाम स्वरूप अन्तमें यह समस्या सुलझनेकी अपेक्षा अधिक उलझ जाती दीख पड़ती है। शनिके सिंहमें जाने पर और आगे मंगल नेपच्यूनकी युति होने पर ता० ४ अगस्तसे आगे इस कमीशनके सामने कई कठिन समस्याएँ उत्पन्न होंगी। इसी अवधिमें अष्टमेश मंगलके कारण किसी सदस्यका स्वास्थ्य बिगड़ने, दुर्घटनाका सामना होने, अथवा पारस्परिक मनोमालिन्य बढनेकी भी सम्भावना है।

इन आगामी २॥ वर्षोंमें (सिंहके शनिमें) हमें काश्मीरकी समस्या पूर्णरूपेण सुलझती प्रतीत नहीं होती। आश्विनसे आगे शनि मंगलका केन्द्रयोग होने पर काश्मीरमें शत्रु की ओरसे फिर गड़बड़की सम्भावना है। हैदराबादकी भी यही स्थिति है। काश्मीर और हैदराबाद एक ही समस्याके दो पहलू हैं, एकका पतन दूसरेसे सम्बन्धित है। अब सिंहका शनि इनको अपने असली नग्नरूपमें प्रकट करेगा। संघर्षका शक्तिसे मुकाबला करना पड़ेगा। भारत सरकारके लिए यह कठिन अग्नि-परीक्षाका समय होगा। आन्तरिक एवं बाह्य शत्रुओंका प्रतिरोध करते हुए अन्तमें भारतकी विजय निश्चित है।

चांदी सोनाकी तेजी-मन्दी पर अनुभूत विचार

[लेखक — श्री पं० श्रीधरजी शर्मा शास्त्री ज्यौतिषाचार्य]

श्रावण मास

चांदी—श्रावण बदी १से ३ तक अन्त में मन्दी का बाजार बन्द हुआ करेगा। बेचकर खरीदो। ५मीसे ८ मीं तक तेजीमें खरीद कर बेच देना। हर रुके भावमें तथा मन्दीके रियक्शनमें माल खरीद कर बढ़े भावोंमें बेच कर लाभके साथ सौदा पलट लेना चाहिये। एकादशी तक भावोंमें समानतासी चलती रहेगी। द्वादशीसे अमावस्या तक जनरल रूपमें मन्दी चलती रहेगी। परन्तु इस अवधिके बीचमें १३ मंगलवारको मोटी घटा बढ़ीसे तेजी आनेका योग बनाता है।

श्रावण शुदीमें १ शुक्रवारको १० बजे पहले माल लेकर तीजको ३-३॥ बजे तक आनेवाली तेजीमें बेच डालो। बेचनेमें लाभ होगा। ४—५को दो दिन समान भाव पड़ा रहेगा। ६को १ बजेसे पुनः तेजीका योग होगा। खरीदकर तेजीके आनेकी प्रतीक्षा करो। ७-८ बुध बृहस्पतिको दिन भर तेजी चलते हुए अन्तमें बन्द घण्टी पर कुछ न कुछ मुलायमी और मन्दीका रुख अवश्य होगा। नवमीसे एकादशी तक खरीदका मौका अवश्य हाथ आयेगा। द्वादशीको २॥ बजे पीछे तेजी चलेगी। १३को दिन भर तेजी रहकर १४-से पूर्णमासी तक मन्दीकी जीतका अवसर हाथ आयेगा।

सोनामें श्रावण बदीका पक्ष कुछ मन्दी कारक होगा, तो सुदीका पक्ष मन्दीसे द्विगुणित तेजी कारक होगा। यदि यह मन्दी ३)टके की आयेगी तो तेजी ६) टकोंकी होगी। फिर भी यह तिथियां संक्षिप्त रूपमें इस प्रकार तेजी मन्दी कारक होगी। तेजी कारक बदी पक्ष की तिथियां ६, ८, १३, १४ सुदीमें ३, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, हैं।

भाद्रपद मास

चांदी—वदी १ और २ को तेजी आकर परिणाम मंदीका रहेगा। ४ सोमसे ५ बुध तक खुले भावोंसे नतीजा प्रति दिन तेजीका हुआ करेगा। ६-७ को समानभावसे ८ से ११ तक ४) ५) टकोंका हेरफेर होकर अचानक मंदी आनेकी सम्भावना है। १२।१३ को खरीदकर बढ़ी हुई तेजीमें बेचनेसे हाथकी हाथ लाभ मिलेगा। १४ अमावस्याको दुतरफा घटाबढ़ीका बाजार होकर मंदीका अन्त में परिणाम होगा।

सुदीमें १ से ४ तक प्रतिदिन पहले खरीदकर बढ़ी तेजीमें बेच डालो। ति० १ से ४ तक तेजी रहेगी।

पंचमीको दिनभर तेजी रहकर ३ बजे बादमें मंदी होगी। ७ से ९ तक पुनः लगातार तेजी रहेगी। १०-११ को समान भावसे मंदी रहकर एकादशी मंगलवारसे १३ तक पुनः तेजी रहेगी। १४-१५ को तेजीसे परिणाम मंदी का होगा।

सोना—जनरलरूपमें सोनेका भाव तेजीका ही होगा। तेज तिथि-बदीमें ५,७,८,१२,१३,३०। सुदीमें १,४,६,८, ९,११,१३ है। मन्दी तिथि बदीमें २,४,५ कुछ, ११,१४, सुदी ३,५,७,११,१४ हैं।

(पृष्ठ ६४ का शेष)

(२) गर्भाधान काल और जन्मकालके अन्तर्गत अधिकमास होनेसे गर्भाधान तिथिका साधन किस प्रकार होगा?

(३) गर्भाधानेष्टकाल किस प्रकार निकालना चाहिये?

(४) नित्यानन्दके वाक्यानुसार गर्भेष्ट अहर्गणको मुख्य मान कर तिथि मानी जावें? अथवा गर्भाधान तिथिको मुख्य मानकर गर्भेष्ट अहर्गणको माना जावें?

आशा है ज्योतिर्विद् महानुभाव एक विद्यार्थीकी उक्त शंकाओंका निवारण करनेकी कृपा करेंगे।

"दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र"

'श्रीस्वाध्याय' के आरम्भसे ही यह स्तम्भ प्रत्येक अङ्कमें दिया जा रहा है। 'दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र' शीर्षक निबन्धमें समस्त संसार और विशेष कर भारतकी सभी सामयिक समस्याओंपर ज्योतिर्विज्ञानके आधार पर अन्वेषणात्मक एवं नवीन मौलिक विचारधारा रहती है। 'संसारचक्र' स्तम्भको पाठकोंने अत्यधिक पसन्द किया है। इसकी यथार्थता या सचाईके सम्बन्धमें हमें यहां कुछ नहीं कहना है। अनेक विद्वान् पाठकोंने इस स्तम्भको 'श्रीस्वाध्याय' का प्राण या आत्मा कहा है। वर्तमान वर्षके 'हेमन्ताङ्क' और गत 'वसन्ताङ्क' के शेष न रहने पर अनेक ग्राहकोंने केवल 'संसारचक्र' स्तम्भका ही दूसरा संस्करण छाप कर भेजनेका विशेष आग्रह किया था।

ग्राहकोंके विशेष आग्रहसे वर्तमान सातवें वर्षके चारों अङ्कोंमें प्रकाशित 'दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र' निबन्ध ठीक उसी रूपमें ४८ पृष्ठोंमें प्रकाशित हुआ है। आरम्भमें 'हमारे भविष्यकी एक झलक' शीर्षकसे ८ पृष्ठ ज्योंके त्यों दिए गये हैं, इसमें स्वतन्त्रभारत का भविष्य और श्री नेहरूजीकी जन्मकुण्डलीका विचार विस्तृत रूपमें दिया है। आगे के ८ पृष्ठोंमें श्री महात्मा गान्धीजी और जिन्नाकी जन्मकुण्डली पर विस्तृत विचार और काश्मीर तथा अन्य समस्याओं पर विस्तृत विचार हैं। तदनन्तर गत 'वसन्ताङ्क' में प्रकाशित २००५ का सविस्तार भविष्य और ग्रहण विवेचन २४ पृष्ठोंमें दिया है। तथा अन्तमें इस ग्रीष्माङ्कके ८ पृष्ठोंमें 'सिंहके शनिका संसार पर प्रभाव' एवं श्री राजाजी, काश्मीर-कमीशन निजामकी जन्मकुण्डलियों पर विस्तृत विचार प्रकट किये गये हैं। इस प्रकार इस ४८ पृष्ठके अप्राप्य संग्रहका मूल्य २) रु० मात्र है। डाक रजिस्ट्री खर्च ।-) अलग। बहुत थोड़ी प्रतियां शेष हैं। २।-) का मनीआर्डर भेजकर शीघ्र मंगवा लें। वी० पी० नहीं भेजी जायगी। 'श्रीस्वाध्याय' के १०० उन नये ग्राहकोंको जो सर्वप्रथम आठवें वर्षका मूल्य ४) रु० कार्यालयमें भेज देंगे, यह २) रु० का ग्रन्थ बिना मूल्य उपहारमें भेंट किया जायगा।

व्यवस्थापक—श्रीस्वाध्याय सदन, सोलन (शिमला)

भारतीय संस्कृतिके अग्रदूत राष्ट्रधर्मके प्रमुख प्रचारक—

'श्रीस्वाध्याय' के लिए—

राष्ट्रके उद्गार

त्यागमूर्त्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज—'श्रीस्वाध्याय' अपने विषय का अनुपम पत्र है।··· यह प्रत्येक सार्वजनिक संस्थाओं, पुस्तकालयों और वाचनालयोंमें स्थान पाने योग्य है·······।

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी महोदय—'श्रीस्वाध्याय' बहुत अच्छा निकल रहा है। लेख विचार प्रवर्तक हैं।······ मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ········।

श्रीयुत बा० पुरुषोत्तमदासजी टण्डन—'श्रीस्वाध्याय' को देख मुझे बहुत सुख मिला।·······इस पत्र और इसके संचालक मण्डलसे राष्ट्रीय कार्यमें पूर्ण सहायता मिलेगी·······।

श्रीयुत बा० सम्पूर्णानन्दजी शिक्षामन्त्री युक्तप्रांत—'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। भारतीय प्राचीन विद्याओं पर प्रकाश डालने वाले ऐसे प्रगतिशील सांस्कृतिक पत्र-पत्रिकाओंकी इस समय आवश्यकता है।

कविसम्राट् स्व० श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध'—'श्रीस्वाध्याय' के पंचम वर्ष का प्रथमांक बड़ा सुन्दर निकला है। इसे जिस दृष्टि से देखें वह मुग्धकर हैं। आकार, प्रकार, लेख किम्वा कविता आदि सभी प्रशंसनीय हैं।

श्रीयुत बा० मैथिलीशरणजी गुप्त—"········'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। मैं आपके परिश्रमकी प्रशंसा और पत्रकी उन्नतिकी कामना करता हूँ।·········"

श्रीयुत प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति—'श्रीस्वाध्याय' अपने ढङ्गका अनूठा पत्र है।·········यह एक उच्चकोटिका सांस्कृतिक पत्र हैं। मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ।

श्रीयुत बाबूराव विष्णु पराड़कर जी—"····वस्तुतः यह त्रैमासिक अपने ढङ्गका निराला है। आर्य संस्कृतिके प्रायः प्रत्येक अङ्ग पर इसमें प्रकाश डाला जाता है।········"

श्री डा० रामकुमार वर्माजी—"·······'श्रीस्वाध्याय' हमारे साहित्यका ऐसा पत्र है जिस पर हमें अभिमान है। इसमें जो सांस्कृतिक दृष्टिकोण रहता है वह हमें अन्य भारतीय पत्रोंमें नहीं मिलता। 'श्रीस्वाध्याय'-के प्रत्येक पृष्ठमें मुझे अध्ययन और अनुशीलनसे परिपूर्ण साहित्यिक सामग्री मिली।········"

श्रीयुत पं० रूपनारायणजी पाण्डेय (सम्पादक 'माधुरी')—"········'श्रीस्वाध्याय' की सभी सामग्री ज्ञानवर्धक और उपादेय है।······प्रत्येक देशभक्त, राष्ट्रभाषा प्रेमी, जिज्ञासु, धर्म प्रेमीको अवश्य इसे अपनाना चाहिए। हर एक पुस्तकालयमें यह पत्र स्थान पाने योग्य है।·······"

श्रीयुत पं० देवीदत्तजी शुक्ल (सम्पादक 'सरस्वती')—'श्रीस्वाध्याय' बहुत ही सुन्दर निकल रहा है।·······आपने 'स्वाध्याय' निकालकर हिंदीके एक विशेष अभावकी पूर्त्ति की है, इसमें संदेह नहीं। इस महत्त्वपूर्ण कार्यके लिए हिन्दी वाले आपके अवश्य कृतज्ञ होंगे।

श्रीयुत पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर—"·····'श्रीस्वाध्याय' के विषयमें विशेष क्या कहा जाय, यह एक अत्युत्तम पत्र है। मैं हृदयसे इसकी सफलता चाहता हूँ। इसकी अन्यान्य महत्ताओं पर 'वैदिकधर्म'में प्रकाश डालूंगा।

इनके अतिरिक्त भारत के अनेकों महामान्य विद्वानों और प्रमुख पत्र-पत्रिकाओंने 'श्रीस्वाध्याय' की मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। स्थानाभावके कारण वे सब यहां उद्धृत नहीं हो सकीं।